यद्यपि आपका शस्त्र फूलों का धनुर्बाण है, तथापि आपने अपने इसी हथियार से त्रिलोकी को अपने आधीन कर रखा है। औरों की क्या चलाई, स्वयं जगत् के रचनेवाले ब्रह्मा, पालनेवाले विष्णु और संहार करने वाले शिवजी तक को आपने बाकी नहीं छोड़ा। इन तीनों देवताओं को भी आपने, घर का काम-धन्धा करने के लिये, कुरङ्गनयनी सुन्दरी कामिनियों का गुलाम बना दिया है। यद्यपि भगवान् कामदेव भगवान् विष्णु के पुत्र हैं, पर आप अपने पिता से भी बढ़ गये। "गुरु गुड़ रहे और चेला चीनी हो गये" वाली कहावत आपने चरितार्थ की। आपने स्वयं अपने पिता पर ही हाथ साफ किये। उन्हें अनेक कुएँ झँकवाये। अपने पिता से लक्ष्मी और रुक्मिणी प्रभृति की गुलामी करवा कर ही आपको सन्तोष नहीं हुआ। आपने उन्हें परनारी ब्रजबालाओं तक की मुहब्बत में पागलसा कर दिया। यहाँ तक कि, उनसे मालिन और मनिहारिन तक के स्वाँग भरवाये। एक बार बेचारों को जलन्धर-पत्नी वृन्दा के यहाँ भेष बदलकर जाने तक पर मजबूर किया और शेष में उनका फजीता करवाया।

पूर्ण योगी, श्मशान-वासी शिवजी तक को आपने नहीं छोड़ा। बेचारों को शैलसुता का क्रीत-दास बना दिया, यहाँ तक तो खैर थी। आपने एक बार उनकी सारी सुध-बुध हर ली और मोहिनी के पीछे इस बुरी तरह से दौड़ाया कि, हमसे तो लिखा तक नहीं जाता। एक और मौके पर शिवजी समाधि में

लोक थे। वहीं वन में मृत्युलोक-वासिनी चन्द्र मृगलोचनी परम सुन्दरी युवतियाँ, अपनी रूपच्छटा से वन को प्रकाशमान करती हुई, क्रीडा कर रही थीं। उनके अपूर्व रूप-लावण्य को देख कर, शिवजी का शान्त मन अशान्त हो गया—उनके भोगने के लिये मचल पड़ा। शिवजी, सारा शम-दम भूल, काम के वश हो, उनके पीछे दौड़े। आप अपनी शक्ति से उन्हें आकाश में ले गये और उनसे भोग-विलास करने लगे। पीछे गिरिजा महारानी को जब आपकी करतूत मालूम हुई, तो उन्होंने क्रोध में भर स्त्रियों को तो नीचे पटका और भोले भण्डारी को डाँट-डपट कर कैलाश में लाईं और ऊँच-नीच समझाकर फिर समाधि में लगाया।

कई बार आपने चार मुँहवाले, सृष्टि के रचयिता, ब्रह्मा को भी अपने जाल में फँसा लिया। सुनते हैं, विधाताने एक बार तो अपनी निज पुत्री तक के पीछे दौड़कर अपनी घोर बदनामी कराई। इसके सिवा, एक बार ब्रह्माजी शान्तनु नामक ऋषिके पास किसी काम से गये। उन ऋषिकी स्त्री अमोघा अनुपम सुन्दरी थी, पर थी पतिव्रता। उस समय ऋषि घर पर न थे। अमोघा ने आप के बैठने के लिये एक आसन बिछा दिया और पूछा—"भगवन् आप किस लिये पधारे हैं?" विधाता ने कहा—"कुछ ज़रूरी काम है, पर उन्हीं से कहूँगा।" ये बातें करते-करते ही आपका मन अमोघा पर मचल गया। आपको कामदेव ने ऐसा व्याकुल किया कि, आपका   वहीं आसन पर निकल गया।

कामेन विजितो ब्रह्मा, कामेन विजितो हरिः ।
कामेन विजितः शम्भुः, शक्रः कामेन निर्जितः ॥

अर्थात् कामदेव ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश और इन्द्र—इन चारों को जीत लिया। जब भगवान् कामदेव ने ऐसे ऐसे को ही अपने वश में करके, मनमाने नाच नचाये तब और किस की कही जाय? सारांश यह, भगवान् कामदेव सब से अधिक बलवान् है, इसी से कवि महोदय, सब देवताओं को छोड़ भगवान् कामदेव को ही नमस्कार करते हैं।

पाश्चात्य विद्वानों में से एक गोथे नामक महापुरुष कहते हैं :—"Cupid is even a rogue, and whoever trusts him is deceived" कामदेव सदा छल करता है, जो उसका विश्वास करता है, वह धोखा खाता है। कोई कुछ कहे, हम तो यही कहेंगे कि, खूबसूरती में बड़ी क्षमता है। खूबसूरती पुरुष को अपनी ओर उसी तरह खींचती है, जिस तरह चुम्बक पत्थर लोहे को खींचता है। पोप महोदय ने कहा भी है—"Beauty draws us with a single hair" सुन्दरता एक बाल के द्वारा भी हमको अपनी ओर खींच सकती है। चैनिंग महोदय भी कहते हैं—"Beauty is an all-pervading presence" सौन्दर्य की सर्वत्र सत्ता है। मतलब यह है, कि पुरुष सौन्दर्य्य का दास है। जिस में भी, वकील लावेल महाशय के "Earth's noblest thing, a women perfected" साध्वी स्त्री संसार का सर्व्वोत्तम पदार्थ है, अतः ऐसे सर्व्वोत्तम पदार्थ

के साथ रमण नहीं करते, उनके दिन बुरी तरहसे कटते हैं। उन्हें एक-एक क्षण एक-एक वर्ष मालूम होता और जीवन भारवत् प्रतीत होता है। महाकवि नजीर कहते हैं —

कल शबे वस्ल में क्या जल्द कटी थी घड़ियाँ।
आज क्या मर गये घड़ियाल बजाने वाले॥

कल भोग-विलास में रात कैसी जल्दी कट गई? आज तो रात बीतती ही नहीं! क्या आज घण्टा बजाने वाले मर गये?

और भी किसीने कहा है.—

अय्याम मुसीबत के तो काटे नहीं कटते।
दिन ऐश की घडियों में गुज़र जाते हैं कैसे॥

दुःख के दिन तो काटे नहीं कटते, पर ऐश के दिन सहज में कट जाते है।

मतलब यह है कि, कोमलाङ्गियोंके साथ समय हवा की तरह बीतता है, पर जिन के माशूकाएँ नहीं हैं, उन के दिन पहाड हो जाते हैं। हाँ, उन के दिन भी परमानन्द मे हवा की तेजी से बीतते हैं, जो ब्रह्मानन्द में लीन रहते हैं, लेकिन जो न तो ईश्वर का ध्यान करते हैं और न सुन्दरियों का सुख लूटते हैं, उन के दिन काटे से भी नहीं कटते।

वैराग्यपक्ष।

इस नापायेदार चन्दरोज़ा दुनियाँमें जन्म लेकर, विद्वानों को

हैं। उनके दासत्व में सच्चा प्रेम और पवित्रता नहीं, केवल सौन्दर्य्य का प्रभाव है। सौन्दर्य्य अपने दर्शकों को मदिरा की तरह मतवाला कर देता है और वे उसी नशे के वश हो, अपने होश-हवास खो, अपनी माशूकाओं की गुलामी करने लगते हैं। कामदेव स्त्रियों का चाकर है, वह जिसे अपना शिकार चुनती हैं, जिसे अपने अधीन करने की आज्ञा देती हैं, वह उसी को, अपने पुष्पायुध से काबू में करके, अपनी स्वामिनियों के हवाले कर देता है, कामदेव ही नहीं, स्वयं परमात्मा स्त्रियों की इच्छानुसार चलता है। अँगरेजी में एक कहावत है:—"What woman wills, God wills" जो स्त्री चाहती है, वही परमात्मा चाहता है। स्त्री और परमात्मा की एकही इच्छा है।

दोहा।

विधि हरि हरहु करत हैं, मृगनैनी की सेव।
वचन अगोचर चरित गति, नमो कुसुमसर देव ॥१॥

सार—कामदेवने त्रिलोकीको स्त्रियोंका गुलाम बना रक्खा है।

1 *I bow to that Lord Kamdeva (Cupid) who has flowers for his weapon, whose wonderful actions are beyond the power of speech and by whom Shambhu, the self-born (Brahma) and Hari have been rendered constant servants of the deer-eyed women to discharge their house-hold duties.*

स्मितेन भावेन च लज्जया भिया
पराङ्मुखैरर्द्धकटाक्षवीक्षणैः ॥

समागम के समय स्त्री-पुरुषों का एकचित्त हो जाना ही काम का फल है। यदि समागम में दोनो का चित्त एक न हो, तो वह समागम—समागम नहीं, वह तो मृतकों का सा समागम है॥२८॥

खुलासा—सुरत के समय सुरत में और समाधि के समय समाधि में यदि मन लीन न हो जाय, चित्त उन्हीं में ग़र्क न हो जाय, तो उस सुरत और समाधि से कोई लाभ नहीं। स्त्री-पुरुष के समागम के समय, दोनोंका एक दिल हो जाना परमावश्यक है। दोनों का दिल एक हुए विना कुछ आनन्द नहीं। यदि एक का दिल कहीं और दूसरे का कहीं हो और सङ्गम किया जाय, तो उस सङ्गम को स्त्री-पुरुषों का सङ्गम नहीं, वल्कि दो लाशों का सङ्गम कह सकते हैं।

समागमके समय यदि दोनों में से किसी का भी चित्त समागम के लिये उत्कण्ठित न हो, तो समागम न करना चाहिये। वैसे समागम से आनन्द नहीं आता और वृथा वल क्षीण होता है। अगर एक का दिल हो और दूसरे का न हो, तो जिसका दिल हो उसे दूसरे का काम जगाना उचित है। जव दोनों ही कामोन्मत्त होंगे, तव अवश्य दोनों ही का दिल एक हो जायगा। अगर चित्त उद्विग्न हो, मन मलिन हो और उद्विग्नता या मलिनता दूर न हो सकती हो, तो समागम न करना ही अच्छा है।

समागम के समय दोनोंके दिलों का एक होना वहुत जरूरी है, इसी गरज से रतिशास्त्र के ज्ञाताओं ने स्त्री-पुरुषों के परस्पर काम जगाने की अनेकों तरकीवें लिखी हैं, क्योंकि विना परस्पर काम जगाये कोई लाभ नहीं। स्त्रीके किस अङ्गमें किस दिन काम रहता

मैं तुमसे न बोलूँगी।" पुरुष बोलना चाहता है तो कहती है—"वहीं जाओ, मुझसे क्या काम है? वह बड़ी सुन्दरी है, मैं उसके मुकाबलेमें किस कामकी हूँ?" इत्यादि। पुरुष यदि चूमना चाहता है, तो एक अजीब आन-बान और अदा के साथ उसके मुँह के पास से अपना मुँह हटा लेती है। अगर वह स्तनों पर हाथ डालता है, तो एक अजीब अदा से उसके हाथ को झटक देती है, जिससे बुरा भी न मालूम हो और पुरुष उल्टा मर मिटे। अगर पुरुष किसी दूसरी के यहाँ चला जाता है या उससे और कोई अपराध हो जाता है, तो झट आँखों में आँसू भर लाती है। उन आँसुओं में कामियों को जो मज़ा आता है,* उसे लिखकर बता नहीं सकते। बातें करती हैं, तो निहायत मीठी-मीठी और ऐसी रस-घुली कि, पुरुष उनकी बातों पर ही कुर्बान हो जाता है। कहाँ तक लिखें, स्त्रियों में जवानी के समय अनन्त हाव-भाव आप ही पैदा हो जाते हैं। ये उन्हें कोई सिखाने नहीं जाता। जेवर स्त्रियों के रूप को हज़ार गुणा बढ़ा देते हैं, तो नखरे उसे लाख गुना बढ़ा देते हैं।

एक बार इतिहास-प्रसिद्ध लोक-विमोहिनी नूरजहाँ, बचपन में, अपनी माँ के साथ, बादशाही महलों में गई। उस समय नूरजहाँ को मेहरुन्निसा कहते थे। जहाँगीर भी लड़का ही था। उसे उन दिनों सलीम कहते थे। सलीमको कबूतर उड़ाने

---

* Beauty's tears are lovelier than her smiles.—Campbell सुन्दरी के आँसू उसकी मुसक्यान की अपेक्षा प्यारे लगते हैं।

असाराः सन्त्वेते विरतिविरसायासविषया
जुगुप्सन्तां यद्वा ननु सकलदोषास्पदमिति ॥
तथाप्यन्तस्तत्वे प्रणिहितधियामप्यनिबल—
स्तदीयोऽनाख्येयः स्फुरतिहृदयेकोऽपिमहिमा ॥५१॥

"सांसारिक विषय-भोग असार, विरतिमें विघ्न करनेवाले और सब दोषों की खान हैं"—इत्यादि निन्दा लोग भले ही करें, फिर भी इनकी महिमा अपार है और इनके शक्तिशाली होने में कोई सन्देह नहीं, क्योंकि ब्रह्मविचार में लीन शास्त्रवेत्ताओं के हृदय में भी ये प्रकाशित होते हैं ॥५१॥

खुलासा—यद्यपि संसारी विषय-भोग असार और थोथे हैं, हमारे वैराग्य या संसार-त्याग में बाधक हैं, सभी दोषों के मूल कारण हैं, जीव का सब तरह से अनहित करते हैं, मनुष्य को निर्लज्ज और मति-हीन करते एवं ज्ञान को धो बहाते हैं। इतने दोष होने पर भी, कहना पड़ता है कि, ये बड़े ही शक्तिशाली और अपार महिमावान हैं। इनकी शक्ति और सामर्थ्य का वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। क्योंकि जिन्होंने संसार त्याग दिया है, जो विचारवान मूलकारण की खोज में लगे रहते हैं, उन तत्ववेत्ता ब्रह्मज्ञानियों के हृदय में भी ये कामाग्नि सन्दीपन कर देते हैं।

छप्पय।

सदा को उसका गुलाम होना क़बूल किया। देखा पाठक! स्त्री के एक नखरे ने क्या काम किया?

हम स्त्रियों के हाव-भाव और नाजो-अदाओं पर मर मिटने वालों के चन्द नमूने नीचे देते हैं। एक साहब फरमाते हैं:—

मैं तो उसी शिफ्क पै फिदा हूँ, कि कानको।
शब क्या हटा लिया, मेरे लाकर दहन के पास ॥जौक॥

मुझे उनका यह हाव कितना अच्छा मालूम हुआ कि, उन्होंने अपने कान को मेरे मुँह के पास लाकर हटा लिया। इस अदा पर मैं फिदा हो गया।

और भी:—

ऐ जौक, मैं तो बैठ गया, दिलको थाम कर।
इस नाज़ से खड़े थे वह, रक्खे कमर पै हाथ ॥जौक॥

जिस अन्दाज़ से वह कमर पर हाथ रक्खे खड़े थे—ज़ौक, मैं तो उन्हें देखकर दिल थामकर बैठ गया, नहीं तो दिल चला ही था।

महाकवि नजीर ने नाज़नियों की चुलबुलाहट का सीधी-सादी भाषा में कैसा चटकीला चित्र खींचा है। ज़रा उसकी भी बानगी देखिये:—

ये राह चलने की चुलबुलाहट,
कि दिल कहीं है, नजर कहीं है।

से ओढनी उतर गई है तो उतर गई है, परवा नहीं। कुरती का बन्द खुला पडा है, तो खुला ही पडा है।*

दोहा।

रसमें त्योंही रोष में, दरशत सहज अनूप।
बोलनि चलनि चितौनि में, वनिता बन्धन रूप ॥२॥

सार—स्त्री हर हालत में मर्द को प्यारी लगती है। उसका बोलना चालना और देखना प्रभृति प्रत्येक काम पुरुषको बन्धन में बाँधता है।

2 *Gentle smile, emotions, bashfulness, timidity, the turning of face, the side-long casting of glances, speech, jealousy, quarrel and gesture (—these) are the various qualities by which the women become the chains for men.*

भ्रूचातुर्यात्कुञ्चिताक्षाः कटाक्षाः
स्निग्धा वाचो लज्जिताश्चैव हासाः ॥

---

* यों तो चञ्चलता और चुलबुलाहट उठती जवानी की सभी स्त्रियों में होती है, पर ऐसी चुलबुलाहट, जिसका मज़ेदार चित्र मियाँ नज़ीर ने खींचा है, कुल-वधुओं में नहीं देखी जाती और वह भी राह में। हाँ, ऐसी चुलबुलाहट कुल-वधुओं में भी देखी जाती है, पर शादी हो जाने के दो-चार बरस बाद और अपने घर में—अपने पति के सामने, जब कि उनकी लज्जा शर्म और संकोच-भय प्रभृति दूर हो जाते हैं। हमारी समझ में, यह चित्र किसी कसबिन वाराङ्गना का है।

लीलामन्दं च स्थितं प्रस्थितं च
स्त्रीणामेतद्भूषणं चायुधं च ॥३॥

नज़रों से भौंह फेरना, आधी आँख से कटाक्ष करना, मधु जैसी भोरी मीठी बातें करना, लज्जा के साथ मुस्कराना, लीला से मन्द मन्द चलना और फिर ठहर जाना प्रभृति भाव स्त्रियों के आभूषण और शस्त्र हैं ॥३॥

स्त्रियाँ कभी अपनी कमान सी भौंओं को टेढ़ी करती हैं, कभी आँखें चलाती हैं, कभी लज्जा का भाव दिखाती हुई मन्द-मन्द मुसकराती हैं, कभी शरीर तोड़ती हैं, कभी अँगड़ाई लेती हैं, कभी उँगलियाँ चटकाती हैं, कभी उझक-उझककर देखती हैं और कभी मुँह फेरकर दूसरी ओर देखने लगती हैं, जिससे पुरुष समझे कि यह मेरी ओर नहीं देखती, कभी घूँघट मार लेती हैं और कभी उसे खोल देती हैं—ये सब स्त्रियाँ क्यों करती हैं? केवल अपना सौन्दर्य बढ़ाने और पुरुषों को अपने ऊपर फिदा करके, उनसे मनमाने नाच नचवाने के लिये। पुरुषों को अपने अधीन करने के लिये, अबलाओं के पास तलवार, बन्दूक या बाण नहीं होते। उनको ईश्वर ने ये ही अमोघ अस्त्र दिये हैं। बन्दूक, तलवार और मैशीनगन जो काम नहीं कर सकतीं, वह काम ये अस्त्र करते हैं। किसी से भी पराजित न होनेवाले और बड़े-बड़े शूरवीर योद्धाओं को बात-की-बात में धराशायी करने वाले बहादुर स्त्रियोंके शस्त्रों की मार से, अपने होश-हवास खोकर, इनके दास बन जाते हैं।

छप्पय ।

करत चातुरी भौंह, नयनहू नचत चितैवो ।
प्रगटत चित्तको चाव, चावसों मृदु मुसकैवो ।
दुरत मुरत सकुचात, गात अरसात जम्हावत ।
उझकत इत उत देख, चलत ठिठकत छविछावत ।
ए आभूषण तियनके, अगमाहिं शोभा धरन ।
अरु येही शस्त्रसमान हैं, पुरुष-मन-मृग बस करन ॥३॥

सार—स्त्रियों के हाव-भाव पुरुषों के मारने के लिये अस्त्र और उनका सौन्दर्य्य बढ़ाने के लिए आभूषण हैं ।

3 *The skilfulness in turning the brows, the casting of oblique glances, sweet talk, smiling with shyness, walking slowly by gestures and stopping at intervals (—these) are the ornaments as well as the weapons for women*

क्वचित्सुभ्रूभंगैः क्वचिदपि च लज्जापरिणतैः
क्वचिद्भीतित्रस्तैः क्वचिदपि च लीलाविलसितैः ॥
नवोढानामेभिर्वदनकमलैर्नेत्रचलितैः
स्फुरन्नीलाब्जानां प्रकरपरिपूर्णा इव दिशः ॥४॥

कामी पुरुषों को, कभी सुन्दर भौंहों से कटाक्ष करने वाली, कभी शर्म से सिर नीचा कर लेने वाली, कभी भय से भीत होने वाली, कभी लीलामय विलास करने वाली, नवीन ब्याही हुई

कामिनियों के मुखकमलों की खूबसूरती बढ़ाने वाले नीलकमलों के समान चञ्चल नेत्रों से दसों दिशाएँ पूर्ण दीखती हैं ॥४॥

जवान होती हुई—नवबधुओं में कमान सी भौंहों से कटाक्ष करना, कभी लाज के मारे सिर नीचा कर लेना, कभी भय से भीत होना, कभी अन्य प्रकार के नखरे करना—ये सब स्वभाव से ही होते हैं। प्रथम तो इस उम्र में सुन्दरता आप ही बढ़ जाती है, फिर उनके नखरे और नीलकमल से चञ्चल नेत्र उनकी खूबसूरती को औरभी बढ़ा देते हैं। कामी पुरुषों को, जिनके मन में इनके चञ्चल नेत्र अपना घर कर लेते हैं—हर ओर, इनके चञ्चल नेत्र ही नेत्र दिखाई देते हैं, अर्थात् उनका मन इनके [illegible] सुन्दर नेत्रों में ही जा बसता है। जिसमें जिसका दिल जा बसता है, उसे वही-वही दीखता है। चूँकि कामियों की आँखों में कमसिन अल्पवयस्का नवविवाहिता कामिनियाँ समा जाती हैं, अतः उन्हें हर ओर, जहाँ तक उनकी दृष्टि जाती है, वही-वह दिखाई देती हैं।

किसी ऐसी ही उठती जवानी की कम-उम्र परी की खूब-सूरती का चित्र महाकवि नज़ीर ने क्या ही कारीगरी से खींचा है :—

पलकों की झपक, पुतली की फिरत, सुरमे की लगावट वैसी ही।
ऐयार नज़र, मक्कार अदा, त्योरी की चढ़ावट वैसी ही ॥१॥
वह अँखियाँ मस्त नशीली सीं, कुछ काली सीं, कुछ पीली सीं।
चितवन की दगा, नज़रों की कपट, सीनों की लड़ावट वैसी ही॥२॥

वह रात अँधेरी बालों सी, वह माँग चमकती बिजली सी।
जुल्फों की खुलन, पट्टी की जमत चोटी की गुँधावट वैसी ही ॥३॥
वह छोटी छोटी सख्त कुचें, वह कच्चे कच्चे सेव गज़ब।
अँगिया की भटक, गोटों की चमक, बन्दों की कसावट वैसी ही॥४॥
वह चञ्चल चाल जवानी की, ऊँची ऐड़ी नीचे पड़े।
कफ़शों की खटक, दामनकी झटक, ठोकरकी लगावट वैसी ही॥५॥
कुछ हाथ हिलें, कुछ पाँव हिलें, फड़कें बाज़ू थिरकें सब तन।
गाली वो बला, ताली वो सितम, उँगली की नचावट वैसी ही ॥६॥
चञ्चल अचपल, मटके चटके, सर खोले ढाँके हँस-हँस के।
कह कह को हँसावट और गज़ब, ठट्ठों की उड़ावट वैसी ही ॥७॥
हर वक्त फबन हर आन सजे, दम दम में बदलें लाख सजें।
बाहों की झपक, घूँघट की अदा, जोबन की दिखावट वैसी ही ॥८॥

पाठक! मनचले पाठक! आप ही विचारिये, इस आन-बान और खूबसूरती वाली को कौन भूल सकता है? जो इन स्त्री-रत्नों की कद्र जानने वाले हैं, उनकी नजरों से इनके नीलकमल की आभा रखने वाले नीलम से नेत्र कभी उतर ही नहीं सकते। उन्हें तो हर ओर नीलम या नील-कमल ही नील-कमल फूले दीखते हैं और वे मन-ही-मन उनकी अनुपम छटा को याद कर-करके प्रसन्न होते हैं।

छप्पय।

कबहुँ भौंहको भंग, कबहुँ लज्जायुत दरसत।
कबहुँक ससकत सकि, कबहुँ लीलारस बरषत।

सार—जिस तरह ब्रह्मज्ञानियों को हर ओर ब्रह्म ही ब्रह्म दीखता है; उसी तरह कामियों को हर ओर नवनवधुओं के नीलकमल के समान चंचल नेत्र ही नेत्र दीखते हैं। जिसकी आँखों में जो समा जाता है, उसे वही वह दीखता है।

What with the turning of her beautiful brows, what with her bashfulness, what with her fearfulness and with her playful gestures, the face of a young woman, ... with all the above qualifications, appear ... (with black bees hovering on it.)

—३—

वक्त्रं चन्द्रविकासि पङ्कजपरीहासक्षमे लोचने
वर्णः स्वर्णमपाकरिष्णुरलिनीजिष्णु कचानाञ्चयः ॥
वक्षोजाविभकुम्भसंभ्रमहरौ गुर्वी नितम्बस्थली
वाचो हारि च मार्दवं युवतिषु स्वाभाविकं मंडनम् ॥५॥

चन्द्रमा के समान प्रकाशमान मुख, कमल की मसखरी करने वाले दोनों नेत्र, सुवर्ण की दमक को फीकी करने वाली शरीर

की कान्ति, भौंरों के पुञ्ज को जीतने वाले केश, गजराज के गण्ड-स्थल की शोभा का अपमान करने वाली दोनों छातियां, विशाल नितम्ब—चूतड़, मनोहर वाणी और कोमलता—नज़ाकत—ये सब स्त्रियों के स्वाभाविक भूषण हैं।

खुलासा—चन्द्रमा के समान मुख, कमल को लजाने वाले नेत्र, कनक की आभा को मलीन करने वाली देह की कान्ति, भौंरों की पंक्तियों को पराजित करने वाली अलकें, गजराज के गण्डस्थलों को लजाने वाले स्तनद्वय, फूलों की कोमलता को मात करने वाली नज़ाकत, मृगमद को नीचा दिखाने वाली मुख की सुवास—ये सब स्त्रियों के स्वाभाविक आभूषण या कुदरती जेवर हैं। तात्पर्य्य यह है, कि स्त्रियाँ स्वभाव से ही बड़ी सुन्दरी होती हैं। इनकी असाधारण सुन्दरता और अनूप रूप पर किसका मन लहालोट नहीं हो जाता? इनकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर ही लोग इनके क्रीत-दास हो जाते और दुःख-सुख की परवा न कर, दिन-रात इनके लिये परिश्रम करते हैं।

छप्पय।

करत चन्द्र इव विशद वदन, अद्भुत छवि छाजत।
कमलन विहँसित नैन, रैन दिन प्रफुलित राजत।
करत कनक द्युतिहीन, अंग आभा अति उमगत।
अलकन जीते भौंर, कुचन करि-कुम्भ किये हत।
मृदुता शरीर मारे सुमन, मुख सुवासमृगमद कदन।
ऐसो अनूप तिय रूप लखि, छाँहधूप नहिं गिनत मन॥५॥

न्पार—नाना प्रकार के हाव-भाव स्त्रियों के नाना प्रकार के अस्त्र हैं। इनसे ही वे पुरुषों को अपने वश में करती और अपना गुलाम बनाती हैं।

I ... of a woman are her face which ... the moon, her eyes which laugh at the ... of her body which dims even the lustre of ... which surpasses in beauty the swarm of bees, ... beauty of the forehead of ar... the ... lips and the sweet voice which attracts ...

—६—

स्मितं किञ्चिद्वक्त्रे सरलतरलो दृष्टिविभव:
परिष्यन्दो वाचामभिनवविलासोक्तिसरसः॥
गतीनामारम्भ: किसलयितलीलापरिकर:
स्पृशंत्यास्तारुण्यं किमिह नहि रम्य मृगदृश: ॥६।

उठती जवानी की मृगनयनी सुन्दरियों के कौन काम मनोमुग्धकर नहीं होते? उनका मन्द-मन्द मुस्कराना, स्वाभाविक चञ्चल कटाक्ष, नवीन भोग-विलास की उक्ति से रसीली बातें करना और नखरे के साथ मन्द-मन्द चलना—ये सभी हाव-भाव कामियों के मनको शीघ्र ही वश में कर लेते हैं।

जवानी में कदम रखने वाली, उठती जवानी की मृगनयनी सुन्दरियों का धीरे-धीरे हँसना, स्वभाव से चञ्चल नेत्र चलाना,

मीठी-मीठी रसीली बातें करना और नखरे एवं अजीब नाजो-अदा के साथ धीरे-धीरे कदम रखकर चलना—ये हाव-भाव कामी पुरुषों के होश-हवास खता कर, उनको इनका गुलाम बना देते हैं, अर्थात् कामी पुरुष स्त्रियों के इन हाव-भाव और नाजो-अदाओं को देख-देखकर, अपनी सुध-बुध खो, पागलसे हो जाते और इनकी इन अदाओं पर न्यौछावर होकर सदा को इन के क्रीत-दास हो जाते हैं।

दोहा।

मन्द हसन तीखे नयन, सरस वचन साविलास।
गजगमनी रमणी निरख, को न करे अभिलाष ॥६॥

सार—नवीना युवतियों के हृदयहारी हाव-भावों पर न मर मिटनेवाला पुरुष कोई विरली ही महतारी जनती है।

6 Is not everything charming in a lotus-eyed woman just verging on her youth? Say the gentle smile on her face, the casting of her restless eyes, talking sweetly in different new charming modes, walking by gestures and with slow steps like that of new leaves

—※—

द्रष्टव्येषु किमुत्तमं मृगदृशां प्रेमप्रसन्नं मुखं
घ्रातव्येष्वपि किं तदास्यपवन. श्राव्येषु किं तद्वच. ॥

किं घ्रातेषु मदोष्ठपल्लवरस स्पृश्येषु किं तत्तनु-
ध्येयं किं नवयौवनं सुहृदयैः सर्वत्र तद्विभ्रमः ॥७॥

रसिकों के देखने-योग्य क्या है? मृगनयनी कामिनियों का प्रेमपूर्ण प्रसन्न मुख। सूँघने योग्य क्या है? उनके मुँह की भाफ। सुनने योग्य क्या है? उनके वचन। स्वादिष्ट पदार्थ क्या है? उनके ओष्ठपल्लव का रस। छूने-योग्य क्या है? उनका कोमल शरीर। ध्यान करने योग्य क्या है? उनका नवयौवन और विलास।

मनुष्य के पाँच इन्द्रियाँ होती हैं:—(१) आँख, (२) नाक, (३) कान, (४) जीभ, और (५) त्वचा। आँखका काम देखना, नाक का सूँघना, कान का सुनना, जीभ का चखना और त्वचा का स्पर्श करना है। आँख रूप देखना चाहती है, नाक सुगन्धित पदार्थ सूँघना, कान रसीली बातें सुनना, जीभ सुस्वादु पदार्थ चखना और त्वचा कोमल वस्तु छूना चाहती है। कामी पुरुषों की पाँचों इन्द्रियों की सन्तुष्टि के लिये, भगवान् ने एक सुन्दरी नारी ही पैदा कर दी है। मतलब यह कि, रसिकों की पाँचो ज्ञानेन्द्रियों की सन्तुष्टि के सामान एक कामिनीमें ही मौजूद हैं। मृगनयनियोंके सुन्दर मुख आँखोंके देखनेके लिये हैं। उनके मुँहकी सुगन्धित भाफ नाकके सूँघने के लिये है। उनके मिश्री से भी मीठे और मधुर वचन कानों के सुननेके लिये हैं। उनके नीचले होठ का अमृत-समान स्वादिष्ट रस जीभके चखनेके लिये है और चमड़े को छूकर सुखी होने के लिये उनका मखमल से

भी कोमल शरीर या उनके पैरों के तलवे हैं तथा ध्यान करने के लिये उनकी नयी जवानी और उनकी नाजो-अदा है। सारांश यह कि सारे सुख एक सुन्दरी ही में मौजूद हैं।

अगर कोई यह कहे कि, नहीं जी, यह सब कवियों की लीला—उनके चढ़ावे हैं, तो हम यही कहेंगे कि, आप उनसे पूछिये, जिन्होंने इन सब का आनन्द अनुभव किया या इनका मज़ा उठाया है। जिसने उनका चन्द्रमा के समान प्रेमरस से पूर्ण मुख देखा है, वही कह सकता है कि, उनका मुख देखनेसे रूप देखनेकी इच्छुक नेत्र-इन्द्रिय की तृप्ति होती है या नहीं। जिसने मृगमद—कस्तूरीको भी मात करनेवाली उनके मुखकी सुगन्ध का मज़ा लिया है, वही कह सकता है कि, उस सुगन्ध से बढ़कर औरभी कोई सुगन्ध नासिका की तृप्ति करने वाली है या नहीं। जिसने उनके मख़मल की भी नरमी को मात करनेवाले शरीर या पैरों के तलवों पर हाथ फेरे हैं, वही कह सकता है कि, यह बात कहाँ तक सच है। जिसने उनकी मधुर और रसीली एवं कानों में अमृत ढालने वाली बातें सुनी हैं, वही कह सकता है कि, उनकी मीठी-मीठी बातों में क्या मज़ा है। जिसने उनके रूप, यौवन और हाव-भाव तथा विलासों का ध्यान किया है, वही कह सकता है कि, उनके ध्यान में कैसा आनन्द है। जिसने ब्रह्म का ध्यान किया है, वही कह सकता है कि, ब्रह्म के ध्यान में वह आनन्द है, जिसकी समता त्रिलोकी के और किसी आनन्द में नहीं है। जिसने ब्रह्म का

ध्यान ही नहीं किया, वह ब्रह्मानन्द के वर्णनातीत आनन्द की बात को क्या जाने ? जिसने अनुपम सुन्दरी मृगनयनी के होठों से होठ लगाकर अमृत पिया है, वही कह सकता है कि, सुन्दरी के नीचले होठ में अमृत है या नहीं। महाकवि नजीर कहते हैं और ठीक ही कहते हैं,—

सागिर के लब से पूॅछिये, इस लब की लज्जतें।
किस वास्ते, कि खूब समझता है लब की लब॥

उसके ओठों का स्वाद प्याले के ओठों से पूछिये, क्योंकि ओठों की यात ओठ ही समझता है।

छप्पय।

कहा देखिवे योग्य ? प्रिया को अति प्रसन्न मुख।
कहा सूॅघिये सोधि ? श्वास सौगन्धि हरत दुख।
कहा दीजिये कान ? प्रानप्यारी की बातन।
कहा लीजिये स्वाद ? अधर के अमृत अघातन।
परसिये कहा ? ताको सुवपु, ध्यान कहा ? जोवन सुछवि।
सब भॉति सकल सुखको सदन, जान सुयश गावत सुकवि॥७॥

सार---एक सुन्दरी कामिनी में पुरुष की सारी इन्द्रियॉ की तृप्ति का मसाला है।

7 For lovers what is the best sight worth seeing ? The lovely and beautiful face of a lotus eyed woma What is the

best thing worth smelling? The vapour of her mouth. What is the best thing for hearing? Her sweet voice. What object has the best taste? The enjoyment of her leaf like lips. What is best among the objects of touch? Her body. And what is the best thing for meditation? Her youth and the pleasure arising from it.

—※—

एता॰ स्खलद्वलयसंहतिमेखलोत्थ-
झंकारनूपुररवाहृतराजहंस्यः ॥
कुर्वन्ति कस्य न मनो विवशं तरुण्यो
वित्रस्तमुग्धहरिणीसदृशैः कटाक्षैः ॥८॥

चञ्चल कङ्कन, ढीली कौंधनी और पायजेबों के घुँघरुओं की मधुर झङ्कार से राजहंसों को शरमाने वाली नवयुवती सुन्दरियाँ, भयभीत हिरनी के समान कटाक्ष करके, किसके मन को विवश नहीं कर देतीं? ॥८॥

कर्धनी और पायजेब प्रभृति अलङ्कारों के मधुर-मधुर शब्दों से राजहंसनियों का निरादर करने वाली नवयुवतियाँ, जब भड़की हुई भोली हिरनी की तरह अपनी तीखी नजर का तीर चलाती हैं, तब बड़े-बड़े बहादुर उनके वशीभूत होकर उनकी गुलामी करने लगते हैं। मनुष्य तो कौन चीज है, देवता तक ऐसी कामिनियोंके कटाक्ष-बाणों से पराजित हो जाते हैं। अब इनकी निगाह के तेज तीर से जो परास्त न हो, अपनी रक्षा कर ले, उसे हम क्या कहें, सो हमारी समझ में नहीं आता।

भोले-भाले पाठक ! इनके कटाक्षों की मार को मामूली मार न समझें। महाकवि दाग कहते हैं और ठीक कहते हैं :—

तीर तेरा मिज़गाँ से बढ़कर नहीं।
कुछ खटकते हैं, इसी नश्तर से हम॥

तेरी भौंहों में जो काट है, वह तेरे तीर मे नहीं। इसीलिये मुझे तीर से तेरे भौंह रूप नश्तर का हर समय खटका लगा रहता है। मतलब यह कि, तीर की मार का इलाज है पर कामिनीके कटाक्ष-बाण का इलाज नहीं।

दोहा।

नूपुर किंकन किंकिणी, बोलत अमृत बैन।
काको मन नहिं बस करत, मृगनैनिनके नैन?॥८॥

सार—नाज़नियों के निगाहे तीर से न घायल होनेवाला करोड़ों में कोई एक होता हो, तो होता हो!

8 Which mind is there that does not go out of control by the casting of the eyes like that of a frightened hind of the young woman, the sounds of whose restless bracelets and the waistchain and the tinklings of whose anklets defeat the sweet sound of swans even

—*—

कुंकुमपंककलंकितदेहा गौरपयोधरकम्पितहारा ।
नूपुरहंसरणत्पदपद्मा कं न वशीकुरुते भुवि रामा ॥८॥

जिसकी देह पर केसर लगी है, जिसके गोरे-गोरे स्तनों पर हार झूल रहा है और नूपुररूपी हंस जिसके चरणकमलोंमे मधुर-मधुर शब्द कर रहे हैं,—ऐसी सुन्दरी इस पृथ्वी पर किनके मन को वश में नहीं कर लेती ?॥६॥

खुलासा—जिसकी देह पर केसर लगी है, जिसके सघन पीनपयोधरों पर मोतियों का हार धीरे-धीरे हिल रहा है, जिस के कमल जैसे चरणो से बाजे की मधुर-मधुर झंकार निकल रही है,वह सुन्दरी इस जगत्‌में किसीको भी अपने अधीन किये बिना नही छोडती , जो उस को नज़रो तले आता है, वही उसका गुलाम हो जाता है । परन्तु जो पुरुप ऐसी मनो-मोहिनी नारी के वश में नही होता, उस के रूपलावण्य और नाज़ो-अदाँ पर नही मर मिटता, वह सच्चा शूरवीर और मोक्ष का अधिकारी है ।

दोहा ।

हार हलें कुचकनक लग, केशर रंजित देह ।
नूपुरध्वनि पदकमलकी, केहि न करें वस येह ? ॥६॥

सार--जिनके गोरे गोरे वदन पर केसर लगी है, जिनकी नारंगियोंसी सुगोल छातियों पर

मोतियों के हार हिल रहे हैं और जिनके चरण-कमलोंकी पायज़ेवों से छमा-छम की मीठी-मीठी मनोहारिणी आवाज़ें आती हैं, वे मृगनयनी किसे अपने वश में नहीं कर लेतीं ?

9 *Whose minds are not overpowered on this earth by such beautiful women whose body is decorated by saffron and sandal and on whose white breasts garlands are hung and in whose lotus like feet anklets sound like swans ?*

—*—

नूनं हि ते कविवरा विपरीतबोधा
ये नित्यमाहुरबला इति कामिनीनाम् ॥
याभिर्विलोलतरतारकदृष्टिपातै:
शक्रादयोऽपि विजितास्त्वबलाः कथं ताः ॥१०॥

स्त्रियो को "अबला" कहनेवाले श्रेष्ठ कवियों की बुद्धि निश्चय ही उल्टी है। भला, जो अपने नेत्रों के चञ्चल कटाक्षों से महाबली इन्द्रादिक देवताओं को भी मार लेती हैं, वे "अबला" किस तरह हो सकती हैं ? ॥ १० ॥

जो कोमलाङ्गी कामिनियाँ, बिना अस्त्र-शस्त्रों के, अपनी दृष्टिमात्र से, जगत्-विजयी योद्धाओं की तो बात ही क्या है, त्रिलोकी का पलक मारते संहार कर डालने की शक्ति रखने वाले शङ्कर और महाबली इन्द्रादिक देवताओं को भी अपने

वशमें करके, मनमाने नाच नचाने की शक्ति रखती है, और उन्हें अपने इशारों पर नचाती है, उन्हें "अबला" कहनेवाले कवि निश्चय ही पागल है—उनकी मति मारी गई है। सबलाओं का अबला कहने वाले यदि मूर्ख नहीं, तो क्या अक्कमन्द है ?

दोहा।

कामिनि को अबला कहत, ते नर मूढ अचेत।
इन्द्रादिक जीते दृगन, सो अबला किहि हेत ? ॥१०॥

सार--स्त्रियाँ अपनी एक नज़र से भूतल के ज़बर्दस्त से ज़बर्दस्त योद्धा को पराजित कर सकती हैं, इसलिये उन्हें "अबला" कहना भूल है।

10. *Those great poets who have called women powerless have surely thought just in the opposite way How can they be said to be so whose casting of the moving eye-lids subdues even Indra and others.*

—:—

नूनमाज्ञाकरस्तस्याः सुभ्रुवो मकरध्वजः ॥
यतस्तन्नेत्रसंचारसूचितेषु प्रवर्तते ॥११॥

कामदेव निश्चय ही सुन्दर भौंहवाली स्त्रियों की आज्ञा पालन करनेवाला चाकर है, क्योंकि जिन पर उन के कटाक्ष पडते हैं, उन्हीं को वह जा दबाता है ॥११॥

खुलासा—निस्सन्देह, कामदेव सुन्दर भौंहवाली स्त्रियों की आज्ञा के वशवर्त्ती होकर चलने वाला सेवक है। वह उन के इशारों पर चलता है। जिस की ओर वे सैन कर देती हैं, वह उन्हीं को जा मारता है। अव्वल तो स्त्रियाँ स्वयँ ही बलवती होती हैं। अपने ही कटाक्षोंसे बड़े-बड़े-शूरवीरोंके छक्के छुड़ा सकती हैं, फिर कामदेव उन के हुक्म में है, यह और भी गजब की बात है। ऐसी स्त्रियों से कौन अपनी रक्षा कर सकता है? केवल वही उन से बच कर रह सकता है, जो उन के दृष्टिपथ मे न आवे। शायद इसीलिये, मोक्ष-कामी पुरुष मनुष्यों की बस्तियाँ छोड़ कर, निर्जन वनों में जाकर, आत्मोद्धार की चेष्टा करते हैं, क्योंकि वन में न कामिनी होगी और न वे अपने सेवक कामदेव को पञ्चशर चलाकर अपना शिकार मारने का हुक्म देंगी।

दोहा।

कामिनि हुकमी काम यह, नैन सैन प्रगटात।
तीन लोक जीत्यो मदन, ताहि करत निज हात ॥११॥

सार—कामदेव स्त्रियों का सेवक है।

11 *Surely Kamdev (Cupid) is the obedient servant of women, because he, at once, overpowers that man who is rather mark.*

—:—

केशा संयमिन: श्रुतेरपि परं पारंगते लोचने
चान्तर्वक्त्रमपि स्वभावशुचिभि: कीर्णं द्विजानां गणैः
मुक्तानां सतताधिवासरुचिरं वक्षोजकुम्भद्वयं
चेत्थं तन्वि वपुः प्रशान्तमपि ते क्षोभं करोत्येव नः ॥१२॥

ऐ कृशाङ्गि ! हे नाज़नी ! तेरे बाल साफ़-सुथरे और संवारे हुए हैं, तेरी आँखे बड़ी-बड़ी और कानों तक हैं, तेरा मुख स्वभाव से ही स्वच्छ और सफेद दन्तपंक्ति से शोभायमान है, तेरे कुचो पर मोतियों के हार झूल रहे हैं, पर तेरा ऐसा शीतल और शान्तिमय शरीर भी मेरे मन में तो विकार ही उत्पन्न करता है, यह अचम्भे की बात है ! ॥१२॥

नोट—इस श्लोकम जो "संयमिन, श्रुतेरपि, द्विजाना और मुक्ताना" शब्द आये हैं, उनके दो दो अर्थ हैं। उनके इस्तेमालसे कवि महोदयने अपूर्व चमत्कार दिखाया है। इसीसे इस श्लोकके दो अर्थ हो गये हैं। एक अर्थ ऊपर लिखा ही है, और दूसरा नीचे लिखते हैं, पर पहले उन शब्दोके दो दो अर्थ बता देना उचित समझते हैं — संयमिन = संवारे हुए और जितेन्द्रिय। श्रुतेरपि = कानों तक पहुँचे हुए और वेद शास्त्र पारङ्गत, काननचारी और वनचारी। द्विजानां = दाँत, ब्राह्मण। मुक्ताना = मोती और मुक्त पुरुष।

दूसरा अर्थ।

हे कृशाङ्गि ! ऐ नाज़नी ! तेरे बाल जितेन्द्रिय हैं, तेरे नेत्र वेदशास्त्र-पारङ्गत और काननचारी हैं, तेरा मुख पवित्र है और उसमे ब्राह्मणों का निवास है, तेरी छातियो पर मुक्त पुरुषों का निवास है, इसलिये तेरा शरीर सतोगुण का धाम है, अत

उसे शीतल और शान्तिमय होना चाहिये, पर, है उल्टी बात। तेरे सतोगुणी शरीर से मुझे शान्ति मिलनी चाहिये, पर उससे मेरे मन मे उल्टी अशान्ति या क्षोभ अथवा अनुराग उत्पन्न होता है, यह आश्चर्य की बात है।

छप्पय।

सयम राखत केश, नयनहू काननचारी।
मुख माँहि पवित्र रहत, द्विजगन सुखकारी।
उस पर मुक्ताहार, रहत निशिदिन छवि छायो।
आनन चन्द उजास, रूप उज्ज्वल दरसायो।
तेरो तन तरुणी ! मृदुल अति, चलत चाल धीरज सहित।
सब भाँति सतोगुणको सदन, तऊ करत अनुराग चित ॥१२॥

नोट—इस कवितासे भी दूसरा अर्थ साफ समझमें आता है। तेरे बाल सयमी हैं, नेत्र काननचारी हैं, मुखमें पवित्र सुखकारी ब्राह्मणो का निवास है, छातियो पर मुक्त पुरुषों का हार है, मुख चन्द्रमा के समान है, शरीर नाजुक है, तू धीमी-धीमी चाल चलती है,—इन सब लक्षणोंसे तेरा शरीर सतोगुणका घर है। सतोगुणी शरीरसे विकार या क्षोभ उत्पन्न हो नहीं सकता। फिर भी, तेरा शरीर अनुराग पैदा करता है, यह अचम्भे कीही बात है।

सार—स्त्री का शरीर, सब तरह से सतोगुणी, शीतल और शान्तिमय होने पर भी, पुरुष के मन में क्षोभ ही करता है।

12 *O women, of slender constitution, (you) whose hair is*

well controlled, whose eyes are outstretched up to ear, whose mouth is filled with naturally clean teeth and on whose breasts pearls are always shining, though your this frame is full of calmness yet it disturbs us *

—*—

मुग्धे धानुष्कता केयमपूर्वा त्वयि दृश्यते ।
यथा हरसि चेतांसि गुणैरेव न सायकैः ॥१३॥

हे मुग्धे सुन्दरी! धनुर्विद्या में ऐसी असाधारण कुशलता तुझ में कहाँ से आई कि, वाण छोड़े विना, केवल गुण* से ही, तू पुरुष के हृदयको वेध देती है? ॥ १३ ॥

ऐ कमसिन भोली-भाली नाजनी! तैंने ऐसी गज़बकी तीर-न्दाजी किससे सीखी, जो विना तीर चलाये ही, केवल कमान की डोरी छूकर ही, तू मर्द के दिल को छेद देती है?

---

* The reference in this shloka have double meanings Sanyami—means controlled as well as bound, Shruti—means Vedas as well as ears, Dwija—means Brahmins as also teeth, Mukta means librated souls as well as pearls In the body of a beautiful girl we find the hairs well bound up—this is control, eyes stretched up to ears—and the other meaning is it goes beyond the knowledge of Vedas, mouth full of beautiful teeth—the other meaning is that venerable Brahmins are connected with it, breast adorned by pearls—the other meaning is even the liberated souls are connected with it Hence taking one side of the meaning—we find that woman whose body is thus full of signs of calmness is also very attractive and disturbing to us

* गुण=(१) चतुरता, (२) रस्सी, जिस से धनुष के दोनों कोटि बांधे जाते हैं।

उस्ताद जौक ने कहा है —

तुफगा तीर तो जाहिर न था कुछ पास कातिल के।
इलाही फिर जो दिल पर ताकके मारा तो क्या मारा?॥

बड़ा आश्चर्य है, उसके पास न तीर था न पिस्तौल। पर हे परमेश्वर, उसने मेरे दिल पर फिर क्या चीज ताककर मारी जो मै लोट-पोट हो गया?

महाकवि गालिब कहते है:—

इस सादगी पे कौन न मरजाये ऐ खुदा।
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं॥

दोहा।

अति अद्भुत कमनैत तिय, करमें वाण न लेत।
देखो यह विपरीत गति, गुण ते बाँधे देत॥१३॥

सार—स्त्रियोंके पास कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं रहता, वे केवल अपनी चतुराई से ही पुरुषों को वश में कर लेती हैं, यह अचम्भे की बात है।

13. *O beautiful girl, how nice is your skilfulness in the use of the bow, because you do not pierce the heart of men by arrows but by only bending the bow (in other words, by your charms only)*

——:o:——

सति प्रदीपे सत्यग्नौ सत्सु तारारवीन्दुषु ।
विना मे मृगशावाक्ष्या तमोभूतमिदं जगत् ॥१४॥

यद्यपि दीपक, अग्नि, तारे, सूर्य और चन्द्रमा सभी प्रकाशमान पदार्थ मौजूद हैं, पर मुझे एक मृगनयनी सुन्दरी बिना सारा जगत् अन्धकारपूर्ण दीखता है ॥१४॥

खुलासा—यद्यपि दीपक-चिराग, आग, सितारे, सूरज और चाँद—जैसे सदा थे, वैसे ही अब भी हैं, ये जिस तरह पहले अन्धकार नाश करके उजियाला करते थे, उसी तरह अब भी कर रहे हैं, परन्तु मुझे तो एक मृगनयनी प्यारी बिना सर्वत्र अँधेरा-ही-अँधेरा नजर आता है। तात्पर्य्य यह है कि, घर में सब कुछ होने पर भी, एक स्त्री बिना घर शून्य निर्जन वनसा मालूम होता है।

पण्डितेन्द्र महाराज जगन्नाथ अपने "भामिनी-विलास" मे कहते हैं :—

हरिणीप्रेक्षणा यत्र गृहिणी न विलोक्यते ।
सेवित सर्व सम्पद्भिरपि तद्भवन वनम् ॥

जिस घर मे मृगनयनी गृहिणी नहीं दीखती, वह घर सर्व सम्पत्तिसम्पन्न होने पर भी वन है।

सच है, घर में चाहे पुत्र हो, पुत्र-वधुएँ हो, नौकर-चाकर और दास-दासी हो, हाथी-घोड़े और रथ-पालकी प्रभृति सभी ऐश्वर्य्य के सामान हो, पर एक हिरनी के से नेत्रों वाली प्यारी

न हो, तो वह घर, सर्व सम्पदाये होने पर भी, निर्जन वन की तरह शून्य है। संसार मे घर-गृहस्थी का सच्चा आनन्द सुन्दरी प्राणप्यारी से ही है। महाकवि नज़ीर कहते है :—

मै भी है मीना भी है, सागिर भी है साकी नहीं।
दिल में आता है, लगादें आग मैख़ानेको हम॥

इस समय सारे कामोद्दीपन करने वाले ऐश आराम के सामान—सुरा सुराही आदि मौजूद है, पर है क्या नहीं ? केवल वही, जिसके लिये इन सब वस्तुओं की आवश्यकता हुई। इस से अब हौली ऐसी बुरी जान पड़ती है कि, जी चाहता है कि, इसमें आग लगा दूँ, अर्थात् सब कुछ मौजूद है, पर एक नाज़नी नहीं है, इससे मुझे सब बुरे लगते है। स्त्री बिना सारे आनन्द फीके हैं।

जॉय नामक एक पाश्चात्य विद्वान् कहते है :—"But for women, our life would be without help at the outset, without pleasure in its course and without consolation at the end" अगर स्त्रियाँ न हो, तो पुरुष की बाल्यावस्था असहाय और यौवन आनन्द-विहीन हो जाय तथा बुढापे में कोई आश्वासन देनेवाला न हो। मतलब यह है कि, पुरुष को हर अवस्था में स्त्री की ज़रूरत है। ठीक है, जिसके एक सती साध्वी नारी हो, और चाहे कुछ भी न हो, वह परम सुखी है।

गोथे महोदय कहते हैं—""A hearth of one's own and a good wife are worth gold and pearls" निजका घर और साध्वी स्त्री सोने और मोतियों के बराबर है।

बेकन महोदय भी कहते हैं :—"Wives are young men's mistresses, companion for middle age, and old men's nurses" स्त्रियां युवावस्था में पत्नियो का, मध्यावस्था में सहचारिणियो का और बुढापे में धायो का काम देती है।

स्पेनवालों में एक कहावत है—""To him who has a good wife, no evil can come which he cannot bear" जिस पुरुष के भली स्त्री है, उस पर ऐसी कोई विपत्ति नही आ सकती, जिसे वह सह न सके।

"भामिनी विलास" में औरभी कहा है —

इद लताभिः स्तवकानताभिर्मनोहर हत वनातरालम् ।
सदैव सेव्य स्तनभारवत्यो न चेद्युवत्यो हृदयं हरेयुः ॥

यदि स्तन-भारवती युवती चित्त को न हरे, तो भार से झुकी हुई लतिकाओ से सुशोभित कानन—गुफा का मध्यभाग सेवन करना उचित है, यानी जङ्गल में जाकर किसी गुफामें रहना मुनासिब है।

इसी को स्पष्ट शब्दोंमें यों कह सकते हैं—यदि भारी स्तनो के बोझ से झुकी जाने वाली नाजनी—कोमलाङ्गी पुरुष के चित्त को अपने नाज-नखरो या हाव-भाव प्रभृति से प्रसन्न न

करे, तो पत्रपल्लवों के भारी बोझ से झुकी हुई लताओं से शोभायमान गुहा या वनके मध्य भागमें रहकर प्रभुकी आराधना करनी चाहिये। जब कभी पीनपयोधरा सुन्दरी की याद आयेगी, तभी पत्रपल्लवों के भार से नम्र हुई लताओं को देख, मन में सन्तोष हो जायगा।

दोहा।

अनल दीप रवि शशि नखत, यदपि करत उज्यार।
मृगनैनी बिन मोंहि यह, लागत जगत् अँध्यार ॥१४॥

सार—गृहस्थाश्रम में एक स्त्री बिना इन्द्र-तुल्य सम्पत्ति भी तुच्छ है।

14. Though there are lamp, light, fire, stars, sun and moon yet to me the whole world is enveloped in darkness without a woman with eyes like that of a deer

---

उद्वृत्त: स्तनभार एष तरले नेत्रे चले भ्रूलते
रागाधिष्ठितमो पल्लवमिदं कुर्वन्तु नाम व्यथाम।
सौभाग्याक्षरपंक्तिरेव लिखिता पुष्पायुधेन स्वयं
मध्यस्थाऽपि करोति तापमधिकं रोमावली केनसा ॥१५॥

हे कामिनि! तेरे गोल-गोल उठे हुए भारी कुच, चञ्चल नेत्र, चपल भ्रू-लता और रागपूर्ण नवीन पत्तों के सदृश सुर्ख होंठ, अगर रसिकों के शरीर में वेदना करें तो कर सकते हैं, पर यह समझ

में नहीं आता कि, कामदेव के निज हाथों से लिखी—सौभाग्य की पंक्तिसी—रोमावलि, मध्यस्थ होने पर भी, क्यों चित्त को सन्तप्त करती है ? ॥१५॥

खुलासा—सुन्दरी के गोल-गोल पुष्ट और उठे हुए कुचों, चञ्चल नेत्रों, चपल भौंहों और सुर्ख होठों से कामियों को जो सन्ताप होता है, उसका होना तो स्वाभाविक ही है, उसकी हमें कुछ शिकायत नहीं। शिकायत है, हमें उस रोमावली की—बालों की कतारकी, जो सुन्दरीके पेट पर, नाभिसे जरा ऊपर, मध्यस्थ की तरह, बीचमें सुशोभित है और जो स्वय पुष्पायुध कामदेवके करकमलों द्वारा, सौभाग्य के विशेष चिह्नकी तरह, लिखी गयी है। शिकायत क्यों है ? शिकायत इसलिये है कि, वह मध्यस्थ होकर भी चित्त को सन्ताप देती है। यह प्रसिद्ध बात है कि, मध्यस्थ सन्ताप का कारण नहीं होता।

दोहा ।

अरुण अधर कुच कठिन दृग, भौंह चपल दुख देत ।
सुथिर रूप रोमावली, ताप करत किहि हेत ॥१५॥

सार--स्त्रियों का अङ्ग-प्रत्यङ्ग यहाँ तक कि, एक -एक बाल पुरुष के मन में सन्ताप पैदा करता है। विशेष क्या, "स्त्री" नाम ही सन्ताप-कारक है।

15 If high breasts, restless eyes, moving brows and the two lips like new leaves give pain to a lustful man, they are justified in doing so because (Cupid) Kamadev has marked the words "Good fortune" in the forehead of a woman, but it is incomprehensible why that line of hair passing through the middle of the belly aggravates the pain which as an arbitrator should abate it

---

गुरुणा स्तनभारेण मुखचन्द्रेण भास्वता।
शनैश्चराभ्यां पादाभ्यां रेजे ग्रहमयीव सा ॥१६॥

वह स्त्री गुरु स्तनों के भार से, भास्कर के समान प्रकाशमान मुख-चन्द्र से और शनैश्चर के सदृश मन्दगामी दोनों चरणों से ग्रहमयी सी मालूम होती है ॥१६॥

खुलासा—वह स्त्री अपने पूर्णोन्नत वृहस्पतिके समान दोनों कुचों से, सूर्य्यके समान प्रकाशमान मुखचन्द्र से और मन्दगामी शनैश्चर के समान धीरे-धीरे चलने वाले दोनों चरणकमलों से ग्रहपुञ्ज या रौशन मजमा-उल-नजूम सी जान पड़ती है।

वृहस्पति, चन्द्रमा, सूरज और शनैश्चर—इन तेजस्वी ग्रहों के चिह्न स्त्री में पाये जाते हैं। इसीसे कवि महोदय कहते हैं कि, वह नाजनी ग्रहमयीसी शोभित होती है। उसके स्तन-

---

* गुरु, भास्वत प्रभृति शब्दोंके दो दो अर्थ हैं। जैसे, गुरु = भारी और वृहस्पति। चन्द्रमा = चन्द्रवत् और चन्द्रमा। भास्वत = प्रकाशमान और सूरज। शनैश्चर = मन्दगामी और शनैश्चर। सनीचर मन्दगामी प्रसिद्ध है।

हृदय गुरु—भारी है, मुख सूरज और चांदसा है और चरण मन्द-गामी शनैश्चर की तरह मन्दगामी है। स्पष्ट है कि, उसके शरीर में सभी तेजस्वी ग्रहों का निवास है अथवा नवग्रह उसके सेवक है ; अतएव स्त्री के होते नवग्रहों के पूजन की ज़रूरत नहीं, क्योंकि एकमात्र उसकी पूजा-आराधनासे सभी फलोंकी प्राप्ति हो सकती है।

मिष्टर हारग्रेव नामक एक पाश्चात्य विद्वान् भी स्त्रियों को आकाश के सितारों की तरह पृथ्वी के सितारे कहते हैं। आप लिखते हैं —"Women are the poetry of the world in the same sense as the stars are the poetry of heaven Clear, light-giving, harmonious, they are the terrestrial planets that rule the destinies of mankind" जिस प्रकार नक्षत्र नभ के आभूषण है, उसी प्रकार स्त्रियाँ पृथ्वी की आभूषण हैं। वे स्वच्छ निर्मल, प्रकाशमान और शान्ति-प्रद पार्थिव नक्षत्र है, जो मनुष्य-जाति के भाग्य का निपटारा करती हैं।

महाराजा प्रतापसिंहजू अपनी नीचे लिखी कविता में, स्त्री के शरीर में नवग्रहों का निवास स्पष्ट रूप से दिखाते है:—उसके बाल राहुके समान हैं,उसका मुँह चन्द्रमाके समान शोभित है,उसके दोनो नेत्र सूर्य है, अलकें केतु हैं, मन्द-मन्द हँसना शुक्र है, वाणी बुध है, दोनो स्तन बृहस्पति हैं, कान मङ्गल है और उसकी मन्दी-मन्दी चाल शनैश्चर है। ऐसी महामनोहर नव-

ग्रहमयी युवतीकी सेवकाई स्वय नवग्रह करते है, अत उसके समान फलदायिनी और कौन है ?

छप्पय ।

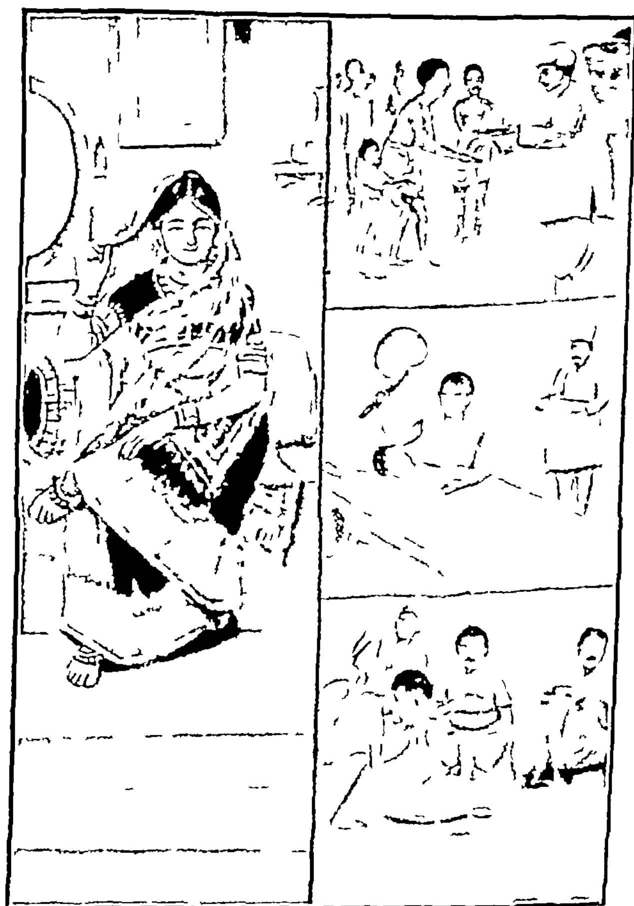
केश राहु सम जान, चन्द्र सों सोहत आनन ।
द्वादश में द्वै अर्क नैन, केतुहि अलकानन ।
मन्द हास है शुक्र, बुधै बानी कहि जानो ।
सुर गुरु जान उरोजै, कर्ण मगलहि बखानो ।
अति मन्द चाल सोई शनिश्चर, महामनोहर युवति यह ।
तेहि सम फलदायक को देखियत, जाको सेवत नवग्रह ॥१६॥

सार—मृगनयनी सुन्दरी नवयुवती प्रकाशमान ग्रहपुञ्ज के समान चित्ताकर्षक और मनोहर होती है। उसकी हृदयहारिणी छविका वर्णन करना कठिन है।

16. That woman bent under the load of heavy breasts, shining with moon like face and walking with slow steps, looks like a planet (Guru means heavy as well as Jupiter planet Sanaishchar means slow steps as well as Saturn—the poet takes these words in their duplicate meanings and says that she looks like planets)

—:—

तस्या. स्तनौ यदि घनौ जघनं विहारि
वक्त्रं च चारु तव चित्त किमाकुलत्वम ॥



हे मन ! उस कामिनी के पुष्ट स्तनों, मनोहर जांघों और चन्द्रमुख को देखकर क्यों व्याकुल होते हो ? अगर तुम उसके कठोर कुचों और मनोहर जंघाओं वगैर का आनन्द लेना चाहते हो, तो परोपकार-पुण्य सञ्चय करो। अर्थात सुन्दरी मृगनयनी पुण्य-कर्म्म करने से मिलती है। । ७७ ।२

पुण्यं कुरुष्व यदि तेषु तवास्ति वाञ्छा
पुण्यैर्विना न हि भवन्ति समीहितार्थाः ॥१७॥

हे चित्त ! उस स्त्री के पुष्ट स्तनो, मनोहर जाँघो और सुन्दर मुँह को देखकर, वृथा क्यो व्याकुल होते हो ? यदि तुम उस के कठोर स्तनो प्रभृति का आनन्द लेना ही चाहते हो, तो पुण्य करो क्योंकि विना पुण्य किये मनोरथ सिद्ध नही होते ॥१७॥

खुलासा—हे मन ! उस के मोटे-मोटे और उठे हुए दोनों कुचों, चित्ताकर्षक नितम्बों और स्वर्गीय अपसराओं के समान चन्द्र-मुख को देखकर क्यों कुढ़ता है ? पर-स्त्री पर मन चलाना उचित नहीं। अगर परमात्मा ने तुझे मनोमुग्धकर रूप, उठी हुई छतियों और पतली कमर वाली सुन्दरी नहीं दी है, तो जैसी दी है, उसी पर सन्तोष कर। कहा है—

देख पराई चूपडी, क्यों ललचावे जीव ।
रुखी-सूखी खायके, ठण्डा पानी पीव ॥

अगर तू सेवों के समान कठोर कुचों वाली स्त्रियोंके साथ रमण करने की ही इच्छा रखता है , तो इस जन्म में परोपकार-पुण्य कर, पुण्य के प्रताप से तुझे कमान सी बाँकी भृकुटियों तथा स्थूल जाँघों और खञ्जन पक्षी के से नेत्रों वाली, जवानी के नशे में चूर और प्रेम से प्रफुल्लित सुमुखी नारी अवश्य मिलेगी। धैर्य रख, अधीर मत हो। देख, पण्डितराज जगन्नाथ अपने "भामिनी-विलास" में कहते है और बिल्कुल ठीक कहते हैं —

लभ्यते पुण्यैर्गृहिणी मनोज्ञा तया सुपुत्राः परितः पवित्राः ।
स्फीतं यशस्तैः समुदेति नित्यं तेनास्य नित्यः खलु नाकलोकः ॥

पुण्य से सुन्दर स्त्री मिलती है, स्त्री से सच्चरित्र सुपुत्र होते हैं, सुपुत्रों से विमल यश दिनो-दिन फैलता है और यश से यह लोक स्वर्ग के समान हो जाता है।

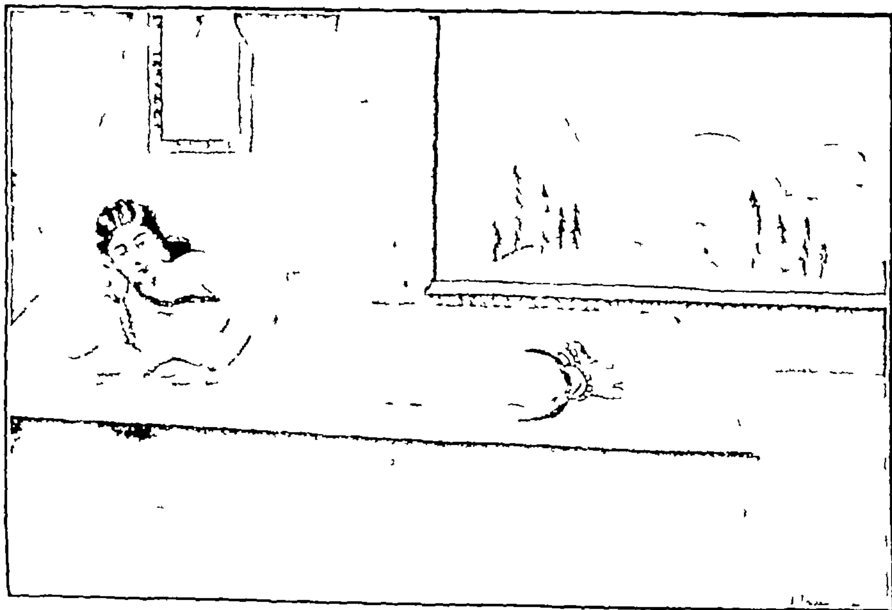
कुण्डलिया।

रे चित्त ! जो चाहे रमण, कुच कठोर नव नार।
तो तू कर कछु सुकृत अब, मिले जु वह सुकुमार।
मिले जु वह सुकुमार, वक्र भौं जघन बिहारी।
सुन्दर मुख मृदु हास, कजरी अँखियाँ कारी।
यौवन मद भरपूर, प्रेमसों सदा प्रफुल्लित।
मत अधीर धर धीर, मिले वह अवस अरे चित्त ॥१७॥

सार—अगर उठती जवानीकी कमलनयनी सुन्दरी कामिनी पर मन चलता है, तो पुण्य-संचय करो।

17 O my mind, why are you troubled at the sight of a woman whose breasts are firm and protuberant, whose thighs are fit for enjoying and whose face is lovely? If you have a desire for them, then practise virtue, because your wishes are not to be fulfilled without it

—*:—



इस लोक में जन्म लेकर पुरुषों को पर्वतों के नितम्ब सेवन करने चाहिये अथवा कामदेव की उमङ्ग

मात्सर्यमुत्सार्य विचार्य कार्य-
मार्याः समर्यादमिदं वदन्तु ॥
सेव्या नितम्बाः किमु भूधराणा-
मुत स्मरस्मेरविलासिनीनाम् ॥१८॥

हे योग्यायोग्य के विचार में निपुण श्रेष्ठ पुरुषो! आप पक्षपात को छोड़, कर्त्तव्य-कर्म को विचार, और शास्त्रों को देखकर यह बात कहिये कि, इस लोक में जन्म लेकर मनुष्य को पर्वतों के नितम्ब सेवन करने चाहियें अथवा कामदेव की उमङ्ग से मन्द-मन्द मुस्कराती हुई विलासवती तरुणी स्त्रियो के नितम्ब ॥१८॥

खुलासा—विद्वानो! आप शास्त्रों को विचार कर, साथ ही ईर्षा द्वेष या पक्षपातको त्यागकर, इस बात का फैसला कीजिये, कि मनुष्य को इस दुनिया में आकर, स्त्रियों के नितम्ब* सेवन करने चाहियें या पर्वतों के नितम्ब, अर्थात् उन्हें संसारमें आकर पर्वत-गुहा में वास करना चाहिये अथवा मोटी-मोटी जाँघों, कठोर कुचों और स्थूल नितम्बों वाली स्त्रियों के साथ भोग-विलास करना चाहिये।

स्त्री-भोग और हरि-भजन,—ये दोनों ही काम उत्तम हैं। संसारियों के लिये पहला और संसार से उदासीनों के लिये दूसरा अच्छा है। जिन्हें नवयुवती स्त्रियों का भोग-विलास पसन्द हो, वे

* नितम्ब के दो अर्थ हैं —(१) पर्वत का बीच का भाग, (२) कमर का पिछला हिस्सा यानी चूतड़।

धनार्ज्जन करे और उन्हें भोगें, पर साथही पुण्य सञ्चय भी करें, ताकि उन्हें इस सफरके वाद, अगले मुकाम पर भी, यानी आगे होनेवाले जन्ममें भी, फिर मृगनयनी स्त्रियाँ और अन्यान्य सम्पदायें मिले। पर इस भोग-विलासमे वारम्वार मरने और जन्म लेनेका घोर कष्ट है। अत जो जन्म-मरण के कष्टो से वचना चाहें, अनन्त कालस्थायी सुख भोगना चाहें, वे सुन्दरी से सुन्दरी स्त्री को पापों की खान, दुःखो की मूल और नरक की नसैनी समझ, निर्जन गहन वन में जा, किसी पर्वत की गुफा में वस, सर्व मनोरथदाता पद्मपलाशलोचन हरि का एकाग्र चित्त से ध्यान करें।

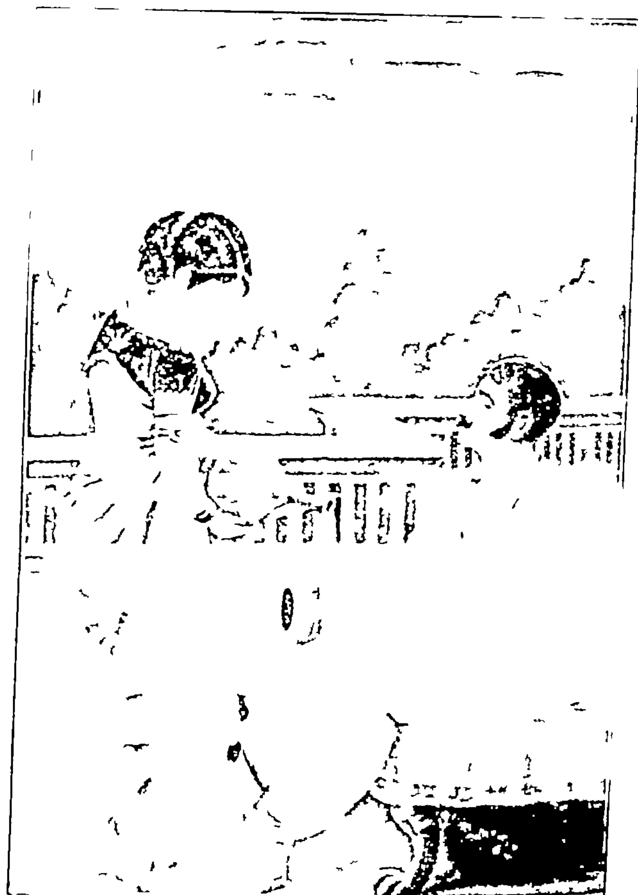
दोहा।

नीच वचन सुन अनख तज, करहु काज लहि भेव।
कै तो सेवो गिरिदरन, कै कामिनि-कुच सेव॥१८॥

सार—संसारियों के लिये नवयुवतियों को भोगना और विरक्तों के लिये पर्वत-गुहाओं में हरिभजन करना उचित है। जो इन दोनों में से एक भी काम नहीं करते, उनका जन्म लेना वृथा है।

18 O learned men, tell us without any jealousy and with fair consideration whether it is desirable to dwell on and enjoy the middle part of a mountain or to enjoy the hips of an amorous woman smiling with the excess of passion

—४—



संसारेऽस्मिन्नसारे परिणतितरले द्वे गती पण्डितानां
तत्त्वज्ञानामृताम्भः प्लुतललितधियां यातु कालः कदाचित् ॥
नो चेन्मुग्धाङ्गनानां स्तनजघनभराभोगसंभोगिनीनां
स्थूलोपस्थस्थलीषु स्थगितकरतलस्पर्शलीलोद्यतानाम् ॥१८॥

इस असार संसार मे, जिस की अन्तिम अवस्था अतीव चञ्चल है, उन्ही बुद्धिमानो का समय अच्छी तरह कटता है, जिन की बुद्धि तत्त्वज्ञान रूपी अमृत-सरोवर मे बारम्बार ग़ोते लगाने से निर्मल हो गई है अथवा उन्ही का समय अच्छी तरह अतिवाहित होता है, जो नवयौवनाओं के कठोर और स्थूल कुचो एव सघन जङ्घाओ को सकाम स्पर्श कर, कामदेव का सुख उपभोग करते है।

खुलासा—इस मिथ्या और चञ्चल ससार में या तो उन्ही के दिन अच्छी तरह व्यतीत होते हैं, जो ब्रह्म-विचार में लीन रहते है अथवा उन्हीं के दिन अच्छी तरह कटते हैं, जो सख़्त और मोटे-मोटे कुचों तथा गुदगुदी जङ्घाओंवाली नवयुवतियों को अपने शरीर से चिपटाये, काम की उमङ्ग से मस्त होकर, उन के भोग-विलास का आनन्द लूटते हैं।

जो मृगनयनी कामिनियों को भोगते हैं, उन के दिन बड़े सुख से कटते हैं। उन्हें मालूम नहीं होता कि, कब दिन निकलता है और कब रात होती है, दिन पर दिन, पक्ष पर पक्ष, मास पर मास, और वर्षपर वर्ष आते हैं और चले जाते हैं, किन्तु जो कामिनियो

के साथ रमण नहीं करते, उनके दिन बुरी तरहसे कटते हैं। उन्हें एक-एक क्षण एक-एक वर्ष मालूम होता और जीवन भारवत् प्रतीत होता है। महाकवि नजीर कहते हैं —

कल शबे वस्ल में क्या जल्द कटी थी घड़ियाँ।
आज क्या मर गये घड़ियाल बजाने वाले॥

कल भोग-विलास में रात कैसी जल्दी कट गई? आज तो रात बीतती ही नहीं! क्या आज घण्टा बजाने वाले मर गये?

और भी किसीने कहा है.—

अय्याम मुसीवत के तो काटे नहीं कटते।
दिन ऐश की घड़ियों में गुज़र जाते हैं कैसे॥

दुःख के दिन तो काटे नहीं कटते, पर ऐश के दिन सहज में कट जाते है।

मतलब यह है कि, कोमलाङ्गियोंके साथ समय हवा की तरह बीतता है, पर जिन के माशूकाएँ नहीं हैं, उन के दिन पहाड़ हो जाते हैं। हाँ, उन के दिन भी परमानन्द मे हवा की तेजी से बीतते हैं, जो ब्रह्मानन्द में लीन रहते हैं, लेकिन जो न तो ईश्वर का ध्यान करते हैं और न सुन्दारियों का सुख लूटते हैं, उन के दिन काटे से भी नहीं कटते।

वैराग्यपक्ष।

इस नापायेदार चन्दरोज़ा दुनियाँमें जन्म लेकर, विद्वानो को

दो राहों में से किसी एक पर चलना चाहिये — (१) या तो ब्रह्म विद्याका अमृत पीना चाहिये, अथवा (२) नवयुवती रमणियो के रति मे मग्न रहना चाहिये।

यद्यपि अपनी-अपनी रुचि के अनुसार दोनों राहें ही अच्छी हैं, पर पहली की होड़ दूसरी राह कर नहीं सकती। उसके सुख में कमी-बेशी—क्षय और वृद्धि तथा अनस्थिरता नहीं। उसका सुख सच्चा और अनन्तकाल स्थायी तथा अक्षय है। उस में से सदा पीयूष-धारा गिरा करती है पर दूसरी के सुख में कमी-बेशी हुआ करती है। इसका सुख मिथ्या और क्षणस्थायी है। इन में से जो अमृत-विन्दु टपकते हैं, वे वास्तव में अमृत-विन्दु नहीं किन्तु विष विन्दु हैं. लेकिन मोह से अमृतसे जान पडते हैं। अब बुद्धिमान स्वयं विचार लें और जिस राह को अपने हकमें अच्छी समझे, उसे अख़्त्यार करें।

छप्पय।

अल्पसार ससार, तहाँ द्वै बात शिरोमणि।
ज्ञान अमृतके सिन्धु, मगन ह्वै रहै बुद्धिवनि।
नित्य अनित्य विचार, सहित सब साधन साधें।
की यह प्रौढा नारि, धारि उर मे आराधें।
चैतन्य मदन-अंकुश परासि, सिसकत मसकत करत रिश।
रस मसत कसत विलसत हसत, इह विधि वितवत दिवसनिशि १९

सार—यदि सुख से जीवन व्यतीत करना

हो, तो दो में से एक काम करोः—या तो संसार से मोह त्याग, एकाग्रचित्त से, यशोदा-नन्दन कृष्ण के कमल-चरणों की, निष्काम, भक्ति करो अथवा सुन्दरी रमणियों के रति-केलि में मस्त रहो।

19 In this unsubstantial world which has a very unsteady ending, there are only two courses for the wise Either he spends his time by sharpening his intellect in nectar like spiritual knowledge or he spends his time by laying his hands at and enjoying the body of a lovely and amorous woman having thick breasts.

—:—

मुखेन चन्द्रकान्तेन महानीलै. शिरोरुहै ॥
पाणिभ्यां पद्मरागाभ्यां रेजे रत्नमयीव सा ॥२० ॥

चन्द्रकान्त से मुख, महानील-जैसे केश, और पद्मराग के समान दोनो हाथों से वह स्त्री रत्नमयी सी मालूम होती है ॥२०॥

खुलासा—उस स्त्री का शरीर बहुमूल्य रत्नो से बना हुआ मालूम होता है, क्योंकि उसका चेहरा चन्द्रकान्त मणि के सदृश, उसके गहरे नीले बाल नीलमणि के समान और उसकी सुर्ख हथेलियाँ पद्मराग मणि के जैसी हैं।

उस स्त्रीके अग-प्रत्यङ्ग रत्नों के समान शोभायमान है। उसके

चन्द्रसम मुख को देखकर चन्द्रकान्त मणिका, उसके नीले बालो को देखकर नीलम का और लाल कमल सी हथेलियों को देखकर लालों या पद्मराग-मणिका धोखा होता है।

गज़ब की ख़ूबसूरती है! बला का हुस्न है! अगर वह कामिनी कहीं जवाहिरात के जड़े ज़ेवर पहन ले, तब तो बक़ौल महाकवि दाग़ औरभी गज़ब हो जाय —

एक तो हुस्न बला का, उसपै बनावट आफत।
घर बिगाड़ेंगे हजारों के सँवरने वाले॥

विधाता की कारीगरी का ख़ातमा इन मनोहर कामिनियों की रचनामे ही हुआ है। सचमुच ही उसने फ़ुर्सतमें बैठ कर इनकी गढ़ाई की है। अजब ख़ूबसूरती इन्हें दी है। ऐसा कौन है, जो इनको देखकर इनपर अपना तन-मन न वार दे?

वैराग्य पक्ष।

विधाता ने सुन्दरियों के गढने में खूब कारीगरी दिखाई है। उन्हें सुन्दरता देने में ज़रा भी कसर नहीं रक्खी, तभी तो लोग उन्हें देख कर उनके बनाने वाले को भूल जाते हैं। मन्दिरो में लोग भगवान् के दर्शनों को जाते हैं, पर उन्हें देखते ही भगवान् को भूल उनके दर्शन करने लगते हैं। महाकवि दाग़ कहते हैं —

कभी मसजिद में, जो वह शोख परीजाद आया।
फिर न अल्लाह के बन्दों को, ख़ुदा याद आया॥

एक दिन वह शोख परीजाद मन्दिर में आ गया, तो इश्वर के भक्तों को फिर ईश्वर याद न आया। सब उसे देखकर ईश्वर को भूल गये। कारीगर की बनाई बढ़िया चीज को देखकर लोग एकाग्र मनसे चीजको देखने लगते हैं! किसने बनाई है, इसका ध्यान भी नहीं आता।

कामियों को सुन्दरियाँ रूपकी साक्षात् मूर्त्ति और शोभा की कान मालूम होती हैं, इसीसे वे दिवा-रात उन्हींके ध्यानमें समाधि लगाये रहते हैं, पर उनके बनाने वालेके ध्यानमें समाधि नहीं लगाते। किन्तु वास्तवमें, वे जैसी दीखती है, वैसी हैं नहीं। ये सब ऊपरकी ही तड़क-भड़क और सफाई है। भीतर से देखो तो वे गन्दगी के पिटारे हैं, पर मोहान्ध कामी पुरुष इन गहरी बातोंको नहीं समझते। समझते हैं, केवल वे ज्ञानी जिन्होंने उनकी असलियतका पता लगा लिया है, इसीसे वे उनके दिखावटी और मिथ्या रूप पर मोहित नहीं होते और उनका खयाल स्वप्नमे भी नहीं करते। वे अपना सारा समय जगदीशके ध्यान और आराधनामें ही व्यतीत करते हैं। क्योंकि कामिनियोकी आराधना-उपासना करनेसे जो सुख मिलता है, वह क्षणस्थायी और झूठा है, पर ईश्वरकी उपासना-परिस्तिश से जो सुख मिलता है, वह अनन्त-काल स्थायी और सच्चा है।

दोहा।

चन्द्रकान्त-सम मुख लसत, नीलम केशहि पास।
पद्मराग सम कर लसै, नारी रत्न-प्रकाश ॥२०॥

सार—नारी रत्नों की खान है। उसमें नव रत्नों की शोभा मौजूद है।

20, *That woman with her face like Chandrakanta jewel, her hair like that of Mahanil jewel and her two hands bearing the colour of Padmaraga Jewel shines like a heap of jewels.*

—*—

संमोहयन्ति मदयन्ति विडम्बयन्ति
निर्भर्त्सयन्ति रमयन्ति विषादयन्ति ॥
एताः प्रविश्य सदयं हृदयं नराणां
किं नाम वामनयना न समाचरन्ति ॥२१॥

चतुर मृगनयनी स्त्रियाँ पुरुष के सदय हृदय में एक बार घुसकर, उसे मोहित करती, मदोन्मत्त करतीं, तरसातीं, चिढ़ातीं धमकातीं, रमण करतीं और विरह से दुख देती हैं। ऐसा कौनसा काम है, जिसे ये मृगलोचनी नही करतीं ? ॥२१॥

जिस पुरुषों पर इन सुन्दरियो की निगाह का तेज तीर चल जाता है, वह लोट-पोट हो जाता है और उसके होश-हवास खता हो जाते है। अगर वह तीर मारने वाली, उस पर दया-भाव नहीं दिखाती, तो बेचारे का करम कल्याण ही हो जाता है—जीवन के लाले पड जाते है। महाकवि नजीर कहते है :—

इधर उसकी निगह का, नाज से आकर पलट जाना।
इधर मुडना तडपना, गश में आना दम उलट जाना॥

इस पद में कवि ने प्रेम-दृष्टि की चोट का जो करुणापूर्ण चित्र खींचा है, सो बिलकुल ठीक है। भुक्तभोगी जानते हैं, हमारे तशरीह करने की जरूरत नहीं।

स्त्रियाँ जैसी कोमलाङ्गी होती हैं, वैसी ही वज्रहृदया भी होती हैं। इन्हें अपने शिकार को तडपते देखने में बडा मजा आता है। जब इनका शिकार इनके कटाक्ष-वाण की मार से सन्निपात-रोगी की तरह मोहित या बेहोश हो जाता है, उसे किसी तरह का ज्ञान नहीं रहता, शराबी की तरह मतवाला होकर प्रलाप करता है, तब ये बडी प्रसन्न होती हैं। उस समय ये दया से काम न लेकर, उसे अपने हाव-भाव और नाजो-अदा दिखाकर औरभी तरसाती तथा अधमरा कर देती हैं। जब तक ये अपने आशिक से नहीं मिलतीं, तब तक वह बेचारा रात-दिन गम खाता, घबराता, सिसकता और आहें भरता है। मन में पछताता है कि, हाय मैंने क्यों दिल देकर आफत मोल ली। पर मुहब्बत में तो यह दशा होती ही है। किसी कवि ने कहा है —

न था मालूम उलफ़त में, कि गम खाना भी होता है।
जिगर की बेकली, और दिल का घबराना भी होता है।
सिसकना आह भी करना, अश्क लाना भी होता है।

तड़पना लोटना बेताब हो जाना भी होता है।
कफे अफसोस को मल मल के पछताना भी होता है।
किये पर अपने फिर आप ही दुख पाना भी होता है।

प्रेमी या आशिक हजारों तरहके दुःख और आफतें उठाता है, पर अन्त में यों कहकर सन्तोष करता है:—

हम तो हैं आशिक तेरे नाज उठाने वाले,
तुम से कम देखे हैं महबूब सताने वाले॥

शेष में जब ये सुन्दरियां सब तरह से अपने चाहने वाले का इमतिहान ले लेती हैं, तब कहीं इनका पत्थर-हृदय पसीजता है। उस वक्त यह उसे अपनी सेवा में कुबूल करतीं और उसके दिल को ठण्डा करती है। इस समय इनका शिकार पूरे तौर से इनके काबू में हो जाता है। जब ये उसे अपने अधीन पातीं और उसे हर तरह से मुती और फरमाँबर्दार देखती हैं, तब उसे ज़रा-ज़रा सी चूकों या गलतियों पर धमकातीं और घुड़कती है। संशयों का घर होने की वजह से, इनमें से बाज-बाज तो उसे, जरा देरसे घर आने पर ही, खूब डाँटती-डपटती है। कोई-कोई अपने शिकार को नितान्त अज्ञानावस्था में देखकर निपट निरंकुश हो जाती हैं और उससे ठीक गुलाम की तरह काम लेती है। इतना ही नहीं, उसे इनको फरमायशें भी पूरी करनी पड़ती है। उनके पूरा करने में उसे बड़ी-बड़ी जिल्लतें उठानी होती है। सामने रहने पर ये इस तरह नाच नचातीं और

नाना प्रकार के कष्ट देती है। आँखो को ओझल रहने पर भी खैर नहीं। इनकी जादू-भरी आँखो से उन्मत्त हुआ पुरुष इनकी वियोगाग्नि मे, बुरी तरह तड़प-तड़प कर भस्म होता है। बहुत लिखने से क्या—इनकी रसीली, मदमाती और नशीली आँखोंके मारे हुए को, किसी अवस्थामे भी, सुख-शान्ति नहीं मिलती। कवि ने ठीक ही कहा है कि, इन नागनियो के चञ्चल नेत्र जिसके हृदय मे प्रवेश कर जाते है, उसको खैर नहीं।

सब तरह से दुःख देनेवाली, सन्निपातज्वर की तरह मोह, प्रलाप, प्रमाद, मूर्च्छा और निर्लज्जता प्रभृति पैदा करने वाली कामिनियो को जो सुखवल्लरी समझते हैं, वे यदि बुद्धिमान है तो मूर्ख कौन है? वे ठीक अपथ्य सेवन करके रोग मोल लेने वालो की तरह हैं। हाँ, जो लोक-परलोक की परवा नही करते, जो इस जन्म के बाद और जन्म नहीं मानते, जो इस जगत् में आकर इस जगत् के सुख भोगना ही अपने जीवन का लक्ष्य समझते है, उनके लिये ये सुन्दरियाँ, अनेक कष्ट देने वाली होने पर भी, परमानन्ददायिनी है पर जिन्हे पुनर्जन्म मे विश्वास है, जिन्हे बारम्बार का जन्म-मरण बुरा मालूम होता है, जिन्हें सच्चे और नित्य सुख की दरकार है, उन्हे इन मोहिनी पर काली नागिनो से बचना चाहिये। इनके काटे हुए पुरुष को बारम्बार संसार-बन्धन मे बँधना होता है। स्त्री-सेवक से भगवान् भी सदा दूर रहते है।

यह सलाह हमने ससार से उदासीनो को दी है, ममाग-सक्तो को नहीं। दुनियादारो को जानना चहिये कि, स्त्रियो से सुख और दु:ख दोनो ही होते है। यदि उन की वजह से पुरुष को अनन्त दु:ख उठाने पडते है, तो स्वर्गीय सुख भी उन से ही मिलते है। फ्रैञ्चो में एक कहावत है—"Women, money and wine have their blessing and their bane" स्त्री सम्पत्ति और सुरा में सुख और दु:ख दोनो ही है। एमिएल महाशय कहते है—"Woman is at once the delight and terror of man" स्त्री. पुरुष के हर्ष औ भय दोनो का हेतु है।

सोरठा।

मोह प्रलाप प्रमाद, ज्ञाननाश निर्लज्जता।
शोक कलेश विषाद, कहा न कर हिय घुस त्रिया ? ॥२१॥

सार---स्त्रियाँ जिसके हृदय में प्रवेश कर जाती हैं, उसकी अवस्था सन्निपात-रोगी की सी हो जाती है। ये अपने चाहनेवाले को मजनूँ की तरह खब्तुलहवास करके, क्या-क्या कष्ट नहीं देतीं ? उसे जीतेजी मदारी के वन्दर की तरह नचातीं और मरने पर नरकमें पहुँचाती हैं।

21. *What could not the beautiful-eyed woman do, by piercing the frail heart of a man, that women who fascinates him, intoxicates him, vexes him, takes him to task, gives him the pleasures of enjoying her andputs him to sorrow by her separation*

—:—

विश्रम्य विश्रम्य वनद्रुमाणां छायासु तन्वी-विचचार काचित् ।
स्तनोत्तरीयेण करोद्धृतेन निवारयन्ती शशिनो मयूखान ॥२२॥

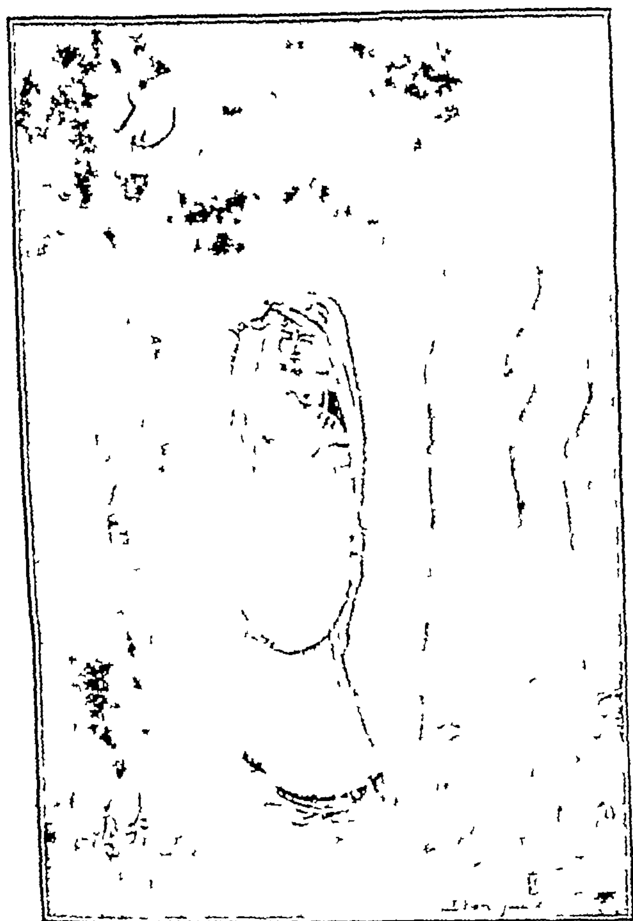
वन के वृक्षो की छाया में वारम्बार विश्राम करती हुई, वह विरहिणी स्त्री, अपने कोमल शरीर की रक्षा के लिए, अपना आँचल हाथ मे उठा, उससे चन्द्रमा की किरणो को रोकती हुई घूम रही है ॥२२॥

खुलासा—वह विरहिणी स्त्री इतनी नाज़ुक है, कि सूरज तो सूरज, चन्द्रमा की शीतल किरणों की रोशनी को भी बर्दाश्त नहीं कर सकती। चन्द्र-किरणों से उसके नाज़ुक और सुकुमार शरीर को कष्ट न हो, इसीलिये उसने अपना आँचल मुँह के सामने कर रक्खा है। नज़ाकत के मारे ही वह ज़रा चलती है और फिर वृक्षों की छाया में सुस्ताने लगती है। इस नज़ाकत का क्या ठिकाना है ?

कवियों की महिमा अपार है। वे लोग जिस किसी की तारीफ



वन के पत्तों की छाया में विश्राम करती हुई विरहिणी स्त्री, अपने नाजुक शरीर की रक्षा के लिये, अपना आंचल हाथ में उठा, उससे चन्द्रमा की किरणों को रोकती हुई वन में जारही है। यह स्त्री पर-पुरुषरता अभिसारिका-नायिका है। अपने यार से मिलने जारही है। यह इतनी नाजुक है, कि चन्द्रमा की शीतल किरणों को भी बरदाश्त नहीं कर सकती। [पृष्ठ ५८]



वन के घनों की छाया में विश्राम करती हुई विरहिणी स्त्री, अपने नाजुक शरीर की रक्षा के लिये अपना आँचल हाथ में उठा, उससे चन्द्रमा की किरणों को रोकती हुई वन में जारही है। यह स्त्री पर-पुरुषरता अभिसारिका-नायिका है। अपने यार से मिलने जारही है। यह इतनी नाजुक है कि चन्द्रमा की शीतल किरणों को भी बरदाश्त नहीं कर सकती। [पृष्ठ ४८]

करने लगते हैं, उसे चरम को पहुँचा देते हैं। महाकवि मीर किसी नाज़नी की नज़ाकत पर क्या खूब कहते हैं —

लपेटे जो चोटी पै, फूलों के हार।
नजाकत से दोहरी कमर होगई॥

वह नाज़नी इतनी नाज़क थी, कि उसने अपनी चोटी पर जो फूलों के हार लपेटे, तो मारे बोझ के उस की कमर बल खा गई।

महाराजा भर्तृहरि की विरहिणी नायिका तो चन्द्रमा की शीतल किरणों को नहीं सह सकती और महाकवि मीरकी नायिका की कमर चोटी पर फूलों का हार लपेटने से ही दोहरी हो गई। गज़ब की शायरी है! नज़ाकत और सुकुमारता की हद हो गयी!!

पण्डितेन्द्र महाराज जगन्नाथ को तो अपनी नायिकाकी नज़ाकत की तारीफ करने के लिये कोई उपमाही नहीं मिलती। आप कहते हैं —

नितरां परुषा सरोजमाला, न मृणालिनि विचार पेशलानि।
यदि कोमलता तवांगकानामथ, का नाम कथापि पल्लवानाम्॥

हे भामिनी! हम तेरे शरीर की कोमलता की तुलना किस पदार्थ से करें, जब कि सरोज-माल भी तेरी कोमलता के आगे कठोर मालूम होती है? कमलनाल की कोमलता का तो विचार करना ही फिज़ूल है। जब कमलके कोमल पुष्पोंकी यह हालत

और परले सिरे की नाज़ुक-बदन है। उसके प्रत्येक काम से उसकी नज़ाकत झलकती है।

22 *A woman frequently resting under the shade of trees in the forest, roams about, raising with her hands the cloth covering her breast to prevent the rays of moon.*

—०—

अदर्शने दर्शनमात्रकामा दृष्ट्वा परिष्वंगरसैकलोलाः।
आलिङ्गितायां पुनरायताक्ष्यामाशास्महे विग्रहयोरभेदम्॥२३॥

जब तक हम विशाल-नयनी कामिनी को नहीं देखते, तब तक तो उसे देखने ही की इच्छा रहती है, दर्शन नसीब हो जाने पर, उसे आलिङ्गन करने की लालसा बलवती होती है। जब आलिङ्गन भी हो जाता है, तब तो यह इच्छा होती है कि, यह कामिनी हमारे शरीर से अलग ही न हो—हमारा दोनों का शरीर एक हो जाय।

खुलासा—प्राय. सभी जानते हैं कि, एक बार किसी सुन्दरी को देख लेने या उसकी रूपमाधुरीकी चर्चा सुन लेने पर, तबियत यही चाहती है कि, उसके दर्शन-भर हो जायँ। जब सौभाग्य से उसके दर्शन हो जाते हैं, तब तृष्णा औरभी बढ़ती है। दर्शन के बाद उसे शरीर से चिपटाने की लालसा होती है। ज्योंही हम उसे अपने शरीर से चिपटाते हैं, कि फिर उससे अलग होने को मन नहीं चाहता—दिल कहता है कि,परमात्मा हमारे और इसके शरीर को कभी अलग न करें। हम दोनों का शरीर एक हो जाय।

वैराग्य-पत्र ।

विषयो का यही हाल है । ज्यों ज्यों हमारी इच्छायें पूरी होती हैं, त्यों त्यो वे और बढती हैं , इसलिये विषय-विष से बचने के लिये, मनुष्य को विषयों का ध्यान ही न करना चाहिये । असल में विषयों का ध्यान ही सारे अनर्थों का मूल है । अगर मन द्वारा विषयों का ध्यान ही न किया जाय, तो विषयों में प्रीति ही क्यों हो ? जब विषयों से प्रीति ही न होगी, तब कोई भी अनर्थ हो न सकेगा ।

स्त्री को एक बार देख लेने पर, उसे बार बार देखने को मन चाहता है । बस, यहीं से सिर पर भूत सवार हो जाता है । इस लिये जिनको जन्म-मरण के जजाल से बचना हो, जिनको दुर्लभ मोक्ष पाद लाभ करना हो, जिनको अक्षय सुख भोगना हो, वे ऐसे निर्जन वन में जाकर रहें, जहाँ इन ललित ललनाओं के दर्शन ही न हों । जब ये मोहिनी दीखेंगी ही नही, तो मन कैसे चलेगा ? न होगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी ।

छप्पय ।

बिन देखे मन होय, चाय कैसे कर देखैं ।
देखे ते चित होय, अग आलिंगन सेषैं ॥
आलिंगन ते होत, याहि तनमय कर राखै

जैसे जल अरु दूध, एक रस त्यों अभिलाषे ॥
मिल रहे तऊ मिलवो चहत, कहा नाम या विरह को।
वरन्यो न जात अद्भुत चरित, प्रेम-पाठकी गिरह को ॥२३॥

सार—नवयुवती कामिनी के बग़ल में आने पर, उसे कोई भी कामी पुरुष, क्षणभर को भी छोड़ना नहीं चाहता।

23 *So long as I do not see her I desire to see her, but having seen her, I long to embrace her and after having embraced her I desire that there may not be separation from her, whose eyes become extended at the time of embraced union*

—:o:—

मालती शिरसि जृम्भणोन्मुखी चन्दनं वपुषि कुंकुमान्वितम्।
वक्षसि प्रियतमा मनोहरा स्वर्ग एव परिशिष्ट आगतः ॥२४॥

अधखिले मालती के सुगन्धित फूलों की माला गले में पड़ी हो, केशर-मिला चन्दन शरीरमें लगा हो और हृदयहारिणी प्राण-प्यारी छाती से चिपटी हो, तो समझ लो कि, स्वर्ग का शेष सुख यहीं मिल गया।

खुलासा—गले में खिलने ही वाले मालती के फूलों की माला पहनना, केसर और चन्दन शरीर में लगाना और मनोहर प्यारी को छाती से लगाना—स्वर्ग-सुख है। जिन्हें इस पाप-ताप-पूर्ण

ससार में यह सुख प्राप्त हो, उनके लिये यहीं स्वर्ग है। स्वग में इससे अधिक और कुछ नहीं है। पण्डितराज जगन्नाथ महोदय कहते हैं —

विधाय सा मद्वदनानुकूलं कपोलमूलं हृदये शयाना।
तन्वी तदानीमतुला बलारेः साम्राज्यलक्ष्मीमधरीचकार॥

मेरी छाती पर सोनेवाली नाजनीने जब अपनी चिबुक—ठोडी मेरे मुँह पर, जहाँ वह रक्खी जानी चाहिये थी वहीं रक्खी, तब महेन्द्र की अतुल राज्यलक्ष्मी का सुख भी मुझे तुच्छ प्रतीत होने लगा।

निश्चय ही ससारियों के लिये ऐश-आराम के ऐसे सामानों का मयस्सर होना,—स्वर्ग-सुख उपभोग करना है। इस बात की सचाई को वे ही समझ सकते हैं, जो चतुर और कामशास्त्र-विशारद रसिक हैं। नपुंसकों को इस आनन्द का हाल क्या मालूम?

वैराग्य-पक्ष।

अपनी-अपनी रुचि अलग-अलग है। सब की इच्छायें एक दूसरे से भिन्न हैं। एक जिस चीजको अच्छी समझता है, दूसरा उसी को बुरी समझता है। जो चीज जिसको प्यारी न हो, वह कैसी ही सुन्दर और रसीली क्यो न हो, उसे अच्छी नहीं लगती।

अँगरेजी में भी एक कहावत है—"Fair is not fair, but

that which pleaseth" सुन्दर सुन्दर नहीं है, किन्तु वही सुन्दर है, जो अपने मन को भावे।

चन्द्रमा सब को प्यारा लगता है, पर कमलिनियों और विरही जनों को अप्रिय लगता है। संसार का यही हाल है। रसिक पुरुष मालती के फूलों की माला पहनने, केशर चन्दन से अङ्गराग करने और प्राणप्यारियों को छाती से लगाने को ही स्वर्ग-सुख समझते हैं। और कोई-कोई रसिक ऐसे भी हैं, जो इस सुख के आगे स्वर्गकी भी सारी सम्पदाको तुच्छ समझते हैं। एक ओर ऐसे लोग हैं, तो दूसरी ओर कुछ ऐसे भी हैं, जो इन सभी सुखों को मिथ्या, अनित्य और परिणाम में शोक, मोह, रोग और नरक का दाता समझते हैं। जिन नवयौवनाओं को कामी अबला समझते हैं, उन्हें वे सबला समझते हैं। जिन्हें कामी कोमलाङ्गी कहते हैं, उन्हें वे वज्राङ्गी कहते हैं। जिन्हें कामी निर्मला और रूपमाधुरी की खान समझते हैं, उन्हें वे कुमला और घृणित गन्दी चीजों का पिटारा समझते हैं। कामी पुरुष स्त्रियोंका ही ध्यान करना पसन्द करते हैं, पर वे ब्रह्मका ध्यान करनाही अच्छा समझते हैं। उनका कहना है, कामियों के भोग-विलास में जो सुख है, वह अनित्य और परिणाम में घोर दुःखों के देनेवाला है, पर ब्रह्म-विचार में लीन होने का सुख नित्य और परिणाम में कल्याण करने वाला है। तात्पर्य यह है, कामियों को ही सुन्दरियों में स्वर्ग-सुख प्रतीत होता है विरागियों को तो इनमें नरक-दुःख किन्तु ब्रह्म-विचार में वर्णनातीत परम सुख मालूम होता है।

दोहा।

केसर सों ऑंगिया सनी, बनी नयन की नोक।
मिली प्राणप्यारी मनों, घर आयो सुर लोक ॥२४॥

सार खूबरू और कमसिन नाज़नी को छाती से लगानेमें जो मज़ा है, वहिश्त मे उससे बढकर मज़ा नहीं।

24 *If there be on the head a garland of Malti flowers which are about to blossom, if sandal mixed with saffron is besmeared on the body and the beloved beautiful lady is embraced on the bosom, then I take this as the pleasure of heaven*

—*—

प्राङ्मेमति मनागमानितगुणं जाताभिलाषं तत·
सव्रीडं तदनु श्लथोद्यतमनुप्रत्यस्तधैर्यं पुनः॥
प्रेमार्द्रस्पृहणीयनिर्भररहः क्रीडाप्रगल्भाततो
निःशंकाङ्गविकर्षणादिकसुखं रम्यं कुलस्त्रीरतम् ॥२५॥

पहले-पहल तो "न न" कहती* है। इसके बाद थोडी-थोडी अभिलाषा करती है। इसके पीछे लजाती हुई अङ्गो को

*जौन पाल महोदय कहते हैं—Women are shy of nothing so much as the little word "Yes" at least they say it only after they have said "No" स्त्रियों को "हाँ" कहने में जितनी लज्जा मालूम होती है, उतनी और किसी दूसरी बातमें नहीं। कम से कम वे "नहीं" कह चुकने पर ही "हाँ" कहती हैं।

ढीला कर देती है और फिर अधीर हो, प्रेम के रस में शराबोर हो जाती है। इसके भी पीछे, एकान्त क्रीड़ाकी इच्छा करती है और भोग-विलास में तरह-तरह की चातुरी दिखाती हुई, निःशङ्क होकर मर्दन चुम्बनादि से असाधारण सुख देती है। ये सब मनोहर गुण कुलबालाओं में ही होते है, इसलिये कुलकामिनियों के साथ ही रमण करना चाहिये ॥२५

इस श्लोक में, महाराजा भर्तृहरि ने, नवोढ़ा—नई ब्याही हुई बहू से लेकर, प्रौढा—पूर्ण युवती और अधेड़ अवस्था तक की स्त्री के हाव-भाव और भोग-विलास के सुखों का वर्णन बडी ही खूबी से किया है।

नई ब्याही हुई बहू पुरुष के साथ समागम होते समय भय के मारे "न न" कहती है, अथवा अधिक सामर्थ्य न होने के कारण, "अब नहीं" अब नहीं" कहती है। बुद्धिमान् कामियोंको, इन "न न" या "नहीं नहीं" के शब्दों में विचित्र प्रकार का रस और मज़ा मालूम होता है। उस मजे की बात भुक्तभोगी, जानते हुए भी, जबान या क़लम से लिखकर बता नहीं सकते। रसिक-शिरोमणि पण्डितराज जगन्नाथ कहते हैं—

श्रुतिशतमपि भूय शीलित भारतं वा
विरचयति तथा नो हत सन्तापशान्तिम्।
अपि सपदि यथायं केलिविश्रान्तकान्ता
वदनकमल वलात्कान्ति सान्द्रोनकारः ॥

काम-क्रीडा से थकी हुई स्त्री के मुखकमल से निकला हुआ रसमय "नकार" "नहीं-नहीं" कहना, जिस तरह पुरुष के सन्ताप को शीघ्र ही हर लेता है, उस तरह सैकड़ों श्रुतियों और महाभारत प्रभृति पुराणोंका अध्ययन और मनन भी नहीं कर सकता।

दूसरी अवस्था में "न न" कहते-कहते, फिर कामिनी की स्वय इच्छा होती है। इच्छा होने पर, वह लज्जा का भाव भी दिखाती है और अपने अङ्गों को ढीला भी कर देती है।

तीसरी अवस्था में जब वह पूर्ण युवती हो जाती है, उसकी उम्र कोई २५।३० साल या इससे अधिक हो जाती है, तब उसे कन्दर्प सुख का अनुभव हो जाता है और साथ ही उसका डर भी जाता रहता है। उस वक्त वह प्रेम-रसमें शराबोर होकर अधीर हो जाती है और एकान्त स्थल में रति-केलि करने की इच्छा प्रकट करती है। उस समय कामकलानिपुण अनुभवी और निर्भय होने से, वह निर्लज्ज होकर, नाना प्रकार के आसन-भेदों और चुम्बन आदि से ऐसा सुख देती है कि. उसे गूंगे के सुपने की तरह, जबान या क़लम से बताना कठिन है।

ऐसा अपूर्व स्वर्गीय सम्भोग-सुख सलज्ज कुलबालाओं से ही मिल सकता है, वारवधुओं से नहीं। निर्लज्ज और निर्भय वाराङ्गनाओं में ये आनन्द कहाँ? क्योंकि कुलबालाओं में लज्जा है, भय है और प्रेम है, पर वारवधुओं में इन तीनों में से एक भी नहीं। कुलबधुएँ जिस आनन्द और मजे के साथ पुरुष की काम-पीड़ा और सन्ताप को हर सकती हैं, उस तरह वारवधू नहीं।

छप्पय ।

ना ना कहि गुण प्रगट करति, अभिलाष लाज जुत ।
शिथिल होय घर धीर, प्रेम की इच्छा करि उत ।
निर्भय रस को लेत, सेज—रण—खेतहि माँहीं ।
क्रीडा माँहिं प्रवीण, नारि सुखिया मन माँहीं ।
यह सुरत माँझ अतिही सुरत, करत हरत चितगाति करै ।
कुलवधू कामिनी केलि कर, कलह कामकी सब हरैं ॥२५

25 A lady born of a noble family gives the best pleasures of sexual intercourse—Her qualification is that she at first refuses intercourse and shortly afterwords becomes herself desirous of intercourse, then she shyly allows herself to approach loosely, gradually she loses patience, and with eager and amorous looks shows her cleverness in secret movements and then she freely gives the pleasure of allowing parts of her body to be pulled and enjoyed

—※—

उरसि निपतितानां स्रस्तधम्मिल्लकानां
मुकुलितनयनानां किञ्चिदुन्मीलितानाम् ॥
सुरतजनितखेदस्विन्नगण्डस्थलीना —
मधरमधु वधूनां भाग्यवन्तः पिबन्ति ॥२६॥

छाती पर लेटी हुई हैं, बाल खुल रहे हैं, आधे नेत्र बन्द हो रहे हैं और मैथुन के परिश्रमसे आये हुए पसीने गालो पर

झलक रहे हैं,—ऐसी स्त्रियों के अधरामृत को भाग्यवान् लोग ही पीते हैं ॥२६॥

खुलासा—स्त्री छाती पर पड़ी हो, उसके केश खुल रहे हों, आधी पलकें खुली हों और आधी बन्द हों, गुलाबी गालोंपर रति-श्रम से पैदा हुए पसीने आ रहे हों—इस दशा में कोई-कोई भाग्य-शाली ही अपनी प्राणप्यारी के नीचले ओंठ का रस पान करते हैं।

छप्पय

खुले केश चहुँ ओर, फैल फूलन की वरसत ।
सद मद छा के नैन, दुरत उघरत से दरसत ।
सुरत खेद के स्वेद, कलित सुन्दर कपोल गहि ।
करत अधर रस पान, परत अमृत समान लहि ॥
ते धन्य धन्य सुकृती पुरुष, जे ऐसे उरझे रहत ।
हित भरे रुप यौवन भरे, दम्पति सुख सम्पति लहत ॥२६॥

26 *Fortunate must be the man who enjoys the honey of the lips of a lady who is lying on his bosom, whose scented hairs are unfastened, whose eyes are half-shut and whose cheeks shine with drops of perspiration after the exertion of sexual intercourse*

—※—

आमीलितनयनानां यः सुरतरसोऽनुसंविदं कुरुते ॥
मिथनैर्मिथोवधारितमवितथमिदमेवकामनिर्बहणम् ॥२७॥

आलस्यपूर्ण नेत्रों वाली स्त्रियों को काम से तृप्ति करना,

स्त्री-पुरुष दोनो का परस्पर कामपूजन है, जिसको काम-क्रीड़ा करनेवाले दोनो स्त्री-पुरुष ही जानते हैं ॥२७॥

खुलासा—काम-मद की अधिकता के कारण जिन स्त्रियों की आँखों में आलस्य भरा है, इसलिये वे ज़रा-ज़रा खुल रही हैं। ऐसी स्त्रियों की काम से तृप्ति करना पुरुष का परम पुरुषार्थ है। ऐसी स्त्री के साथ सम्भोग करने में जो सुख मिलता है, उस सुख की तुलना नहीं। इस सुख का हाल काम क्रीड़ा करने वाले दोनों स्त्री-पुरुष ही जानते हैं।

स्त्री के नेत्रों का भारी सा हो जाना, आधे नेत्रों का खुला रहना और आधे नेत्रों का बन्द रहना—स्त्री के पूर्णतया कामोन्मत्त होने के चिह्न हैं। यह समय और अवस्था ही काम-क्रीड़ा के लिये उचित है। ऐसी कामोन्मत्त नारी को जो चतुर पुरुष सन्तुष्ट करता है, वह भाग्यवान् है और स्त्री भी ऐसे पुरुष की दासी हो जाती है। अगर स्त्री अपने-आप ऐसी कामोन्मत्ता नहीं होती, तो कोक-कलाविद् चतुर रसिक पुरुष चुम्बन मर्दन आदि तरकीबों से उसे काम-मद से मतवाली कर लेते हैं।

दोहा।

मृगनैनी आलस भरी, सुरत सेज सुख साज।
पूजहिं दम्पति काम मिल, करहिं सुमंगल काज ॥२७॥

27 *The pleasure arising out of sexual intercourse with a lady with her eyes partly closed is known to both man and woman as the result of mutual intercourse and is their duty.*

—※—

इदमनुचितमक्रमश्च पुंसां
यदिह जरास्वपि मान्मथा विकारा ॥
यदपि च न कृतं नितम्बिनीनां
स्तनपतनावधि जीवितं रतं वा ॥२८॥

विधाता ने दो बातें बड़ी ही अनुचित की है—(१) पुरुषों में, अत्यन्त बुढापा होने पर भी, काम-विकार का होना. (२) स्त्रियों का स्तन गिर जाने पर भी जीवित रहना और काम-चेष्टा करना।

खुलासा—ब्रह्मा को उचित था कि, वह बूढ़ों में काम-विकार न प्रकट होने देता और स्त्रियों को तभी तक जीवित रखता, जब तक कि उनके कुच-युगल सुन्दर सघन और कठोर रहते। बुढापे में काम-विकार का प्रकट होना और स्तनो के सुकड़ जाने, गिर जाने अथवा थैलों की तरह लटक जाने पर भी स्त्रियो का जिन्दा रहना और काम चेष्टा करना—दोनों ही विडम्बनामात्र हैं। जवानी जाते ही पुरुष की और स्तन गिरते ही स्त्री की काम-चेष्टा रसिको के मनमें खटकती है।

जब तक स्त्री के कुच छोटी-छोटी नारङ्गियों, अथवा अनारों या कच्चे-कच्चे सेवों की तरह रहते हैं, तभी तक स्त्री-भोगमें आनन्द है, स्तन गिर जाने पर मजा नहीं। किसी ने इन कई बातो के लिये ब्रह्मा को दोषी ठहराया है। कहा है—

शशनि खलुकलङ्क कण्टक पद्मनाले।
युवतिकुचनिपात पक्वता केशजाले ॥

जलधिजलमपेय पण्डिते निर्धनत्व ।
वयसि धनविवेको निर्विवेको विधाता ॥

चन्द्रमा में कलङ्क, पद्मनाल में काँटे, युवतियों के स्तनो का गिरना, बालों का पकना, समुद्र के जल का खारी होना, पण्डितों का निर्धन होना और, बुढ़ापे में धन की चिन्ता—ये सब ब्रह्मा की मतिहीनता के परिचायक हैं ।

दोहा ।

विधिना द्वै अनुचित करी, वृद्ध नरन तन काम ।
कुच दरकतहू जगतमें, जीवत राखी बाम ॥२८॥

सार—स्त्री-सम्भोग का आनन्द पुरुष की जवानी में और स्त्री के कुचों के कठोर और सघन बने रहने तक ही है ।

28 It is very improper and contradictory that males are subject to passions even in old age and it is also very improper and contradictory that females were not made to live and to have sexual intercourse only up to the time when their breasts are protuberant.

—※—

एतत्कामफलं लोके यद्द्वयोरेकचित्तता ।
अन्यचित्तकृते कामे शवयोरिव सङ्गम. ॥२९॥

समागम के समय स्त्री-पुरुषो का एकचित्त हो जाना ही काम का फल है। यदि समागम में दोनो का चित्त एक न हो, तो वह समागम—समागम नहीं, वह तो मृतकों का सा समागम है॥२८॥

खुलासा—सुरत के समय सुरत में और समाधि के समय समाधि में यदि मन लीन न हो जाय, चित्त उन्हीं में ग़र्क़ न हो जाय, तो उस सुरत और समाधि से कोई लाभ नहीं। स्त्री-पुरुष के समागम के समय, दोनोंका एक दिल हो जाना परमावश्यक है। दोनों का दिल एक हुए बिना कुछ आनन्द नहीं। यदि एक का दिल कहीं और दूसरे का कहीं हो और सङ्गम किया जाय, तो उस सङ्गम को स्त्री-पुरुषों का सङ्गम नहीं, बल्कि दो लाशों का सङ्गम कह सकते हैं।

समागमके समय यदि दोनों में से किसी का भी चित्त समागम के लिये उत्कण्ठित न हो, तो समागम न करना चाहिये। वैसे समागम से आनन्द नहीं आता और वृथा बल क्षीण होता है। अगर एक का दिल हो और दूसरे का न हो, तो जिसका दिल हो उसे दूसरे का काम जगाना उचित है। जब दोनों ही कामोन्मत्त होंगे, तब अवश्य दोनों ही का दिल एक हो जायगा। अगर चित्त उद्विग्न हो, मन मलिन हो और उद्विग्नता या मलिनता दूर न हो सकती हो, तो समागम न करना ही अच्छा है।

समागम के समय दोनोंके दिलों का एक होना बहुत जरूरी है, इसी गरज से रतिशास्त्र के ज्ञाताओं ने स्त्री-पुरुषों के परस्पर काम जगाने की अनेकों तरकीबें लिखी हैं, क्योंकि बिना परस्पर काम जगाये कोई लाभ नहीं। स्त्रीके किस अङ्गमें किस दिन काम रहता

है, अथवा स्त्री काममद से किस वक्त या किस ऋतुमें मतवाली होती है और वह काम किस तरह जगाया जाता है,—ये बातें चतुर पुरुषों को जाननी चाहियें। काम जगाने की सब से अच्छी विधि चुम्बन करना अथवा स्तनोंके अगले भागों—बीठनियों, काली-काली घुण्डियोंको धीरे-धीरे मलना है। चुम्बन करते ही और बीठनियोंके धीरे-धीरे मलते ही, स्त्री के नेत्र लाल हो जाते हैं, साँस गरम होकर बड़े जोरसे चलने लगता है और स्त्री सिसकियाँ भरने लगती है। जब स्त्री सिसकियाँ भरने लगे और शर्म छोड़कर पुरुषसे छेड़-छाड़ करे, तब समझना चाहिये कि, काम चैतन्य हो गया। वही समय मैथुन के लिये उत्तम है और वैसे समय में ही गर्भ रह सकता है। जो पुरुष इस तरह काम चैतन्य करके काम-क्रीड़ा करता है, स्त्री उसकी क्रीत-दासी हो जाती है। देखते हैं, बैल, ऊँट, घोड़े, गधे प्रभृति पशु भी पहले चाट-चूमकर सम्भोग करते हैं, तब मनुष्योंमें तो उनसे कुछ विशेषता होनी ही चाहिये। परमात्मा ने उन्हें बुद्धि दी है और अनुभवी पुरुषों ने इस विषय पर "अनङ्ग-रङ्ग" "कोक-शास्त्र" लज्जतुल-निशा प्रभृति अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। सन्तरे को बन्दर बिना छीले खाता है और चतुर मनुष्य उसे छीलकर और उसका जीरा निकालकर खाता है। प्रत्येक कामके करने की कुछ खास-खास तरकीबें हैं। तरकीबों के साथ जो आनन्द आता है, वह बिना तरकीब के नहीं आता। *

---

* ये सब कोक सम्बन्धी विषय अगर देखने का शौक हो, तो आप हमारी लिखी "काम्यरत्न" देखें। मूल्य ३) सजिल्द का ३॥)

दोहा।

नारि समागम कामफल, दुहू नहि चित इक होय।
जो कहूँ होय विभिन्नता, शव -संगम-सम जोय ॥२९॥

सार—सम्भोग-कालमें, स्त्री-पुरुष के एक-दिल होनेमें ही आनन्द है।

29 It is only when both the man and the woman are of the same mind that the sexual pleasures are the greatest If their minds are diverted, then the intercourse is like that of inanimate bodies

—※—

प्रणयमधुराः प्रेमोद्गाढा रसादलसास्तथा
भणितिमधुरा मुग्धप्रायाः प्रकाशितसंमदा॰ ॥
प्रकृतिसुभगा विश्रम्भार्हाः स्मरोदयदायिनो
रहसि किमपि स्वैरालापा हरन्ति मृगीदृशाम् ॥३०॥

मृगनयनी कामिनियो के प्रणय-प्रीति से मधुर, प्रेम-रस से पगे, काम की अधिकता से मन्दे, सुनने में आनन्दप्रद, प्राय अस्पष्ट और समझ मे न आने योग्य, सहज-सुन्दर, विश्वासयोग्य और कामोद्दीपन करनेवाले वचन, यदि स्वच्छन्दतापूर्वक एकान्त में कहे जायँ, तो, निश्चय ही, सुननेवाले के मन को हर लेते हैं ॥३०॥

खुलासा—कुरङ्गनयनी तरुणियों की प्रेम रस से पगी हुई

मधुर-मधुर बातें रसिक पुरुषों के कानों मे अमृत सा ढालती हैं। मुर्झाये हुए पुष्प-रूपी प्राणों को खिलाती हैं, सारी इन्द्रियों को प्रसन्न करतीं और मन में रसायन का काम करती हैं। लेकिन जब वे एकान्त-स्थल मे स्वच्छन्दतापूर्वक कही जाती हैं, तब तो औरभी गजब करती हैं। जिनसे ये बातें कही जाती हैं, वे बात कहनेवालियों के क्रीत-दास ही हो जाते हैं।

दोहा।

प्रणय मधुर आलस भरे, सरस सनेह समेत॥
मृगनैनिन के ये वचन, हरत चित्त कों लेत॥३०॥

सार—सुनयनाओं की मधुर-मधुर बातों में जादू की सी शक्ति होती है। उनको अमृत भरी बातों पर कामी पुरुष लट्टू हो जाते हैं।

30 Ladies with beautiful eyes always attract the mind by their unrestrained conversation which is sweet because of softness, full of love, very pleasing to the ear on account of delicacy, gives rise to joy, is naturally soothing and confiding and which arouses passions

—※—

आवासः क्रियतां गाङ्गे पापहारिणि वारिणि।
स्तनमध्ये तरुण्या वा मनोहारिणि हारिणि॥३१॥

या तो पाप-ताप नाशनी गङ्गा के किनारों पर ही बसना

चाहिये, या मनोहर हार पहने हुए तरुणी स्त्रियों के स्तनों के मध्य में ही बसना चाहिये ॥२१॥

खुलासा—दो में से एक काम करना चाहिये—या तो पाप-हारिणी गङ्गा के किनारे बैठकर शङ्कर का भजन करना चाहिये या मोतियों के हार धारण करनेवाली हृदयहारिणी कामिनियों के कठोर कुच सेवन करने चाहियें।

इस जगत् में, कामी पुरुषों के लिये नवयुवतियों के कठोर कुच-युगल और सघन स्थूल जङ्घाओं से बढ़कर सुखदायी और दूसरा पदार्थ नहीं है, इसलिये वे उन्हीं का सेवन कर अपना मनुष्य-जन्म सुफल करें। पर जिन्हें इस संसार की असारता और चञ्चलता का ज्ञान हो गया है, जिन्हें रूप-यौवन की अनित्यता का हाल मालूम हो गया है और इसलिये कामिनियोंसे घृणा हो गई है, उन्हें सब द्विविधा त्याग, कहीं निर्जन और रमणीक स्थानमें, गङ्गाके तट पर पर्णकुटी बना, शिव-शिव रटना चाहिये। कामिनियों के भोगने से यहाँ अपूर्व सुख की प्राप्ति होगी, पर परलोक में दुःखों का सामना करना पड़ेगा, मगर सब को तज, गङ्गा किनारे जा, हर भजन करने से यहाँ भी सुख-शान्ति मिलेगी और वहाँ भी। पाठकों के समक्ष दोनों राहें हैं। अब उन्हें जौनसी राह पसन्द हो उसे ही चुन लें। त्रिशङ्कु की तरह बीच में लटकना और—

इधर के रहे न उधर के रहे।
ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम॥

वाली कहावत चरितार्थ करना भला नहीं।

दोहा।

वास कीजिये गंग तट, पाप निवारत वारि।
कै कामिनि कुच युगल को, सेवन करहु विचारि ॥३१॥

सार—गङ्गा-तट पर बसना और कामिनियों के कठोर कुचों का सेवन करना—ये दो ही काम जगत् में मुख्य हैं। विचारवान विचारकर, इनमें से किसी एक को चुन लें।

31. *Let one take rest either on the bank of the river Ganges whose water clears away the sin or between the breasts of a woman which are very attracting and where the breast-chain is lying*

—*—

प्रियपुरतो युवतीनां तावत्पदमातनोतु हृदि मानः।
भवति न यावच्चंदनतरुसुरभि मॆधुसुनिर्मलः पवनः ॥३२॥

मानिनी कामिनियोंके हृदयों में अपने प्यारों के प्रति मान तभी तक ठहरता है, जब तक चन्दन के वृक्षों की सुगन्धि से पूर्ण मलयाचल का वायु नहीं चलता।

खुलासा—मानिनी के मन में उसी समय तक मान रहता है, और उसी समय तक उसकी भृकुटियाँ टेढ़ी रहती हैं, जब तक कि चन्दन के वृक्षों की सुगन्धि से मिला हुआ वायु उनके कोमल शरीरों में नहीं लगता।

आम की मनोहर मञ्जरियाँ, सुविमल चन्द्रमा, कोकिल, भौंरे

और मलय-पवन तथा वसन्त—ये सब कामदेव के साथी और उसके अस्त्र-शस्त्र हैं। वह इन्हीं से त्रिलोकी को वश में करता है।

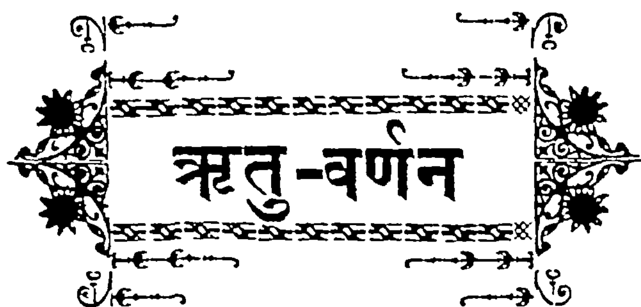
मानिनी कैसी ही कठोर क्यों न हो, किसी तरह मनाये न मननी हो, तोभी वह कोयल के कुहुकने, मलयपवनके चलने या घटाओंके छा जानेसे शीघ्र ही मान छोड़,अपने प्रीतमकी गोदमें आ जाती है। जो कामिनी पुरुषकी अनेक तरहकी खुशामदोंसे भी राजी न होती हो, वह मलयपवन प्रभृतिकी मददसे सहजमें राज़ी हो जाती है। कवि ने ठीक कहा है कि, मानिनी का मान तभी तक है, जब तक मलयाचल की हवा नहीं चलती। उसके चलते ही मानिनी आप खुशामद करने लगती है, क्योंकि वसन्त में मलयाचल की ओरकी हवा चलती है औरवह स्त्रियोंके दिलोंमें बडी गुदगुदी पैदा करती है। इसी से आयुर्वेद-आचार्यों ने वसन्त में रात-दिन स्त्री पुरुषों के अङ्गमें कामदेव का रहना लिखा है। इस मौसम में, मनहूस से मनहूस का भी काम जाग उठता है और रूठी हुई स्त्रियाँ सहज में मन जाती हैं।

दोहा।

तबही लों मन मान यह, तब ही लों भ्रूभग।
जौ लौं चन्दन से मिल्यो, पवन न परसत अग ॥३२॥

सार—मलयपवन के चलते ही मानिनी स्त्रियाँ आप ही सीधी हो जाती हैं।

32 *The pride of a woman before her lover remains only so long as the pure spring air bearing the sweet smell of sandal does not touch her body*



ऋतु-वर्णन

वसन्त-महिमा ।

परिमलभृतो वाताः शाखा नवांकुरकोटयो ।
मधुरविरतोत्कण्ठा वाचः प्रियाः पिकपक्षिणाम्॥
विरलसुरतस्वेदोद्गारा वधूवदनेन्दवः
प्रसरतिमधौराज्यांजातो न कस्य गुणोदयः ॥ २३॥

जबकि सुगन्धियुक्त पवन चला करती है, वृक्षोंकी शाखाओं में नये-नये अंकुर निकलते हैं, कोकिला मदमत्त या उत्कण्ठित होकर मधुर कलरव करती है, स्त्रियों के मुखचन्द्र पर मैथुन के परिश्रमसे निकले हुए पसीनोंकी हलकी-हलकी धारें मजा देने लगती है, उस वसन्त की रात में, किसे काम पीड़ित नहीं करता ?॥२३॥

खुलासा—वसन्त कामदेव का साथी और ऋतुओं का राजा है। इस ऋतु में सुगन्धि-मिश्रित पवन चलने लगते हैं। शाखा-प्रशाखाओं में नवीन पत्राङ्कुर शोभा देने लगते हैं। चारों ओर फूल खिलते हैं। कोकिला मधुर कलरव करती है। साँझ सुहावनी और दिन रमणीय होने लगते हैं। स्त्रियाँ अनुरागिनी होने लगती हैं। बहुत क्या—इस ऋतु में सभी पदार्थों में मनोहरता आ जाती है।

हम अपने पाठकोंके मनोरञ्जनार्थ महाकवि कालिदास-विरचित "ऋतु-संहार" से चन्द सुन्दर-सुन्दर पद्य उद्धृत करते हैं :—

आकम्पितानि हृदयानि मनस्विनीना
वाते प्रफुल्ल सहकार कृताधिवासे ।
सम्बाधितम्परभृतस्य मदाकुलस्य
श्रोत्रप्रियैर्मधुकरस्य च गीतनादै. ॥

इस ऋतु में बौरे हुए आम के वृक्षो की सुगन्ध से सुगन्धित वायु ने धीरज धरने वाली कामिनियों के हृदयो मे भी खलबली मचा दी है। मदोन्मत्त कोकिलों की कुहुक और भौंरो के मधुर गुञ्जार से चारों दिशाएँ भर गयी हैं।

औरभी.—

पुंस्कोकिलश्चूतरसेन मत्त
प्रियामुख चुम्बति सादरोयम् ।
गुञ्जद्द्विरेफोऽप्ययमम्बुजस्थ
प्रिय प्रियाया प्रकरोति चाटुम् ॥

आम के रस से मतवाला हुआ कोकिल, सादर, अपनी प्यारी का मुख चूम रहा है। गूँजता हुआ भौंरा भी कमल पर बैठ कर अपनी प्यारी की खुशामद कर रहा है।

औरभी:—

तनूनि पाण्डूनि मदालसानि
मुहुर्मुहुर्जृम्भणतत्पराणि ।
अङ्गान्यनङ्गः प्रमदाजनस्य
करोति लावण्यरसोत्सुकानि ॥

इस ऋतु में मीनकेतन—कामदेव, स्त्रियों के नाजुक, गोरे, मतवाले और वारम्बार जम्हाइयाँ लेते हुए अङ्गों को शृङ्गार-रस में मग्न कर देता है।

बहुत लिखने को हमारे पास स्थान का अभाव है, इसलिये इतना ही यथेष्ट होगा। वसन्त में नामर्द भी मर्द हो जाता है। स्त्रियों को तो इतना मद छाता है कि, वे सीना उभार कर और अकड़कर चलती हैं। रसीले और छैल-छबीले पतियों के पास रहने पर भी नहीं दबतीं, बल्कि उत्कण्ठित ही रहा करती हैं।

छप्पय।

चलें सुगन्धित पवन, फूल चहुँ दिशि में फूले।
बोलत पिक मृदु बचन, काम शर उर में शूले।
मुकुलित मञ्जरि आम, करै उत्कण्ठा भारी।
रतिश्रम स्वेदित बदन, चन्द्रसम अदभुत नारी।

यह केहि पदार्थ के गुणन कों, उदय करत नहिं जगत् महँ।
शठि ऋतु वसन्त की है निशा, मंगलदायक सकल कहँ ॥३३॥

सार—वसन्त में सभी की उत्कण्ठा और काम-वासना बढ़ जाती है।

33 *What objects do not assume their qualities in the dead of night of the spring season when the scented breeze blows, new sprouts of leaves come out on the branches of trees, the sweet sound of cuckoo and other birds appear very pleasing and the stray drops of perspiration shine on the moon-like face of women after the exertion of sexual intercourse*

—*—

मधुरयं मधुरैरपि कोकिला—
कलकलैर्मलयस्य च वायुभिः॥
विरहिणः प्रणिहन्ति शरीरिणो
विपदि हन्त सुधापि विषायते ॥३४॥

ऋतुराज बसन्त कोकिल के मधुर-मधुर शब्दो और मलय पवन से विरही स्त्री-पुरुषों के प्राण नाश करता है। बड़े ही दुःख का विषय है कि, प्राणियों के लिये विपद्काल में अमृत भी विष हो जाता है ॥३४॥

खुलासा—कोकिल का मधुर कलरव और मलयाचल की सुगन्धिपूर्ण हवा प्राणिमात्र में नवजीवन का सञ्चार करते हैं। इनसे शोकार्त्त और मनहूसों के दिलों में भी गुदगुदी होने लगती



कोकिल के मधुर-मधुर झंकार और मलय पवन से विरही स्त्री-पुरुषों के प्राणनाथ

है। सभी के चेहरों पर प्रसन्नता छा जाती है, पर कर्मों के फेर या दुर्दिन के कारण से, यही दोनों विरही स्त्री-पुरुषों को मछली की तरह तडफाते हैं। सच है, विपद्‌काल में सोना मिट्टी हो जाता है और अमृत विप हो जाता है। पण्डितराज जगन्नाथ अपने "भामिनी-विलास" में कहते हैं .—

मलयानिलमनलीयति मणिभवने काननीयति क्षणत. ।
विरहेण विकलहृदया निर्जलमीनायते महिला ॥

विरह-वेदना से विकल कामिनी मलयाचल की पवन को आग और मणिमय भवन को वन समझकर मछली का सा आचरण करती है यानी जलहीन मछली की तरह तड़फती है।

औरभी —

पाटीरद्रुभुजङ्गपुंगवमुखायाताइवातापिनो,
वाता वांति दहन्ति लोचनममी ताम्रा रसालद्रुमा ।
एते हन्त किरन्ति कूजितमयहालाहल कोकिलाः,—
वाला वालमृणालकोमलतनु प्राणान् कथं रक्षतु ॥

चन्दन के वृक्षों में वसनेवाले साँपों के मुख से निकली हुई हवा के समान सन्तप्त—गरम हवा चलती है, लाल-लाल पत्तो वाले आम के वृक्ष नेत्रों को जलाते हैं कोयल की वाणी विप सा वरसाती है। इस दशा में नवीन कमल की डंडी के समान कोमलाङ्गी वाला किस तरह अपनी प्राणरक्षा करेगी ?

पाठक ! देख लिया, वसन्त में विरहीजनों की कैसी दुर्दशा

होती है। विरही स्त्री पुरुष सभी शीतल और शान्तिमय पदार्थों को अग्निवत् समझते हैं। विरह-व्याकुला बाला काले अगर और चन्दन के रस को हलाहल विष और नील कमलों की माला को साँपों की कतार समझने लगती है।

एक विरहीणी वसन्तमें अपने प्रीतमके घर न आने पर स्वपति, कोकिला, कामदेव और चन्द्रमा पर कैसी कुपित हो रही है और उन से बदला लेने की ठान रही है। हम इस मनोहर उक्ति को महाकवि कालिदास-कृत "शृङ्गार तिलक" से उद्धृत करते हैं। लीजिये पाठक! इस का भी रसास्वादन कीजिये —

आयाता मधुयामिनी यदि पुनर्ना—
यात एव प्रभु प्राण यान्तु विभावसौ
यदि पुनर्जन्मग्रह प्रार्थये।
व्याध कोकिलबन्धने हिमकर—
ध्वंसे च राहुग्रह. कन्दर्पं हरनेत्र-
दीधितिरहं प्राणेश्वरे मन्मथ॥

वसन्त की रात आगई, पर मेरे स्वामी न आये। इसलिये मेरे प्राण आग में नष्ट हों। अगर मरने के बाद फिर जन्म होता हो, तो मैं परमात्मासे प्रार्थना करती हूँ कि, कोकिल के बन्धन के लिये मैं व्याध होऊँ; चन्द्रमा के नाश करने के लिये राहु होऊं, कामदेव के संहार के लिये शिवजी के नेत्र की किरण बनूँ और अपने प्राण-प्यारे के लिये कामदेव बनूँ, अर्थात् वसन्तमें, ये सब मुझे जिस

तरह सता रहे हैं परकाल में, मैं भी इन्हें सताऊँ और अपना बदला लूँ।

दोहा।

ऋतु बसन्त कोकिल कुहुक, त्योंही पवन अनूप।
विरह विपत के परत ही, सुधा होय विषरूप ॥३४॥

सार—विरही स्त्री पुरुषों के लिये "वसन्त" काल के समान है।

34 This month of Chaitra kills (as it were) those who are suffering from the pangs of separation, by the sweet sound of cuckoo and by the air of Malyachala mountain Alas! even nectar becomes poison in adversity. (Sweet sound of the cuckoo and the gentle breeze in the spring season please every one—but those whose beloved ones are away feel their absence all the more by these messengers of spring.)

आवासः किल किञ्चिदेव दयितापार्श्वे विलासालसः
कर्णे कोकिलकाकलीकलरवः स्मेरो लतामण्डपः॥
गोष्ठी सत्कविभिः समं कतिपयैः सेव्याः सितांशोः कराः
केषाञ्चित्सुखयन्ति नेत्रहृदये चैत्रे विचित्राः क्षपाः॥३५॥

भोगविलास से शिथिल होकर कुछ समय तक अपनी प्यारी के पास आराम करना, कोकिलाओं के मधुर शब्द सुनना, प्रफुल्लित लतामण्डप के नीचे टहलना, सुन्दर कवियों से बातचीत करना

और चन्द्रमा की शीतल चाँदनी की बहार देखना—ऐसी सामग्री से चैत्र मास की विचित्र रात्रियाँ किसी-किसी ही भाग्यवान् के नेत्र और हृदयों को सुखी करती हैं ॥३५॥

खुलासा—कोयल कुहुकती हो, लताएँ फूल रही हों, चाँदनी छिटक रही हो, श्रेष्ठ कवि अपनी रसीली कविताएँ सुनाते हों और भोग-विलास से थक कर अपनी प्राणप्यारी के पास आराम कर रहे हो—चैत के महीने की रातो में, जिन्हें ये सब मयस्सर हों, वे निश्चय ही भाग्यवान हैं। जिन्होंने पूर्व्वजन्म में पुण्य सञ्चय किये हैं, उन्हें ही ये स्वर्गीय सुख मिलते हैं, सब किसी को नहीं।

दोहा।

कोकिल-रव फूली लता, चैत चाँदनी रैन।
प्रिया सहित निज महलमें, सुकृती करत सुचैन ॥३५॥

सार—चैतकी चाँदनी रातमें, विरले पुण्यात्मा ही अपने महल की छत पर, अपनी प्राणप्यारीके साथ आनन्द करते हैं।

35 These wonderful nights of the month of Chaitra give pleasure to the mind and eyes of a man who enjoys the sweet company of his beloved wife being tired with pleasurable copulation, hears the sweet songs of the cuckoo and take delight in bright moon-light, whose time is passed in company with bards, but to others whose beloved one are away, these nights give pain.

—*—

पान्थस्त्रीविरहानलाहुतिकलामातन्वती मञ्जरी
माकन्देषु पिकाङ्गनाभिरधुना सोत्कण्ठमालोक्यते ॥
अप्येते नवपाटलापरिमलाः प्राग्भारपाटच्चरा
वांतिक्लांतिवितानतानवकृतः श्रीखण्डशैलानिला ॥२६॥

इस वसन्तमें, जगह-जगह, बटोहियों की विरहव्याकुल स्त्रियों की विरहाग्नि में आहुति का काम करने वाली आम की मञ्जरियाँ खिल रही हैं। कोकिला उन्हें बडी अभिलाप या उत्कंठासे देख रही है। नये पलाश के फूलों की सुगन्ध को चुराने वाले और राह की थकान को मिटाने वाले मलय वायु चल रहे हैं ॥२६॥

यहाँ ऋतु राज को स्वाभाविक महिमा का चित्र खीचा गया है। हम भी अपने मनचले पाठकों के मनोरञ्जनार्थ महाकवि कालिदास के "ऋतुसंहार" से एक श्लोक नीचे उद्धृत करते हैं —

समदमधुकराणां कोकिलानाञ्च नादै
कुसुमितसहकारैः कर्णिकारैश्च रम्यैः।
इषुभिरिव सुतीक्ष्णैर्मानस मानिनीना
तुदति कुसुममासो मन्मथोद्दीपनाय ॥

यह कुसुम मास मतवाले भौरों, कोकिल के शब्दों, अत्यन्त तेज तीरों के समान बौरे हुए आम के वृक्षों और मनोहर कनेर के वृक्षोंके द्वारा, कामोद्दीपन करने के लिये, मानिनी स्त्रियों के मनो को विद्ध कर रहे हैं।

छप्पय।

विरहीजन मन ताप करन, वन अम्बा मौरे।
पिकहू पञ्चम हेर टेर, बिरही किये बौरे।
भौंर रहे मन्नाय, पुहुप पाडल के महकत।
प्रफुलित भये पलास, दशौं दिशि दौसी दहकत।
मलयागिरिवासी पवनहु, काम अग्नि प्रज्वालित करत।
बिन कन्त वसन्त असन्त ज्यों, घेर रह्यो यह नाहिं टरत॥३

सार---आम की मंजरियों का खिलना, कोकिला का उन्हें उत्कंठा से देखना और मलय पवन का चलना,—ये ऋतुराज—वसन्त की स्वाभाविक महिमा है।

36 In the spring season, the peahen eagerly looks at the mango blossoms which adds to the flame of separation of a traveller's wife and the air from Malyachala blows st along the smell of patal flowers and renewing her grief

—※—

सहकारकुसुमकेसरनिकरभरामोदमूर्छितदिगन्ते।
मधुरमधुविधुरमधुपे मधौ भवेत्कस्य नोत्कण्ठा॥३७॥

आम के बौरों की केसर की गहरी सुगन्ध से दशों दिशाएँ व्याप्त हो रही हैं, मधुर मकरन्द को पी-पीकर भौंरे उन्मत्त हो

रहे हैं—ऐसे ऋतुराज वसन्त में किसके मनमें कामवासना का उदय नहीं होता ? ॥३७॥

खुलासा—जिस समय वसन्त में आमों के फूलों की सुगन्ध से दिशाएँ महकने लगती हैं, मधु के लोभी भौंरे मधु पी-पीकर उन्मत्त हो जाते हैं, उस समय प्रायः सभी प्राणियों की विषय-वासना प्रबल हो उठती है। पुरुष स्त्रियों से और स्त्रियाँ पुरुषों से मिलने को तडफड़ाने लगती हैं। बड़ी-बड़ी मानिनी स्त्रियों का गर्व खर्व हो जाता है। जो दम्पति एकत्र होते हैं, वे इस ऋतु में आनन्द करते हैं, परन्तु जो दूर-दूर होते हैं, वे विरह की आग में बुरी तरह जलते हैं।

सोरठा।

फूले चहुँ दिशि आम, भई सुगन्धित ठौर सब।
मधु मधुपी अलिग्राम, मत्त भये झूमत फिरें ॥३७॥

सार—वसन्त में प्रायः सभी प्राणियों को कामदेव सताता है।

37. Who does not feel buoyant in the spring season when all the quarters are filled with smell issuing forth from the bunch of mango blossoms and when the bees are busy in the collection of sweet honey from flowers?

—:—

ग्रीष्म-महिमा ।

अच्छाच्छचन्दनरसार्द्रकरा मृगाक्ष्यो
धारागृहाणि कुसुमानि च कौमुदी च ॥
मन्दो मरुत्सुमनसः शुचि हर्म्यपृष्ठं
ग्रीष्मे मदश्च मदनश्च विवर्द्धयन्ति ॥२८॥

अत्यन्त सफेद चन्दन जिन के हाथों में लग रहा है, ऐस मृगनयनी सुन्दरियाँ, फव्वारेदार घर, फूल, चाँदनी, मन्दी हवा औ महल की साफ छत,—ये सब, गरमी के मौसममें, मद और मद दोनों ही को बढ़ाते हैं ॥२८॥

खुलासा—मृगनयनी के कमल-समान हाथो मे अरगजा चन्द लगा है, फुहारे छूट रहे हैं, फूलों की शय्या बिछी है, चन्द्र की चारु चाँदनी छिटक रही है, वीणा वज रहा है, चतुर गवै गा रहे हैं, महल की स्वच्छ और परिष्कृत छत पर पलँग बिछ र है—इस सब सामग्री से मद और मदन दोनों की वृद्धि होती है अर्थात् जिन पुरुषो के मन में विषय-वासना नहीं होती, उन के मन इन सामानों के सामने होने से उत्कण्ठित हो जाते हैं। पर सब धनी और राजा महाराजाओं को ही मयस्सर हो सक हैं। हम अपने पाठकों के मनोरञ्जनार्थ चन्द सुन्दर-सुन्दर श्लो महाकवि कालिदास कृत "ऋतुसंहार" से उद्धृत करते हैं —



मनोहर सुगन्धित माला, पवन की हवा, चन्द्रमा की किरणें, फव्वारेदार घर, महल की छत और मृगनयनी कामिनी—ये सब, मौसम गरमी में, मद और मदन दोनों को ही बढ़ाते हैं। । पृष्ठ ६२ ।

(१)

सचन्दनाम्बु--व्यजनोद्भवानिले
सहारयष्टिस्तनमण्डलार्पणै ।
सवल्लकी-काकलिगीत निस्वनै
प्रवुध्यते सुप्त इवाद्य मन्मथः ॥८॥

(२)

निशा शशाङ्क क्षतनीरराजय
क्वचिद् विचित्रं जलयंत्रमन्दिरम्
मणिप्रकारा. सरसञ्च चन्दन
शुचौ प्रिये, यान्तिजनस्य सेव्यताम् ॥ ६ ॥

(३)

पयोधराश्चन्दनपङ्कशीतला—
स्तुषारगौरार्पितहारशेखरा ।
नितम्बदेशाश्च सहेम मेखला
प्रकुर्व्वते कस्य मनो न सोत्सुकम् ॥

इस ग्रीष्म ऋतु में, चन्दन के पानी से भिगोये हुए पङ्खे की हवा से, हारयुक्त स्तनमण्डलों को छाती से लगाने से और वीणा के मधुर स्वर के साथ गाना सुननेसे सोया हुआ कामदेव भी चैतन्य हो जाता है ॥१॥

हे प्यारी ! इस आषाढ़ के महीने में कहीं रात और चन्द्रमा, कहीं थोड़े जलवाला तालाब और कहीं फुहारेदार घर, कहीं नाना

प्रकार के शीतल रत्न और कहीं सरस चन्दन--मनुष्यों के सेवनीय हो जाते हैं ॥२॥

इस ऋतु में, बर्फ के समान सफेद और उज्ज्वल हार धारण किये चन्दन-चर्चित शीतल पयोधर* और सोने की कौंधनी पड़े हुए नितम्ब† किस के चित्त को उत्कण्ठित नहीं करते? ॥३॥

छप्पय।

मृगनैनी के हाथ, अरगजा चन्दन लावत।
छुटत फुहारे देख, पुष्प-शय्या विरमावत।
चारु चाँदनी चन्द, मन्द मारुत को ऐंवो।
बाजत वीन प्रवीण, सग गायन को गैवो।
चाँदन उजरे महल की, निरखत चितगति हितढरत।
पुरुषन को ग्रीष्म विषम में, ये मद-मदनहिं विस्तरत ॥३८॥

38 Ladies having their hands besmeared with purest sandal water, houses having fountains playing therein, sweet smelling flowers, bright moon-light, fragrant creeper the gentle breeze and the white roof of the palaces—these things in summer season, increase sensual desires

—:—

स्रजो हृद्यामोदा व्यजनपवनश्चन्द्रकिरणाः
पराग कासारो मलयजरज सीधु विशदम् ॥

---

* पयोधर = स्तन, छातियाँ।

† नितम्ब = कमर का पिछला भाग, चूतड़।

शुचिः सौधोत्सङ्ग• प्रतनु वसनं पंकजदृशो
निदाघ तूर्णं तत्सुखमुखपलभन्त सुकृतिन• ॥३८॥

मनोहर सुगन्धित माला, पङ्खे की हवा, चन्द्रमा की किरणे, फूलों का पराग, सरोवर, चन्दन की रज, उत्तम मदिरा, महल की उत्तम छत, महीन वस्त्र और कमलनयनी सुन्दरी—इन सब उत्तमोत्तम पदार्थों का, गरमी की तेज़ी से विकल हुए, कोई-कोई भाग्यवान पुरुष ही मज़ा ले सकते हैं।

खुलासा—गरमीकी ऋतुमें-फूलोंकी माला, पङ्खेकी हवा, चारु चाँदनी और कमलनेत्री कामिनी प्रभृति शीतल और शान्तिमय पदार्थों का भोग कोई-कोई पुण्यवान ही कर सकते हैं। सबके लिये ये स्वर्गीय आनन्दके देनेवाले सामान मयस्सर हो नहीं सकते। जिन्होने पूर्व्वजन्म में पुण्य किया है, जिनके ऊपर विष्णुप्रिया लक्ष्मी की कृपा है, वे ही इन का सुख लूट सकते हैं।

दोहा।

पुष्पमाल पखा पवन, चन्दन चन्द सुनारि।
बैठ चाँदनी जल लहर, जेठमास पट धारि ॥३९॥

39 *In summer season, it is only the fortunate people who derive pleasure by the enjoyment of the following—sweet smelling garlands, air of fans, moon light, pollens of flowers, tanks, sandal dust, pure wine, white terrace of big palaces, fine clothes and the lotus-eyed beautiful maiden.*

—०※०—

सुधाशुभ्रं धाम स्फुरदमलरश्मिः शशधरः
प्रियावक्त्राम्भोजं मलयजरजश्चातिसुरभिः ॥
स्रजो हृद्यामोदास्तदिदमखिलं रागिणि जने
करोत्यन्तः क्षोभं न तु विषयसंसर्गविमुखे ॥४०॥

लिपा-पुता साफ महल, निर्मल किरणोंवाला चन्द्रमा, प्यारी का मुखकमल, चन्दन की रज और मनोहर फूलमाला—ये सब चीज़ें कामी पुरुषों के मन में अत्यन्त क्षोभ करती हैं, किन्तु विषय-वासना से विमुख पुरुषोंके हृदयोंमें किसी प्रकार का क्षोभ उत्पन्न नहीं करतीं ॥४०॥

खुलासा—जो अनुरागी हैं—कामी हैं, उन के दिलों में स्वच्छ महल, निर्मल सुधाकर की रश्मियाँ, पुष्पमाला, खस के पङ्खे की हवा, फव्वारों का चलना, चन्दन की रज, वीणा का मधुर स्वर, सुरीले कण्ठोंका मनोहर गान प्रभृति शीतल, पर कामोत्तेजक, पदार्थ एक प्रकारकी हलचलसी मचा देते हैं। इनसे उनकी काम-वासना—भोगविलास की इच्छा और भी प्रबल हो जाती है, परन्तु जो संसार से उदासीन हैं, जिन्हें विरक्ति हो गई है, जिन्हें संसारकी असारता और चञ्चलता का ज्ञान हो गया है, उनके दिलों में इन सब कामोत्तेजक पदार्थों से कुछ भी हलचल नहीं मचती। उनके लिये तो स्वच्छ महल और श्मशान, चाँदनी रात और घोर अँधेरी रात, पुष्पमाला और सर्पमाला, चन्दन की रज और श्मशान की राख तथा कामिनियोंकी जुल्फें और भयङ्कर कालसर्प प्रभृति सब बराबर हैं।

दोहा ।

शशिवदनी अरु शरद शशि, चन्दन पुष्प सुगन्ध ।
ये रसिकन के चित हरत, सन्तन के चित बन्ध ॥४०॥

सार—चारु चाँदनी, चन्द्रमुखी प्रिया एवं अन्यान्य कामोत्तेजक पदार्थों से कामियों को ही कामवासना तेज़ होती है; विरक्त या उदासीनों को नहीं ।

40 Snow-white palaces, clear moon-light, the lotus-like face of the beloved lady, fragrant sandal, the sweet smelling garlands of flowers—(these things) disturb the mind of a lover, but those that are averse to the enjoyment of worldly pleasures, are not affected in the least by these objects

—०:०—

वर्षा की महिमा ।

(प्रावृट् और वर्षा)

तरुणी वेषा दीपितकामा विकसितजातीपुष्पसुगन्धि ।
उन्नतपीनपयोधरभारा प्रावृट् कुरुते कस्य न हर्षम् ॥४१॥

कामदेव का उदय करनेवाली, प्रफुल्लित मालतीकी लतावाली, उत्तम सुगन्धि धारण करनेवाली, उन्नत पीन पयोधरा वर्षा ऋतु, तरुणी स्त्रीकी तरह, किसके मनमें हर्ष उत्पन्न नहीं करती? ॥४१॥

खुलासा—जिस भाँति सुन्दरी कमलनयनी तरुणी पुरुष के मन में हर्ष उत्पन्न करती है, उसी तरह वर्षा ऋतु भी पुरुषके मन में हर्ष उत्पन्न करती है, क्योंकि जिस तरह तरुणी स्त्री के चिकने मनोहर बाल होते हैं, उसी तरह वर्षा-रूपिणी तरुणी के बालों की जगह मालती की लतायें होती हैं। जिस तरह तरुणी के शरीर से सुगन्धित तेल और इत्र वगैर की खुशबू उडा करती है, उसी तरह वर्षारूपिणी तरुणी के शरीर से भी नाना प्रकार के फूलो की सुगन्धि आया करती है। जिस तरह तरुणी स्त्री के सघन पीन पयोधर होते हैं उसी तरह वर्षारूपिणी तरुणीके भी सघन मेघ पीन पयोधर होते हैं। जिस तरह तरुणी स्त्री पुरुष के मन में उत्कंठा—विषय-वासना उत्पन्न करती है, उसी तरह वर्षा भी उत्कण्ठा उत्पन्न करती है। मतलब यह तरुणी नारी और वर्षा में कोई भेद नही, दोनों हर तरह समान हैं। कविने ठीक ही कहा है कि, वर्षारूपिणी तरुणीके दर्शनो से कौन हर्षित नही होता, जो पूर्ण विकसित जाती पुष्पों की सुगन्ध और सघन मेघो के उत्थान से मनुष्य के मन में काम उत्पन्न करती है? "भामिनी विलास" में लिखा है—

प्रादुर्भवति पयोदे कज्जलमलिन बभूव नभ. ।
रक्त च पथिक हृदय कपोलपाली मृगीदृश· पाडु· ॥

बादलों के आकाश में आनेसे आकाश काजलके समान मलिन हो गया पथिक का हृदय अनुराग से भर उठा और मृगनयनी के गालों पर जर्दी छा गयी।

साराश यही है कि, वर्षाऋतु के आते ही स्त्री-पुरुषों का चित्त प्रसन्न हो जाता है और उन दोनों को ही 'विषय-भोग भोगने की इच्छा प्रबल हो उठती है। इस ऋतु में केवल उन्हींका चित्त हर्षित और उत्कण्ठित नहीं हो सकता, जो संसार से उदासीन या पुंसत्व-विहीन हैं।

दोहा।

पीन पयोधर कों धरत, प्रगट धरत है काम।
पावस अरु प्यारी निरख, हर्षित होत तमाम ॥४१॥

41, Who does not feel pleasure in the rainy season which has all the qualities of a young woman, gives rise to amorous desires, bears the smell of blossomed Jessamine flowers and has swollen heavy clouds over it?

—०✻०—

वियदुपचितमेघं भूमयः कन्दलिन्यो।
नवकुटजकदम्बामोदिनो गन्धवाहाः॥
शिखिकुलकलकेकारावरम्या वनान्ताः
सुखिनमसुखिनं वा सर्वमुत्कण्ठयन्ति ॥४२॥

मेघों से आच्छादित आकाश, नवीन-नवीन अङ्कुरों से पूर्ण पृथ्वी, नवीन कुटज और कदम्ब के फूलों से सुगन्धित वायु और मोरों के झुण्ड की मनोहर वाणी से रमणीय वनप्रान्त,—वर्षामें, सुखी और दुखी दोनों तरहके पुरुषों को उत्कण्ठित करते हैं॥४२॥

खुलासा—हर शख्स का मन चाहे वह सुखी हो चाहे दुखी, घनघोर घटाओं, नये-नये अङ्कुरों से छायी पृथ्वी एवं कुटज और कदम के फूलों की सुगन्धि से सुवासित पवन और मोरों की मधुर वाणी से पूर्ण मनोहर वनों को देख कर उत्कण्ठित होता ही है।

वर्षा की नेत्रों को प्रसन्न करने वाली, मन और आत्मा की तृप्ति करनेवाली, शीतलता और शान्ति का सञ्चार करनेवाली छवि पर कोई विरला ही मनहूस न मोहित होता होगा। इस ऋतु में बड़े-बड़े-मानी पुरुषों और मानिनी स्त्रियों के मान मर्दन हो जाते हैं। दोनों ही मान त्याग त्याग कर, एक दूसरे की खुशामद करने लगते हैं। भारी से-भारी अपराध के अपराधी पतियोंको मृगनयनी स्त्रियाँ सहज में क्षमा प्रदान कर देती हैं। देखिये महाकवि कालिदास अपने "ऋतु संहार" में कहते हैं —

(१)

पयोधरैर्भीमगम्भीरनिस्वनै-
स्तडिद्भिरुद्वेजितचेतसो भृशम्।
कृतापराधानपि योषितः प्रियान
परिष्वजन्ते शयने निरन्तरम्॥

(२)

कालागुरुप्रचुरचन्दन-चर्चिताङ्ग्य
पुष्पावतंससुरभीकृतकेशपाशाः।
श्रुत्वा ध्वनिं जलमुचां त्वरितम्प्रदोषे
शय्यागृहं गुरुगृहात्प्रविशन्ति नार्यः॥

वर्षा में, स्त्रियाँ भयङ्कर और गम्भीर गर्जना करनेवाले मेघों और चमाचम चमकती हुई बिजलियों से डर-डर कर अपराधी पतियों को भी, शय्या पर, वारम्वार आलिङ्गन करने लगती हैं, अर्थात् भयभीत होकर पतियों के शरीर से, चिपटने लगती हैं।

वर्षा की रातों मे, बादलो की घोर गर्जना सुन-सुन कर, स्त्रियाँ अपने शरीरों में अगर और चन्दन का लेप कर, फूलों के गहनों से चोटियों को सजा और सुगन्धित कर, घरके काम-धन्धे जल्दी-जल्दी निपटा, सास के घर से अपने सोने के कमरो मे शीघ्र ही चली जाती हैं।

पण्डितराज जगन्नाथ एक मानिनी के सम्बन्ध में क्या खूब कहते हैं .—

मुञ्चसि नाद्यापि रुष भामिनि! मुदिरालिरुदियाय।
इतिसुदृश प्रियवचनैरपायि नयनाब्ज कोणशोण रुचि ॥

हे भामिनी! आकाश में मेघमाला छागई है, किन्तु तू अब तक अपना रोष नहीं त्यागती? प्रियतम के इन वचनों से कमल-नयनी के नयन-कमल के कोने में जो ललाई आगई थी, वह दूर हो गई अर्थात् वह अपने प्यारे से राज़ी होगई।

दोहा।

अम्बर घन अवनी हरित, कुटज कदम्ब सुगन्ध।
मोर शोर रमणीक वन, सब को सुख सम्बन्ध ॥४२॥

सार—वर्षा में दुखिया और सुखिया सभी के मनमें कामवासना उदय हो आती है।

42 The sky overcast with clouds, the earth full of new sprouts, the air fragrant with the smell of newly blossomed Kutaja and Kadamba flowers and the forest pleasant on account of the charming voice of peacocks,—all these give rise to amorous feelings in the hearts of happy and the unhappy men alike.

—०%०—

उपरि घनं घनपटलं तिर्यग्गिरयोऽपि नर्तितमयूराः ॥
वसुधा कन्दलधवला दृष्टिं पथिकः क्व पातु संत्रस्तः ॥४३॥

सिर के ऊपर घनघोर घटायें छा रही हैं, दाहिने-बायें दोनों तरफ के पहाड़ों पर मोर नाच रहे हैं, पैरों के नीचे की जमीन नवीन अंकुरों से हरी हो रही है—ऐसे समय में जबकि चारों ओर कामोद्दीपन करनेवाले सामान नजर आते हैं, विरह व्याकुल पथिक को कैसे सन्तोष हो सकता है? ॥४३॥

खुलासा—सिर पर मेघों का शामियाना, पैरों के नीचे हरी-हरी दूब का कालीन और अगल-बगल में मदमत्त मोरों का नाचना देखकर, बटोही के मन में प्यारी से मिलने की उत्कट अभिलाषा हुए बिना नहीं रहती। वह बहुत कुछ धीरज धरता है, पर जब चारों ओर कामोद्दीपक पदार्थों को देखता है, तब फिर अधीर हो

जाना है। बहुत लिखने से क्या—वर्षा में विरहीजनों को बड़ा क्लेश होता है। देखिये महाकवि कालिदास कहते हैं—

वलाहकाश्चाशनिशब्दमर्द्दलाः
सुरेन्द्रचापं दधतस्तडिद्गुणम्।
सुतीक्ष्णधारा-पतनोग्रसायका—
स्तुदन्ति चेन. प्रसभं प्रवासिनाम्॥

इन दिनों, वज्र के शब्द रूपी नगाडेवाले बिजली की डोरी से युक्त इन्द्रधनु धारण किये, तीव्र धारा की वृष्टि-रूपी भयङ्कर बाण वाले (वीर) बादल प्रवासियों के चित्त को परबस व्यथित कर देते हैं।

यह तो हुई पुरुषों की बात, अब जरा परदेश में रहनेवालों की प्राणप्यारियों के दुःख और कष्ट की बात भी सुनियेः—

विलोचनेन्दीवर—वारि—बिन्दुभि—
र्निषिक्त—बिम्बाधर—चारुपल्लवाः
निरस्त माल्याभरणानुलेपना.
स्थिता निराशा. प्रमदाः प्रवासिनाम्॥

वर्षा में, विदेश में रहनेवालों की स्त्रियाँ अपने नयन-कमलों के जलबिन्दुओं से अपने बिम्बाफल के समान सुन्दर अधरपल्लवों—होठों—को भिगोये, हार प्रभृति गहने और चन्दन अगर प्रभृति का अनुलेपन त्यागे, पति के आने को आशा छोड (मनमारे) बैठी हुई हैं।

व्याकुला स्त्रियाँ अपने रस-पूर्ण विरह के दिनों को कैसे बितायेंगी ? ॥४४॥

सुलासा—आकाश में घनघोर घटायें घिर आई हैं, विजली झमाझम कर रही है, वादलों की भयङ्कर गर्जना हो रही है, केतकी के मनोहर फूलों की सुगन्ध उड रही है, मतवाले मोर शोर कर रहे हैं , हाय ! कामकला-प्रवीण सुनयनी तरुणियो के, ये कामवासना को वढ़ानेवाले दिन किस तरह कटेंगे ? क्योंकि उनके प्राणवल्लभ घरों पर नहीं हैं। जब वे अँधेरी रातों में वादलों की हृदय दहलाने वाली आवाज़ों और विजली की भयङ्कर कडक से भयभीत होंगी, तव कौन उन्हें छाती से लगाकर उन का भय मिटावेगा ? जव वे चारों ओर कामोद्दीपन करनेवाले सामान देखकर काम-पीडित होंगी, तव कौन उनकी काम शान्ति करेगा ?

दोहा।

दमकत दामिनि मेघ इत, केतकि पुष्प विकाश।
मोर शोर निशिदिन करत, विरहीजन मन त्रास ॥४४॥

सार---वर्षामें प्रवासी पतियों की पतिव्रता स्त्रियोंके दिन वड़ी ही मुसीवत में कटते हैं।

44 How could the women separated from their lovers pass those wet days when there is the flash of lightening here and the pungent smell of Ketki flowers there, the roaring of clouds on this side and the dancing of peacocks on the other?

—०—



सावन भादों की अँधेरी रात में—मेघों की भयङ्कर गरजना, पत्थर सहित जल की वृष्टि होना और सुवर्णवत् बिजली का चमकना—सुन्दरी सुनयनाओं के लिये राह में सुख और दुःख दोनों का कारण होता है। इस चित्र में यह दिखाया है, कि भयङ्कर रात में सुन्दरी अपने यार से मिलने जा रही है। जब वह यार से मिलने का खयाल करती है, तब सुखी होती है, किन्तु वर्षा और अन्धकार से दुखी होती है।

(पृ० १०६)

भयङ्कर श्मशान मे भी पहुँचती है। किसी पाश्चात्य विद्वान् ने ठीक ही कहा है—"A woman when she either loves or hates, will dare anything" स्त्री जब प्रेम या घृणा—दो में से एक पर तुल जाती है, तब वह सब कुछ कर सकती है।

महाकवि कालिदास कहते हैं :—

अभीक्ष्णमुच्चैर्ध्वनता पयोमुचा
घनान्धकारीकृतशर्वरीष्वपि ।
तड़ित्प्रभादर्शितमार्गभूमयः
प्रयान्ति रागादभिसारिकाः स्त्रियः ॥

वर्षा में, घोर गर्जन करनेवाले मेघों से रातके अत्यन्त अँधेरी होने पर भी, अभिसारिका स्त्रियाँ, अपनी राह की ज़मीन को बिजली के प्रकाश से देखती हुई, बड़े चावसे, अपने यारों के पास जा रही हैं।

दोहा ।

महाअन्धतम नभ जलद, दामिनि दमक दुरात ।
हर्ष शोक दोऊ करत, तिय को पिय ढिंग जात ॥४५॥

सार—वर्षा की घोर अँधेरी रात में, वक्त मुक़र्रर पर, अपने यारों के पास जानेवाली अभिसारिका नारियों को दुःख और सुख दोनों ही होते हैं।

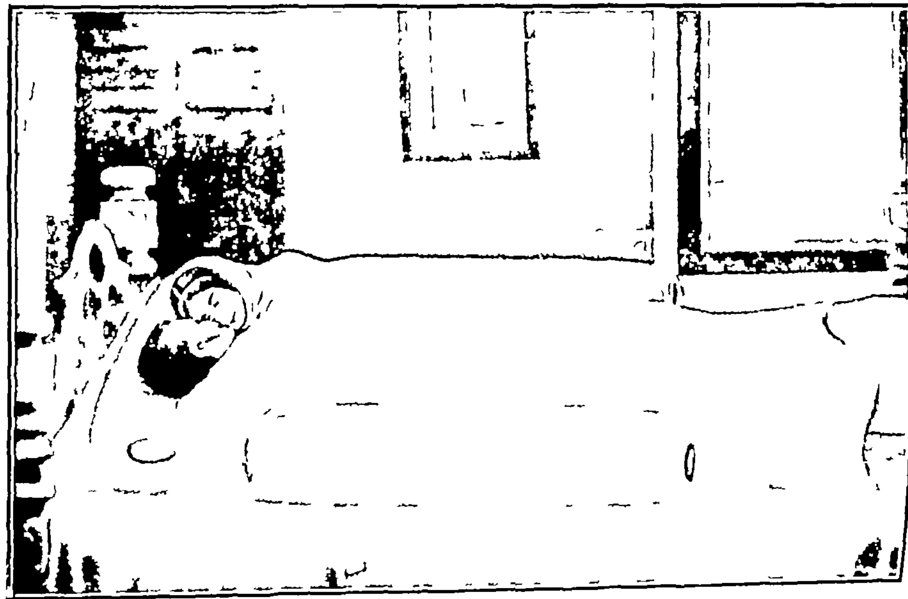
45 In the pitch darkness of the month of Shravana, the loud roaring of the clouds in the sky, the falling of rains with hailstones and the golden flash of lightening give pain and pleasure to a woman thinking of her husband who is travelling on the way

—o˘o—

आसारेण न हर्म्यतः प्रियतमैर्यातुं बहिः शक्यते
शीतोत्कम्पनिमित्तमायतदृशा गाढं समालिङ्ग्यते ॥
जाताः शीतलशीकराश्च मरुतो वात्यन्तखेदच्छिदो
धन्यानां बत दुर्दिनं सुदिनतां याति प्रियासंगमे ॥४६॥

वर्षा की झड़ी में प्रियतम घर से बाहर निकल नहीं सकते। जाड़े के मारे कांपती हुई विशाल नेत्रोंवाली प्राणप्यारी स्त्रियां उनको आलिङ्गन करती हैं और शीतल जल के कणों सहित वायु मैथुन के श्रम से होनेवाले श्रम को मिटा देती है—इस तरह वर्षा के दुर्दिन भी भाग्यवानों के लिये सुदिन हो जाते हैं ॥४६॥

व्याख्या – वर्षाकाल में बाज़ बाज़ वक़्त ऐसी झड़ी लग जाती है कि सूर्य के दर्शन नहीं होते। ऐसे दिनों में, भाग्यवान लोग, दिन निकल आने पर भी, घर से बाहर नहीं जाते अपने पलङ्गों पर ही पड़े रहते हैं। उनकी मृगनयनी स्त्रियां, जाड़े के मारे कांपती हुई उन्हें अपनी छातियों से लगा लेती हैं और मेह की फुहारों से मिली हुई शीतल हवा उनकी मैथुन की थकान को



वर्षा की झड़ी में प्रियतम घर से बाहर जा नहीं सकते। जाड़े से काँपती हुई स्त्रियां उन्हें प्रालिङ्गन करती हैं। [illegible]

मिटा देती है। जिन्होंने पूर्वजन्म में पुण्य किया हैं, उनको वर्षा के बुरे दिन भी इस तरह सुखदाई हो जाते हैं। पुण्यवानों को दुःख में सुख और जङ्गल में मङ्गल होता है।

छप्पय।

प्राविट वर्षत मेह, चढ्यौ दिन शीत अधिकतर।
बाहर नहिं काढि सकत, नेह सों परा कोउ नर।
कम्प होत जब गात, तबहि प्यारी सग सोवत।
उठत अनग तरग, अग में अग समोवत।
रत खेद स्वेद छेदन करत, जालरन्ध्र आवत पवन।
इहि विधि दुर्दिवस हू मोदप्रद, होवहि तिय सग वासि भवन॥

सार---पुण्यवानोंको वर्षाके दुर्दिन भी, अपनी प्राणप्यारियों की सुहबतमें, सुदिन हो जाते हैं।

46 On a rainy day, the lover cannot come out of his house and the long-eyed lady shivering with cold embraces fast her husband, the cold wind blows carrying with it small particles of water that takes away the fatigue arising from copulation Surely, even the evil days of a fortunate man become good in the company of his beloved wife

—o*o—

मिटा देती है। जिन्होंने पूर्वजन्म मे पुण्य किया हैं, उनको वर्षा के बुरे दिन भी इस तरह सुखदाई हो जाते हैं। पुण्यवानों को दुःख में सुख और जङ्गल में मङ्गल होता है।

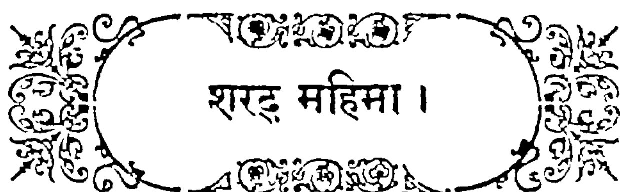
छप्पय।

प्राविट वर्षत मेह, चढ्यो दिन शीत अधिकतर।
बाहर नहिं काढि सकत, नेह सों परा कोउ नर।
कम्प होत जब गात, तबहि प्यारी सग सोवत।
उठत अनग तरग, अग में अग समोवत।
रत खेद स्वेद छेदन करत, जालरन्ध्र आवत पवन।
इहि विधि दुर्दिवस हू मोदप्रद, होवहि तिय सग वासि भवन॥

सार---पुण्यवानोंको वर्षाके दुर्दिन भी, अपनी प्राणप्यारियों की सुहवतमें, सुदिन हो जाते हैं।

46 On a rainy day, the lover cannot come out of his house and the long-eyed lady shivering with cold embraces fast her husband, the cold wind blows carrying with it small particles of water that takes away the fatigue arising from copulation Surely, even the evil days of a fortunate man become good in the company of his beloved wife

—o*o—



शरद् महिमा।

अर्द्धं नीत्वा निशाया सरभससुरतायासखिन्नश्लथांग
प्रोद्भूतासह्यतृष्णो मधुमदनिरतो हर्म्यपृष्ठे विविक्ते॥
संभोगक्लान्तकान्ताशिथिलभुजलतावर्जितं कर्करीतो
ज्योत्स्नाभिन्नाच्छधारंपिबतिनसलिलंशारदंमंदभाग्य॥४७

आधी रात बीतने पर, जल्दी-जल्दी मैथुन करके थक जाने पर और उसी की वजह से असह्य प्यास लगने पर, मदिरा के नशे की हालत में, महल की स्वच्छ छत पर बैठा हुआ पुरुष यदि मैथुन के कारण थकी हुई भुजाओंवाली प्यारी के हाथों से लाई हुई झारी का निर्मल जल, शरद् की चाँदनी में नहीं पीता, तो वह निश्चय ही अभागा है ॥४७॥

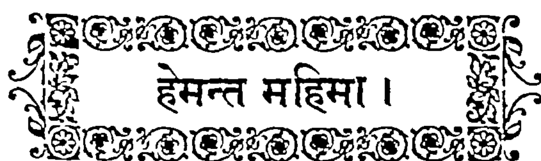
छप्पय।

छके मदन की छाक, मुदित मदिरा के छाके।
करत सुरत रण रंग, अंग कर कछु इक थाके।
पौढ़ रहे लिपटाय, अंग अंगन में उरझे।
बहुत लगी जब प्यास, तबहिं चित चाहत सुरझे।
उठ पियत रात आधी गये, शीतल जल या शरद को।
नर पुण्यवन्त फल लेत हैं, निज सुकृतनहि की फरद को॥४८॥

सार---शरद् की चाँदनी रात में, मैथुन से थकी हुई कामिनी के हाथोंका लाया हुआ जल भाग्यवान् ही पीते हैं।

47 He is surely unfortunate who after the midnight being quite exhausted by speedy copulation, feeling very thirsty and being intoxicated with wine, does not drink the cool and pure autumn water bright as moonlight from the brasen pot on the lonely roof of the palace, brought by the weak hands of his wife, who is also tired on account of copulation

—·—



हेमन्त महिमा।

हेमन्ते दधिदुग्धसर्पिरशना माञ्जिष्ठवासोभृतः
काश्मीरद्रवसान्द्रदिग्धवपुषः खिन्ना विचित्रै रतैः।
पीनोरःस्थलकामिनीजनकृताश्लेषा गृहाभ्यान्तरं
तांबूलीदलपूगपूरितमुखा धन्याः सुखं शेरते ॥४८॥

हेमन्त ऋतु में जो दही, दूध, और घी खाते हैं, मँजीठ के रंग में रँगे हुए वस्त्र पहनते हैं, शरीर में केसर का गाढ़ा-गाढ़ा लेप करते हैं, आसन-भेद से अनेक प्रकार मैथुन करके सुखी होते हैं, पुष्ट जाँघों और सघन कठोर कुचोंवाली स्त्रियोंका गाढ़ आलि-

ङ्गन करते हैं और मसालेदार पान का बीडा चबाते हुए मकान के भीतरी कमरे में सुख से सोते हैं, वे निश्चय ही भाग्यवान् हैं ॥४८॥

महाकवि कालिदास-रचित भी एक श्लोक पढ़िये —

पुष्पासवामोदसुगन्धवक्त्रो, निश्वासवातैः सुरभीकृताङ्गः ।
परस्पराङ्गव्यतिषङ्गशायी, शेते जनः कामशरानुविद्धः ॥

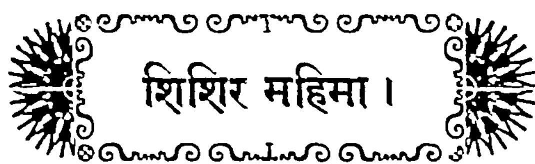
हे प्यारी ! इस हेमन्त ऋतु में, कामार्त्त स्त्री-पुरुष फूलों की शराब की गन्ध से मुँह को और अपने श्वासवायु से अङ्गों को सुगन्धित किये परस्पर लिपटे हुए सोते रहते हैं ।

सोरठा ।

दही दूध घृत पान, वसन मजीठहि रंग के ।
आलिंगन रति दान, केसर चार्चि हिमन्त में ॥४९॥

48 Blessed is the man who, in the winter, eats the food rich with milk, curd and ghee, wears clothes coloured in scarlet-red Manjistha, besmears his body thickly with paste of saffron and musk, is embraced by a woman with swollen breasts after being exhausted by various kinds of sexual intercourse and with his mouth full of betel, sleeps happily in his house

— —



शिशिर महिमा।

चुम्बन्तो गंडभित्तीरलकवति मुखे सीत्कृतान्यादधाना
वक्ष:सूत्कंचुकेषु स्तनभरपुलकोद्भेदमापादयन्त:॥
ऊरूनाकंपयंत: पृथुजघनतटात्स्रंसयंतोंशुकानि
व्यक्तं कांताजनानां विटचरितकृत:शैशिरा वांति वाता:॥४६॥

स्त्रियो के केशयुक्त गालों को चूमता हुआ, ज़ोर के जाड़े के मारे उनके मुँह से "सी-सी" कराता हुआ, आँगी-रहित खुले हुए स्तनों को रोमाञ्चित करता हुआ, पेडुओ को कँपाता हुआ और पुष्ट जाँघों से कपडा हटाता हुआ, शिशिर का वायु जार पुरुषों का सा आचरण करता हुआ वह रहा है॥४८॥

खुलासा—पति स्त्री के साथ जो-जो काम करता है, शिशिर का वायु भी वही सब काम करता है। पति गालों को चूमता है, शिशिर का वायु भी बालों को इधर-उधर करता हुआ गालों को चूमता है। पति मैथुन के आनन्द में मग्न करके स्त्री के मुँह से "सी-सी" कराता है उसी तरह शिशिर का वायु भी जाड़े की अधिकता के मारे उनके मुखों से "सी-सी" कराता है। पुरुष स्तनों को रोमाञ्चित करता है शिशिर-वायु भी वही करता है। पुरुष स्त्री की जाँघों से कपडा हटाता है, शिशिर-वायु भी जाँघों से वस्त्र हटाता है। बहुत क्या—शिशिर का वायु हर तरह

स्त्रियों के साथ पतियों का सा आचरण करता है—पराई स्त्रियों को दिन-दहाड़े बेखटके भोगता है।

छप्पय।

चुम्बन करत कपोल, मुखहि सीत्कार करावत।
हृदय मॉहि धसि जात, कुचन पर रोम बरावत।
जघन को थहरात, बसन हू दूर करत झुक।
लग्यो रहत सग मॉहि, द्वार को रोक रह्यो ढुक।
यह शिशिर पवन विटरूप धर, गलिन-गलिन भटकत फिरत।
मिल रहे नारि नर घरन में, याकी भटभेर न मिरत ॥४९॥

सार—शिशिर ऋतु का वायु, पराई स्त्रियों के साथ, जारों का सा काम करता है।

49 The wind in the winter season blows behaving itself like a lustful man at the time of copulation, it causes the hair of the breast which is without any jacket to stand on end, it kisses the face with flowing hairs and with shivering sound in the mouth just as one hears at the time of copulation, shaking the thighs and making the clothe of [illegible] and loins to fly about.

—

केशानाकुलयन्दृशो मुकुलयन्वासो बलादाक्षिप
न्नातन्वन्पुलकोद्गमं प्रकटयन्नावेगकम्पन्शनै ॥

वारम्वारमुदारसीत्कृतकृतोदन्तच्छदानपीडय-
न्प्रायः शैशिर एष संप्रति मरुत्कांतासु कांतायते ॥५०॥

बालो को बखेरता, आँखो को कुछ-कुछ मूँदता, साडी को ज़ोर से उडाता, देहको रोमाञ्चित करता, शरीर में सनसनी पैदा करता, काँपते हुए शरीर को आलिङ्गन करता, बारम्बार सी-सी कराकर होठो को चूमता हुआ, शिशिरका वायु पतियो का सा आचरण करता है ॥५०॥

खुलासा—शिशिर-वायु स्त्रियों के साथ वेहया, मस्त अथवा शहवतपरस्त पतियों का सा काम करता है।

छप्पय।

विलुलित करत सुकेश, नयन हूँ छिन छिन मूँदत।
बसनन ऐंचे लेत, देह रोमाञ्चन रूँदत।
करत हृदय को कम्प, कहत मुखहू सों सीसी।
पीडा करतहि होठ, बयारहु मार सिरीसी।
यह शतिकाल में जानिये, अद्भुत गति धारन पवन।
निशि द्यौस दुरे दुबके रहो, निज नारी सग निज भवन ॥५०

50 The air in the winter season acts like a husband in the case of women by scattering their hairs, shutting their eyes, forcibly removing their upper garments, causing the hair stand on end, slowly shaking the body by touch and giving pain to the lips by their continuous shivering sounds

—:—

असाराः सन्त्वेते विरतिविरसायासविषया
जुगुप्सन्ता यद्वा ननु सकलदोषास्पदमिति ॥
तथाप्यन्तस्तत्त्वे प्रणिहितधियामप्यनिबल—
स्तदीयोऽनाख्येयः स्फुरतिहृदयेकोऽपिमहिमा ॥५१॥

"सांसारिक विषय-भोग असार, विरतिमें विघ्न करनेवाले और सब दोषों की खान हैं"—इत्यादि निन्दा लोग भले ही करें, फिर भी इनकी महिमा अपार है और इनके शक्तिशाली होने में कोई सन्देह नहीं, क्योंकि ब्रह्मविचार में लीन तत्त्ववेत्ताओं के हृदय में भी ये प्रकाशित होते हैं ॥५१॥

खुलासा—यद्यपि संसारी विषय-भोग असार और थोथे हैं, हमारे वैराग्य या संसार-त्याग में बाधक हैं, सभी दोषों के मूल कारण हैं, जीव का सब तरह से अनहित करते हैं, मनुष्य को निर्लज्ज और मति-हीन करते एवं ज्ञान को धो बहाते हैं। इतने दोष होने पर भी, कहना पड़ता है कि, ये बड़े ही शक्तिशाली और अपार महिमावान हैं। इनकी शक्ति और सामर्थ्य का वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। क्योंकि जिन्होंने संसार त्याग दिया है, जो दिनरात मूलकारण की खोज में लगे रहते हैं, उन तत्त्ववेत्ता ब्रह्मज्ञानियों के हृदय में भी ये कामाग्नि सन्दीपन कर देते हैं।

छप्पय।

यद्यपि भोग निस्सार, विरति में विघ्न करैं नित।
सब दोषनि की खानि, जीव को साधैं अनहित।

करैं निलज मतिहीन, ज्ञानकू धोय बहावैं ।।
सर्वस देहिं नसाय, बुरो जग बीच कहावै।
यदि निन्दा याकी करै कोउ, तद्यपि है महिमा बहुत ।
हिय बसत ब्रह्मज्ञानीहुँके, तहँ पामरकी गिन्तीहि कुत ॥५१

सार---संसारी विषय-भोग अत्यन्त बलवान हैं। औरों की तो क्या चलाई, ये संसार-त्यागी ब्रह्मज्ञानियों के हृदयोंमें भी कामाग्नि प्रज्वलित कर देते हैं।

51 If these objects of pleasure be unsubstantial or such as may take us far from abondoning the world and if the people blame them thinking them to be the seat of all vices, yet great and indescribable is their power in as much as they conquer even those who have attained high spiritual knowledge

— —

भवन्तो वेदान्तप्रणिहितधियामाप्तगुरवो
विदग्धालापानांवयमपि कवीनामनुचराः ॥
तथाप्येतद्भूमौ न हि परहितात्पुण्यमधिकं
नचास्मिन्संसारे कुवलयदृशो रम्यमपरम् ॥५२॥

आप वेदान्तवेत्ताओं के माननीय गुरु हो और हम उत्तम काव्य-रचयिता कवियों के सेवक हैं, तोभी हमें यह बात

असारा सन्त्वेते विरतिविरसायासविषया
जुगुप्सन्ता यद्वा ननु सकलदोषास्पदमिति ॥
तथाप्यन्तस्तत्त्वे प्रणिहितधियामप्यनिबल—
स्तदीयोऽनाख्येयः स्फुरतिहृदयेकोऽपिमहिमा ॥५१॥

"सांसारिक विषय-भोग असार, विरतिमें विघ्न करनेवाले और सब दोषों की खान है"—इत्यादि निन्दा लोग भले ही करें, फिर भी इनकी महिमा अपार है और इनके शक्तिशाली होने में कोई सन्देह नहीं, क्योंकि ब्रह्मविचार में लीन तत्त्ववेत्ताओं के हृदय में भी ये प्रकाशित होते हैं ॥५१॥

खुलासा—यद्यपि संसारी विषय-भोग असार और थोथे हैं, हमारे वैराग्य या संसार-त्याग में बाधक हैं, सभी दोषों के मूल-कारण हैं, जीव का सब तरह से अनहित करते हैं, मनुष्य को निर्लज्ज और मति-हीन करते एवं ज्ञान को धो बहाते हैं। इतने दोष होने पर भी, कहना पड़ता है कि, ये बड़े ही शक्तिशाली और अपार महिमावान हैं। इनकी शक्ति और सामर्थ्य का वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। क्योंकि जिन्होंने संसार त्याग दिया है, जो दिनरात मूलकारण की खोज में लगे रहते हैं, उन तत्त्ववेत्ता ब्रह्मज्ञानियों के हृदय में भी ये कामाग्नि सन्दीपन कर देते हैं।

छप्पय।

यदपि भोग निस्सार, विरति में विघ्न करैं नित।
सब दोषन की खानि, जीव को मारैं अनहित।

करें निलज मतिहीन, ज्ञानकू धोय बहावैं ।।
सर्वस देहिं नसाय, बुरो जग बीच कहावैं ।
यदि निन्दा याकी करै कोउ, तद्यपि है महिमा बहुत ।
हिय बसत ब्रह्मज्ञानीहुँके, तहँ पामरकी गिन्तीहि कुत ॥५१

सार---संसारी विषय-भोग अत्यन्त बलवान हैं। औरों की तो क्या चलाई, ये संसार-त्यागी ब्रह्मज्ञानियों के हृदयोंमें भी कामाग्नि प्रज्वलित कर देते हैं।

51 If these objects of pleasure be unsubstantial or such as may take us far from abondoning the world and if the people blame them thinking them to be the seat of all vices, yet great and indescribable is their power in as much as they conquer even those who have attained high spiritual knowledge

—:—

भवन्तो वेदान्तप्रणिहितधियामाप्तगुरवो
विदग्धालापानांवयमपि कवीनामनुचराः ॥
तथाप्येतद्ब्रूमो न हि परहितात्पुण्यमधिकं
नचास्मिन्संसारे कुवलयदृशो रम्यमपरम् ॥५२॥

आप वेदान्तवेत्ताओं के माननीय गुरु हो और हम उत्तम काव्य-रचयिता कवियों के सेवक हैं, तोभी हमें यह बात

सार—परोपकार से बढ़कर पुण्य नहीं है और स्त्री-भोग से बढ़कर सुख नहीं है।

52 If you are the respected preceptor of Vedantists, I am also the follower of poets who take delight in beautiful epic poems Nevertheless, know it for certain that in this world, there is no higher virtue than doing good to others and nothing more beautiful than a lotus-eyed woman

—※—

किमिह बहुभिरुक्तैर्युक्तिशून्यैः प्रलापै-
र्द्वयमिह पुरुषाणां सर्वदा सेवनीयम् ॥
अभिनवमदलीलालालसं सुंदरीणां
स्तनभरपरिखिन्नं यौवनं वा वनं वा ॥५३॥

युक्तिशून्य वृथा प्रलाप से तो क्या प्रयोजन ? इस जगत् में दो ही वस्तुएँ सेवन करने योग्य हैं:—(१) नवीन मदान्ध लीलाभिलाषिणी और स्तनभार से खिन्न सुन्दरी स्त्रियों का यौवन, अथवा (२) वन ॥५३॥

खुलासा—वाहियात और वे-सिर पैर की वकवाद से कोई फ़ायदा नहीं। हमारी समझ में तो इस जगत् में दो ही चीजें पुरुषों के सेवन करने योग्य हैं.—(१) नवयौवना स्त्रियाँ, अथवा (२) वन।

यदि मनुष्य ससारत्यागी न होना चाहे, ससार में ही रहना

चाहे, इस दुनिया के विषय-भोग भोगना चाहें, तो कमलनयनी नवयौवनाओं के यौवन की बहार लूटे। चाहे इनका आनन्द अनित्य और परिणाममें दुःखमूलक ही है, पर संसारियों के लिये, इस संसार में, इनसे बढ़कर दूसरी चीज ही नहीं।

देखिये रसिक-शिरोमणि पण्डितेन्द्र जगन्नाथ महाराज कहते हैं —

तया तिलोत्तमीयन्त्या मृगशावकचक्षुषा।
ममाऽयं मानुषो लोको नाकलोक इवाभवत् ॥

उस तिलोत्तमा नामक अप्सरा के समान आचरण करनेवाली मृगशावकनयनी के कारण से मेरा यह मृत्युलोक स्वर्गलोक के समान हो गया है।

सच है, जिसके घर में अप्सरा समान नवयुवती है, उसे इस पृथ्वी पर ही स्वर्ग है। स्वर्ग में इससे बढ़कर और क्या रक्खा है? कार्लाइल महोदय कहते हैं —"If in youth the universe is majestically unveiling and everywhere heaven revealing itself on earth, nowhere to the young man does this heaven on earth so immediately reveal itself as in the young maiden." यदि यौवन में विश्व सौन्दर्य के साथ अपने को प्रकट करता है, यदि स्वर्ग पृथ्वी पर प्रादुर्भूत होता है, तो युवक के लिये स्वर्गीय प्रादुर्भाव युवती में [illegible] होता है [illegible] अन्यत्र नहीं।

किन्तु इनमे रहकर आगे-पीछे का सभी ख़याल भुला देना भला नही, इनको भोगो और अवश्य भोगो , कोई क्षति नहीं, पर अपनी आगेकी यात्राका ध्यान ज़रूर रक्खो , क्योंकि यहाँ का मुकाम थोडे ही दिनो का है। जो अपनी आगे की सफर के लिये भी पहले से ही प्रबन्ध करते हैं, उन्हें जो स्वर्गीय सुख यहाँ मिल रहे हैं, वह आगे भी मिलेंगे। यहाँ स्वर्ग भोगा और मरने पर नरक में डाले गये, इसमें तो चतुराई नहीं। इस लिये ससारियों के लिये स्त्री-भोग के साथ पुण्य-सञ्चय भी करते जाना चाहिये। सब तरह के पुण्यों में परोपकार सर्वश्रेष्ठ पुण्य है, इस लिये यही करना उचित है। जो अपनी ही नवयौवना के साथ भोग विलास करेंगे और साथ-साथ परोपकार पुण्य भी सञ्चय करेंगे, उन्हें कोई भय नहीं। वे तपस्वियों के तपस्वी समझे जायँगे और उन्हें अगले जन्म में फिर स्वर्ग-सुख-दायिनी कमलनेत्री सुन्दरियाँ मिलेंगी। यदि वे स्वर्गलोकमें जन्म लेंगे तो वहाँ भी हूरें या अप्सरायें मिलेंगी , पर विना पुण्य सञ्चय के वे यहाँ मिलेंगी न वहाँ। कहा है —

क्या वह दुनिया, जिसमें कोशिश हो न दीं के वास्ते।
वास्ते वॉ के भी कुछ—या सब यहीं के वास्ते ॥ज़ौक़॥

इस ससारमें आकर कुछ परलोक बनाने की भी फिक्र करनी चाहिये। यह उचित नहीं, कि उधर की फिक्र बिल्कुल ही छोड दी जाय।

नाम मंजूर है, तो फ़ैज़ के असबाब बना।
पुल बना, चाह बना, मसजिदो तालाब बना ॥जौक़॥

अगर तू चाहता है कि, तेरा नाम संसार में प्रतिष्ठा के साथ लिया जाय तो तू परोपकार कर, पुल बना, कूए बना, मन्दिर और तालाब बना।

अब रही उनकी बात; जो इस संसारकी असारतासे वाकिफ हो गये हैं, जिन का मन विषय-भोगों से हट सा गया है, जिन्हें विषय-विषों से घृणा हो गई है, उन्हें सच्चे दिल से विषयों को त्याग देना चाहिये; मन में कभी भूल कर भी विषयों का ध्यान न करना चाहिये। ऊपर से संन्यासी बनना और भीतर विषयों की चाह रखना, बहुत ही खराब है।

मनमें एक बात स्थिर कर लेनी चाहिये। इस जगतमें स्थिरबुद्धि का ही सदा भला होता है, चञ्चल बुद्धि का सर्वनाश होता है। बुद्धि को स्थिर करके किसी एक बात पर जम जाना चाहिये। चाहे भोग ही भोगे जाय अथवा योग ही साधा जाय। रसिक कवि ने खूब कहा है

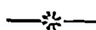
दोहा।

रसिक सुजन तुम जान दे, मन गजगन को मार।
राग भोग में डूब लिया, यह संसार असार।

[illegible]
[illegible] ॥१०३॥

सार---मनुष्योंको या तो नवीनायें भोगनी चाहियें अथवा संसारके झगड़े छोड़, वन में जा, तप करना चाहिये ।

53. What is the use of so much unreasonable wild talk? There are only two things which a person should always desire enjoyment of,--viz, (1) the youth of a beautiful lady who is desirous of new amorous enjoyments and is bent down under the load of her breasts or (ii) the forest.



सत्यं जना वच्मि न पक्षपाताल्लोकेषु सर्वेषु च तथ्यमेतत् ॥
नान्यन्मनोहारि नितम्बिनीभ्यो दुःखैकहेतुर्न च कश्चिदन्यः ॥५४॥

हे मनुष्यो! हम पक्षपात त्यागकर सच कहते हैं कि, इस संसार में स्त्रियों से बढ़कर न कोई मन को हरनेवाली वस्तु है और न कोई दुःखदायी वस्तु है ॥५४॥

खुलासा—इस जगत् में सुख और दुःख दोनों ही का कारण एकमात्र मनोहर नितम्बों वाली स्त्री है। औरभी स्पष्ट शब्दों में यों कह सकते हैं कि, स्त्री ही सुख देनेवाली और स्त्री ही दुःख देने वाली है यानी सुख और दुःख दोनों का हेतु एकमात्र स्त्री ही है। साधारण लोगोंमें एक कहावत है कि, स्त्री, सम्पत्ति और सुरा,— इन तीनों में दुःख और सुख दोनों ही हैं।

निस्सन्देह, इस जगत्में, पुरुष के लिये स्त्री से बढ़कर सुखदायी

और मनोहर दूसरी वस्तु नहीं। स्त्री अपने मधुर वचनों, सुन्दर हाव-भाव और उत्तम सेवा से पुरुष के शारीरिक और मानसिक क्लेशों को शीघ्र ही हर लेती है। स्त्री विपद् में सच्चे मित्र की तरह परामर्श देती और धैर्य्य धारण कराती है। और सब विपद्में पुरुष को त्याग देते हैं, पर यह अपने पति को नहीं त्यागती। भोजन के समय, जिस हित और प्रेमसे ये खिलाती-पिलाती है, उस तरह, सिवा जननी के, और कोई भी नहीं खिलाता पिलाता। सम्भोग-कालमें यह, वेश्या की तरह, अपने पति का सब तरह से मनोरञ्जन और उसके वंशकी वृद्धि करती है; यानी स्त्री से ही पुत्र पौत्रादि होते हैं। मनुष्य कैसा ही दुःखित क्यों न हो, स्त्री घर में आते ही उस के सारे खेद और श्रम को हर लेती तथा उसे नरक से बचाती और स्वर्ग में ले जाती है। स्त्री से ही राम, कृष्ण भगीरथ, ध्रुव, प्रह्लाद, अर्जुन, भीम, बुद्ध, शङ्कराचार्य्य, दयानन्द और गांधी जैसे महापुरुष पैदा हुए और होते हैं अतः यह स्पष्ट है कि, स्त्रीके समान सुखदायी इस जगत में दूसरी चीज नहीं। मनोहर यह इतनी होती है कि, अपनी एक मुसकान में ही पुरुषका मन हर लेती है। पर ये सब सुख तभी मिलते हैं, जब कि स्त्री सती साध्वी और सच्ची पतिव्रता होती है। यदि स्त्री अगर कुलटा व्यभिचारिणी अथवा कर्कशा होती है तो पुरुष के लिये यही इसी लोकमें साक्षात नरक हो जाता है। पर स्त्री पतिव्रता किसी किसी को पुण्यात्मा को मिलती है।

और शोक-चिन्ता प्रभृति सता नहीं सकते . क्योंकि पतिव्रता नरक को स्वर्गमें, दुःखको सुख में, विपद्‌को सम्पद्‌में और शोक को हर्षमें परिणत कर देने की क्षमता रखती है। वह घरके काम-काज करती, पुत्र-कन्याओं को पालती, उन्हें सुशिक्षा देती और कुपथगामी पति को सुपथगामी बना देती है। पुरुष की कडी कमाई का पैसा बड़ी ही किफायत से खर्च करती, और उसे नष्ट होने से बचाती तथा पति का शोक हर लेती है। स्त्रियों के सम्बन्ध में गोल्डस्मिथ महोदय ने, जो इँगलैण्ड के एक नामी विद्वान् थे, खूब कहा है। हम अपने पाठकों के ज्ञानवर्द्धनार्थ आपके अनमोल वचन नीचे देते हैं —"Women, it has been observed, are not naturally formed for great cares themselves, but to soften ours" यह देखा गया है, कि स्त्रियाँ महत् चिन्ताओं को स्वयं सहने के लिये नहीं, वरन् हमारी चिन्ताओं को घटाने के लिये बनाई गई हैं। आपने एक और जगह लिखा है :—"She who makes her husband and her children happy, who reclaims the one from vice and trains up the other to virtue, is a much greater character than ladies described in romance, whose whole occupation is to murder mankind with shaft from their quiver or their eyes" जो अपने पति और बच्चों को सुखी कर सकती है, जो अपने खाविन्द को कुमार्ग से हटाकर सुमार्ग पर चला

सकती है, जो अपने बालकों को सद्गुणों की शिक्षा दे सकती है, वह कल्पित कथाओं या उपन्यासों में वर्णित उन स्त्रियों से अच्छी है, जो अपने तरकश या नेत्रों के बाणों द्वारा मानवजाति को वश करना ही अपना कर्त्तव्य समझती हैं।

संसार में रूप का आदर है। रूप प्राणिमात्र को अपनी ओर खींचता है, पर रूप से गुण की पूजा अधिक होती है। रूप नेत्रेन्द्रिय को प्रसन्न करता है, पर गुण आत्मा पर अधिकार जमाता है। पोप महाशय कहते हैं—"Beauties in vain their pretty eyes may roll, charms strike the sight but merit wins the soul" सुन्दरियाँ वृथा ही अपने सुन्दर नेत्रों को इधर-उधर चलाती हैं। सौन्दर्य्य का प्रभाव नेत्रों पर पड़ता है, किन्तु गुण आत्मा को जीत लेता है। मतलब यह, कि रूपवती से गुणवती रमणी कहीं भली होती है, पर जिसे ईश्वर ने ऐसी नारी दी है, जिस में रूप के साथ सुन्दर गुणों का भी समावेश है वह निश्चय ही पूर्व जन्म का तपस्वी और पुण्यात्मा है। उसे इसी पृथ्वी पर ही स्वर्ग है।

करने योग्य कर्म करता है। बहुत कहाँ तक कहे, स्त्रीके लिये पुरुष नीच-से-नीच कर्म करता, जेल जाता और फाँसी चढ़ता है। अगर इस जगत् मे चन्द्रानना कमलनयनी कामिनियाँ न होतीं, तो कौन बुद्धिमान् राजाओं और अमीरों की सेवा में अनेक प्रकार के कष्ट उठाकर अधीर-चित्त होता ?

यह सब तो पुरुष स्त्री की मोह--माया में फँस स्वय करता और स्वय दुःख भोगता है। पर यदि दुर्भाग्य से स्त्री कुलटा होती है, तब तो वह घर में ही नाना प्रकार के कष्ट और यन्त्रणाये भुगाती है। कुलटा कामिनी का शरीर यदि पुष्पवत् कोमल भी होता है, तो उस का हृदय वज्रवत् कठोर होता है। उस के दिलमें दया-माया और स्नेह नाम को भी नहीं होता। वह सच्ची पिशाचिनी होती है। शम्बरासुर और विचित्ति की माया को समझना सहज है, पर कुलटा की माया को समझना कठिन है। वह अबला दीखने पर भी सबला और गौ होने पर भी बाघ होती है। वह निरङ्कुश होकर पुरुषको नाना प्रकारसे नचाती और सेवक की तरह उससे काम कराती है। वृथा विलास-चिह्न दिखाकर उस से पैर दबवाती और अपनी इच्छा होनेसे उसका रक्त-मांस चूसती है। ज़रा सी फरमायश पूरी न होनेसे और घरकी एक चीज भी समय पर न आनेसे उसके प्राण ले लेती और उसके कलेजे को वाक्य-बाणों से बिद्ध करके चलनी बना देती है। बहुत कहाँ तक कहें, नरक के दुःख भी कुलटा के दिये दुःखों के सामने लजा जाते हैं।

सारांश यही है, कि अगर स्त्री नवयौवना, रूपवती और पतिव्रता

हो तो पुरुषको जो कष्ट उठाने पड़ते हैं, उनमे उसे उतना कष्ट या मनोवेदना नहीं होती। वह स्वयं बाहर के कष्टों को हर लेती है। पर पतिव्रताके होने पर भी, पुरुष कष्ट और पराये अपमान से बच नहीं सकता। इसलिये इसमें शक नहीं कि, स्त्री सुख और दुःख दोनोंहीकी हेतु है यानी स्त्रीसे सुख भी है और दुःख भी है। सुख थोड़ा और नाम मात्र को है और वह भी अज्ञानी के लिये। ज्ञानी और विरागी की नजरमे तो दुःख ही दुःख है इसलिये जिन्हें कष्ट और झगड़ों से बचना हो, जिन्हें आत्माका कल्याण करना हो, वे इस मनोहर विष-बेल से बचें। फोन्टेनेली महोदय कहते हैं -

"A beautiful women is the "hell" of the soul' the 'purgatory" of the purse and the "paradise" of the eyes" सुन्दरी कामिनी आत्मा का नरक, सम्पत्ति का नाश और नेत्रों की स्वर्ग है। गिरिधर कविराय कहते हैं -

कुण्डलिया।

दोहा ।

कहहिं सत्य तज पक्ष हम, लोक विमोहन नारि ।
अरु या सों दुखद अपर, नहिं कछु लेहु विचारि ॥५४॥

सार---स्त्री से बढ़कर सुखदायी और दुख-दायी और कोई नहीं ।

54 O men, I tell you the truth and without any partiality that, in this world, there is nothing so attractive to the mind as the women and again, nothing so painful also

—:—

तावदेव कृतिनामपि स्फुरत्येष निर्मलविवेकदीपकः ॥
यावदेव न कुरंगचक्षुषां ताड्यते चपललोचनाञ्चलै ॥५५॥

विवेकियों के हृदय में निर्मल विवेकरूपी दीपक का प्रकाश तभी तक रहता है, जब तक कि मृगनयनी स्त्रियों के चञ्चल नेत्र रूपी आँचल से वह बुझाया नहीं जाता ॥५५॥

खुलासा—अन्त करण में कामादि मल रहित निर्मल विवेक का दीपक उसी समय तक जलता है, जब तक कि मृगलोचनी के चञ्चल नेत्र रूपी आँचल की फटकार नहीं लगती। और भी स्पष्ट शब्दोंमें यों कह सकते हैं कि, स्त्रियोंके कटाक्षसे विवेकी पुरुषों का भी विवेक ध्वंस हो जाता है। "भामिनी विलास" में लिखा है —

हो, तो पुरुषको जो कष्ट उठाने पड़ते हैं, उनसे उसे उतना कष्ट या मनोवेदना नहीं होती। वह स्वयं बाहर के कष्टों को हर लेती है। पर पतिव्रताके होने पर भी, पुरुष कष्ट और पराये अपमान से बच नहीं सकता। इसलिये इसमें शक नहीं कि, स्त्री सुख और दुःख दोनोंही की हेतु है यानी स्त्रीसे सुख भी है और दुःख भी है। सुख थोड़ा और नाम मात्र को है और वह भी अज्ञानी के लिये। ज्ञानी और विरागी की नज़रमें तो दुःख ही दुःख है, इसलिये जिन्हें कष्ट और झंझटों से बचना हो, जिन्हें आत्माका कल्याण करना हो, वे इस मनोहर विष-बेल से बचें। फौन्टेनेली महोदय कहते हैं—"A beautiful women is the "hell" of the soul' the "purgatory" of the purse and the "paradise" of the eyes" सुन्दरी कामिनी आतमा का नरक, सम्पत्ति का नाश और नेत्रों की स्वर्ग है। गिरिधर कविराय कहते हैं.—

कुण्डलिया।

तीनों मूल उपाधि की, जर जोरू जामीन।
है उपाधि तिनके कहाँ, जाके नहिं ये तीन।
जाके नहिं ये तीन, हृदय में नाहिन इच्छा।
परम सुखी सो जानु, त्याग याचि ले भिक्षा।
कह गिरिधर कविराय, एक आनन्द मन भीनो।
निर्भय निशि मग्न, सोवत तजकर तीनों॥

दोहा ।

कहहिं सत्य तज पक्ष हम, लोक विमोहन नारि ।
अरु या सों दुखद अपर, नहिं कछु लेहु विचारि ॥५४॥

सार---स्त्री से बढ़कर सुखदायी और दुखदायी और कोई नहीं ।

54 O men, I tell you the truth and without any partiality that, in this world, there is nothing so attractive to the mind as the women and again, nothing so painful also

— ◦ —

तावदेव कृतिनामपि स्फुरत्येप निर्मलविवेकदीपकः ॥
यावदेव न कुरंगचक्षुषां ताड्यते चपललोचनाञ्चलै ॥५५॥

विवेकियों के हृदय में निर्मल विवेकरूपी दीपक का प्रकाश तभी तक रहता है, जब तक कि मृगनयनी स्त्रियों के चञ्चल नेत्र रूपी आँचल से वह बुझाया नहीं जाता ॥५५॥

खुलासा—अन्त करण में कामादि मल रहित निर्मल विवेक का दीपक उसी समय तक जलता है, जब तक कि मृगलोचनी के चञ्चल नेत्र रूपी आँचल की फटकार नहीं लगती। और भी स्पष्ट शब्दोंमें यों कह सकते हैं कि, स्त्रियोंके कटाक्षसे विवेकी पुरुषों का भी विवेक ध्वंस हो जाता है। "भामिनी विलास" में लिखा है —

तदवधि कुशलीपुराणशास्त्रस्मृति-
शतचारुविचारजो विवेक ।
यदवधि न पद दधाति चित्ते हरिण-
किशोरदृशो दृशोर्विलास ॥

कुशलता और पुराण-शास्त्र तथा स्मृतियोके अनेक चारु विचारों से उत्पन्न हुआ विवेक तभी तक है, जब तक मृगके से बच्चो की आँखों वाली कामिनी के नेत्र-विलास हृदय मे प्रवेश नहीं करते अर्थात् स्त्री की तीखी नजर पडते ही विवेक और चतुराई सब काफूर हो जाते हैं।

उस्ताद ज़ौक भी कुछ ऐसी ही बात कहते हैं—

ऐ ज़ौक़! आज सामने उस चश्मे मस्त के।
कातिल सब अपने होश—ये दानिशवरी हुए॥

ऐ ज़ौक़! उस की मदनमत्त मनोहर आँख के सामने आज सारी योग्यता और बुद्धिमत्ता का अन्त होगया।

सच है, जब तक चञ्चल नेत्रोंवाली कामिनीकी नज़रसे नज़र नहीं मिलती, तभी तक विवेक, बुद्धि और विचारों का अस्तित्व समझिये। उसकी नज़र से नज़र मिलते ही इनका खातमा हो जाता है।

दोहा ।

सार --मृगनयनी नवयुवतीसे चार नज़र होते हीविवेक और बुद्धि सब हवा हो जाते हैं।

55 The light of reasoning flickers in the heart of a wise man only so long as it is not put out by the moving eyes of a lotus-eyed woman as if by a scarf.

—※—

वचसि भवति संगत्यागमुद्दिश्य वार्त्ता
श्रुतिमुखरमुखानां केवलं पण्डितानाम् ॥
जघनमरुणरत्नग्रंथिकाञ्चीकलापं
कुवलयनयनानां को विहातुं समर्थः ॥५६॥

शास्त्रवक्ता पण्डितों का स्त्री-त्याग का उपदेश केवल कथन-मात्र ही है। लाल रत्न-जटित करधनीवाली कमलनयनी स्त्रियोंकी मनोहर जङ्घाओं को कौन त्याग सकता है? ॥५६॥

खुलासा—पाण्डित्य का ढकोसला दिखानेवाले पण्डित वास्तव में स्त्री-त्यागका उपदेश नहीं देते; खाली अपना पाण्डित्य दिखाने के लिये ज़बान से बकते हैं। वे गोस्वामी तुलसी दासजी की इस कहावत के अनुसार "परोपदेश कुशल बहुतेरे, आप चलहि ऐसे नर न घनेरे" लोगों को उपदेश भर ही देते हैं, आप खुद अमल नहीं कर सकते। वे किसी ललित ललना के कटाक्षवाणोंसे विद्ध नहीं हुए हैं, इसीसे बातें बनाते हैं, जब स्वयं उन पर पड़ेगी, तब सब शास्त्रों को भूल जायँगे। महाकवि दाग ने ऐसों ही के लिए कहा है.—

दिललगी दिल्लगी नहीं नासह ।
तेरे दिल को अभी लगी ही नहीं ॥

उपदेशकजी ! दिललगी दिल्लगी नहीं है, उसी समय तक आप इसे दिल्लगी समझते हैं, जब तक कि आपके दिलको लगी नहीं है। अगर किसी से दिल लगा, तो आप का सारा पाण्डित्य हवा हो जायगा।

सौन्दर्य्य मामूली चीज़ नहीं, ऐसा कौन है, जिसे सौन्दर्य्य अपनी ओर न खींच सके? मिष्टर क्रेण्डन कहते हैं—"A beautiful object doth attract the sight of all men, that it is no man's power not to be pleased with it सुन्दर पदार्थ में मनुष्यमात्र की दृष्टि को आकर्षित करने की इतनी प्रबल शक्ति है कि, कोई भी मनुष्य उस से प्रसन्न हुए बिना रह नहीं सकता। सुन्दरता मनुष्य के दिमाग़ में चढ़ जाती और उसे नशे से मस्त कर देती है। देखनेवाले का दिल वश में नहीं रहता। जिम्मरमैन महोदयने ठीक ही कहा है—"Beauty is worse than wine; it intoxicates both holder and the beholder "सौन्दर्य्य शराबसे भी बुरा है। यह उसके रखनेवाले और उसके देखनेवाले दोनोंको मतवाला कर देता है। सुन्दरियोंके सौन्दर्य्यको देखकर, मन और इन्द्रियोंको वशमें रखनेके पूर्ण अभ्यासी भी, अपने मन को वशमें रखने में असमर्थ होते हैं। पुराणोंमें लिखा है कि, पूर्व्वकाल में, मरीचि, शृंगी, विश्वामित्र और पराशर जैसे महामुनि, जो केवल वृक्षों के पत्ते और हवा भक्षण करके जीते थे,

इन मोहिनियोंको सामने पाकर इन्हें त्याग न सके ; तब साधारण लोगों की क्या गिन्ती ? शैक्सपियर ने कहा है.—"Beauty is a witch against whose charms faith melteth into blood" सुन्दरता ऐसी जादूगरनी है कि, उसके जादू से धर्म-ईमान गल कर खून हो जाते हैं ; यानी रूप के सामने धर्म-ईमान नहीं ठहरता, न जाने कहाँ काफूर हो जाता है ?

कुण्डलिया ।

पण्डित-जन जब कहत हैं, तिय ताजिबे की बात ।
करत वृथा बकवाद वह, तजी नैक नहिं जात ।
तजी नैक नाहिं जात, गात-छवि कनक बरन वर ।
कमल-पत्र-सम नैन, बैन बोलत अमृत झर ।
सोहत मुख मृदु हास, अंग आभूषण मंडित ।
ऐसी तिय को तजै, कौनसो है वह पण्डित ? ॥५६॥

सार—सुन्दरी नवयौवना कामिनी को सामने पाकर त्यागना—खेल नहीं—टेढ़ी खीर है। इसकी निन्दा करनेवाले चाहे अनेक हों, पर त्यागनेवाला एक भी नहीं।

56 It is only in the speeches of the talkative scholars that the abandonment of the company of a woman is advocated but who is strong-minded enough to give up in actual

practice the hips of lotus-eyed women wearing girdle set with red jewels.

—:—

स्वपरप्रतारकोऽसौ निन्दति योऽलीकपण्डितो युवतीः॥
यस्मात्तपसोऽपि फलं स्वर्गस्तस्यापि फलं तथाऽप्सरसः५७

जो विद्वान् युवतियों की निन्दा करता है, वह निश्चय ही झूठा पण्डित है। उसने पहले आप धोखा खाया है और अब दूसरों को धोखा देता है, क्योंकि अनेक प्रकार की तपस्याओं का फल स्वर्ग और स्वर्ग का फल अप्सरा-भोग है।

खुलासा—जो विद्वान् पण्डित नवयौवना कामिनियोंकी निन्दा करते हैं, उनमें अनेक दोष बताते हैं, वे पागल हैं। वे स्वर्ग की प्राप्ति के लिये अनेक प्रकार की तपश्चर्य्या और जप-तप करते हैं। तप सिद्धि होने पर स्वर्गमें जाना चाहते हैं। वहाँ उनको भोगनेके लिये अप्सरायें मिलेंगी ही और वे उन्हें भोगेंगे; तब यहीं उनके भोगने में कौनसी बुराई है? यह तो सीधी सी बात है कि, तपस्या का फल स्वर्ग है और स्वर्ग का फल अप्सरायें।

"आप पाँडे जी बैंगन खावें, औरों को परमोध बतावें" ऐसे परोपदेशक दुनिया में बहुत हैं। आप वही काम करते हैं, पर औरों को मना करते हैं। ऐसे महापुरुषों के सम्बन्ध में महाकवि दाग कहते हैं—

हूर के वास्ते ज़ाहिद ने इबादत की है।
सैर तो जब है कि जन्नत में न जाने पावे॥

भक्त महाशयने स्वर्गीय अप्सराओ या हूरों के भोगने के लिये ईश्वर की उपासना की है। बड़ा मज़ा हो, अगर ये स्वर्ग में जाने ही न पावें।

महाकवि ज़ौक़ कहते हैं—

कब हक़परस्त है जाहिदे जन्नतपरस्त है।
हूरों पै मर रहा है यह शहवतपरस्त है॥

कौन कहता है, भक्तजी ईश्वर-उपासक हैं? ये तो घोर कामी और इन्द्रिय दास हैं। स्वर्ग की अप्सराओं पर मर रहे है। जो स्वर्ग की कामना से तप करते हैं, उनकी स्त्री-निन्दा ध्यान देने योग्य नहीं वे वृथा निन्दा करते हैं। आप स्वर्गमे जाकर स्त्रीही भोगेंगे और करेंगे क्या? स्वर्गीय अप्सरायें या हूरें भी तो आखिर स्त्रियाँ ही हैं न? ऐसे धोखेबाज़ों की बातों में न आना चाहिये।

उस्ताद ज़ौक ने भी कहा है—

रेशे सफेद शेख मे है जुल्मते फरेब।
इस मक्र चाँदनी पर न करना गुमान ऐ सुबह॥

शेखजी की सफेद दाढ़ी में कपटका अन्धकार छिपा हुआ है। इस झूठी चाँदनी पर प्रातःकाल की सफेदी का धोखा मत खाना, यानी इनकी बात मान, कामिनियों को भोगना न छोड़ना। ऐसे धोंधा-वसन्त अपनी सिद्धाई जमाने को कपट से ऐसी बेतुकी बातें कहते हैं और कुछ ऐसे भी होते हैं, जिन को इन नारी-रत्नों की क़द्र ही नहीं मालूम. इससे इनकी निन्दा करने

हैं। जिसे जिसकी कद्र हीं नहीं मालूम, वह तो उसकी निन्दा ही करेगा। जगल में पड़े हुए गजमोतियों को भीलनी पाकर भी फेंक देती है, पर उनकी क़ीमत जाननेवाला जौहरी उन्हें उठा कर छाती से लगा लेता है। जिसने शराब नहीं पीयी, जिसे शराब का मजा नहीं मालूम, वह शराब की निन्दा ही करता है। उसे कोई लाख समझावे, वह नहीं समझता। ऐसे ही मौकेका एक शेर महाकवि दागने कहा है.—

लुत्फ़ मैं तुझ से क्या कहूँ जाहिद।
हाय! कम्बख़्त तूने पी ही नहीं।

हे भक्त! मैं तुझे शराब का मजा कैसे बताऊँ? कम्बख्त तूने उसे पिया ही नहीं। जो मदिरा पीता है और नाजनियों को भोगता है, वहीजानता है कि, उनमें क्या मजा है, उस मजेका हाल ज़बानसे बताना कठिन ही नहीं, असम्भव है। सच मानिये, पृथ्वी पर अगर स्वर्ग है, तो कमलनयनी उठती जवानी की सुन्दरियों में ही है।

दोहा।

नारिन की निन्दा करत, ते पण्डित मतिहीन।
स्वर्ग गये तिनको सुनें, सदा अप्सरा लीन ॥५७॥

सार---स्त्रियों की निन्दा करने वाला पाखण्डी है। आप उन्हें भोगना चाहता है, पर दूसरों को रोकता है।



मतवाले हाथी का मस्तक विदारनेवाले और बलवान सिंहको मारने वाले बहुत हैं, परन्तु कामदेव का गर्व खर्व करनेवाले, स्त्री से हार न खानेवाले कोई विरले ही हैं। इस चित्रमें यह दिखाया गया है कि, गजराज और मृगराज को भी [illegible]

57 Those scholars who speak ill of women are liars in as much as they deceive others and also themselves, for the result of austerity is heaven and the result of attaining heaven is the enjoyment of nymphs.

मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्ति शूराः
केचित्प्रचण्डमृगराजवधेऽपि दक्षाः ॥
किं तु ब्रवीमि बलिनां पुरतः प्रसह्य
कन्दर्पदर्पदलने विरला मनुष्याः ॥५८॥

इस पृथ्वी पर, मतवाले हाथी का मस्तक विदारनेवाले शूर अनेक हैं, प्रचण्ड मृगराज—सिंह के मारनेवाले भी कितने ही मिल सकते हैं, परन्तु बलवानों के सामने हम हठ करके कहते हैं, कि कामदेव के मद को मर्दन करनेवाले पुरुष कोई विरले ही होंगे।

खुलासा—हाथियों और सिंहों को पराजित करनेवाले शूरवीर इस पृथ्वी पर अनेक मिल सकते हैं; पर कामदेव को वश में करनेवाला अथवा कामिनी के कटाक्ष-वाणों से पराजित न होनेवाला, कोई एक भी कठिन से मिलता है। बड़े बड़े युद्धक्षेत्रों में विजयी होनेवाले शूरवीरों की भी शूरवीरता इन कामिनियों के आगे न जाने कहाँ चली जाती है? बड़े बड़े बहादुरों की जबान से यही निकलता है—

मर गये हम इक इशारे में निगाहे नाज़के

पर वकौल स्वामि शंकराचार्य्यजी के सच्चा शूरवीर वही है, जो मनोज—कामदेवके वाणों से व्यथित न हो अर्थात् कामिनी के दाममें न फँसे। कहा है—

शूरान्महाशूरतमोऽस्ति को वा।
मनोजवाणैर्व्यथितो न यस्तु।
प्राज्ञोथ धीरश्च शमस्तु को वा।
प्राप्तो न मोह ललनाकटाक्षैः॥

संसार में सबसे बड़ा शूरवीर कौन है? सबसे बड़ा शूरवीर वही है, जो कामदेव के वाणों से पीड़ित न हो। बुद्धिमान्, धीर और समदर्शी कौन है? जो स्त्री के कटाक्ष से मोहित न हो।

हमें एक "सर्व्वजीत" नामक राजा की कथा याद आ गई है। उसे हम अपने पाठकोंके मनोरञ्जनार्थ नीचे लिखते हैं। पाठक उसे कोरे मनोरञ्जन का ही मसाला न समझें, बल्कि सच्चे सर्व्वजीत बनने की चेष्टा करें—

सर्व्वजीत राजा।

एक राजाने सारी पृथ्वी को जीतकर अपना नाम "सर्व्वजीत" रक्खा। सब देशों की रैयत और उस के मातहत राजा-महाराजा उसे "सर्व्वजीत" कहने लगे, लेकिन स्वयँ राजमाता—राजा की जननी—उसे "सर्व्वजीत" न कह कर, उसे उसके पुराने नामसे ही पुकारती।

एक दिन राजाने अपनी माँ से कहा—"माता जी! सारा ससार मुझे 'सर्व्वजीत' कहता है, पर आप मुझे मेरे पुराने नाम से ही क्यों पुकारती हो?" राजमाताने कहा—"बेटा! बाहर के देशों के जीतने से कोई "सर्व्वजीत" नहीं हो सकता। तूने सारा ससार जीत लिया, पर अपना शरीर, मन और इन्द्रियाँ तो जीती ही नहीं। तेरा शरीर दिन-दिन क्षय हो रहा है और तेरी इन्द्रियाँ तुझे विषय-भोगों और कुकर्मों की तरफ ले जा रही हैं। पहले तू भीतरी—शत्रु काम, क्रोध, मोह प्रभृति और अपने मन तथा इन्द्रियों को वश में कर, तब मैं तुझे "सर्व्वजीत" खुशी से कहूँगी। देख, व्यास भगवान् ने कहा है —

न रणे विजयाच्छूरोऽध्ययनान्न च पण्डित. ।
न वक्ता वाक्पटुत्वेन न दाता चार्थदानतः ॥१॥
इन्द्रियाणां जये शूरो धर्मं चरति पण्डित ।
हितप्रायोक्तिभिर्वक्ता दाता सम्मानदानतः ॥२॥

रण-क्षेत्र में विजयी होने से कोई शूर नहीं हो सकता, शास्त्र पढ़न से कोई पण्डित नहीं हो सकता, धड़ाधड़ व्याख्यान देनेसे कोई वक्ता नहीं हो सकता और धन दान करनेसे कोई दाता नहीं हो सकता।

जो इन्द्रियों पर जय प्राप्त करता है, वह शूरवीर कहलाता है। जो धर्मपर चलता है, वह पण्डित कहलाता है, जो हितकारी बातें करता है, वह वक्ता कहलाता है और जो दूसरोंका आदर-सम्मान करता है, वह दाता कहलाता है।

छप्पय ।

हाथी मारन हार होत ऐसेहू शूरे ।
मृगपाती वध कर सकें, वकें नहिं नेकहु पूरे ।
बड़े बडे बलवन्त वीर सब तिनके आगे ।
महावली ये काम, जाहि देखत सब भागे ।
अभिमान भरे या मदनको, मान मार मेटे अवधि ।
नर धरम-धुरन्धर वीर वै, विरले या संसार-माधि ॥५८॥

सार--शूरवीर इस जगत् में बहुत हैं; पर कामिनियोंके कटाक्ष-बाणोंसेघायल न होनेवाला सच्चा शूरवीर शायद ही कोई एक हो ।

58 There are many a hero on this earth who can tear the head of a mad elephant and there are also many powerful enough to kill a fearful lion but I can challenge all the strong men and say that there are few who can fully control the excitements of passions

—*—

सन्मार्गे तावदास्ते प्रभवति स नरस्तावदेवेन्द्रियाणां
लज्जां तावद्विधत्ते विनयमपि समालम्बते तावदेव ।
भ्रूचापाकृष्टमुक्ताः श्रवणपथगता नीलपक्ष्माण एते
यावल्लीलावतीनां न हृदि धृतिमुषो दृष्टिबाणाः पतन्ति ॥५६॥

पुरुष सत्मार्ग में तभी तक रह सकता है, इन्द्रियों को तभी

तक वश में रख सकता है, लज्जा को उसी समय तक धारण कर सकता है, नम्रता का अवलम्बन उसी समय तक कर सकता है, जब तक कि लीलावती स्त्रियों के भौंह रूपी धनुष से कानों तक खींचे गये, श्याम बरौनी रूपी पख धारण किये, धीरज को छुडाने वाले नयन-रूपी वाण हृदय में नहीं लगते।

खुलासा—पुरुष उसी समय तक सन्मार्गी, इन्द्रियविजयी, लज्जाशील और विनीत रहता है, जब तक वह कामिनीके कटाक्षसे घायल नहीं होता अथवा उसकी किसी नाजनी से आँखें नहीं लड़तीं। आँख लड़ते ही, वह उसकी एक-एक अदा पर पागल हो जाता है और बक़ौल महाकवि गालिब यही कहता है—

बलाये जाँ है ग़ालिब उसकी हर बात।
इबारत क्या इशारत क्या अदा क्या॥

उसका देखना-भालना, लिखना बोलना सभी ग़ज़ब ढाहनेवाला है।

बहुत लिखना व्यर्थ है, चचल-नयनी कामिनी से चार नज़र होते ही मनुष्य के शान्ति, सन्तोष, लज्जा और शर्म सब हवा हो जाते हैं। उस्ताद ज़ौक ने ठीक ही कहा है —

छोड़ा न दिल में सब्र आराम न शिकेब।
तेरी निगाहने साफ़ किया घरके घर पै हाथ॥

तेरी दृष्टि ने सब्र-सन्तोष, शान्ति और सुख सबका पटड़ा कर दिया—(इतनाही नहीं) सारे घर पर ही हाथ साफ कर दिया।

कामिनी के कटाक्षका मारा पुरुष कामातुर हो जाता है, उस समय उसमें भय, लज्जा और धीरज नहीं रहता। वह डर-भय और लाज शर्म को ताक पर रखकर, अधीर हुआ, उसके देखने, मिलने और आलिङ्गन करने के लिये छटपटाता है। उसको एक प्रकारका नशा सा हो जाता है, इसलिये वह सारे काम मतवालों के से किया करता है। लोगों के समझाने-बुझाने का कुछ फल नहीं होता। वेदान्तियों की वेदान्त-विद्या, भागवतियों की भागवत और गीतावालो का गीता, इस मौके पर कुछ भी काम नहीं करती; सभी निष्फल हो जाते हैं।

क्षेमेन्द्र महाशय ने ठीक ही कहा है—

न श्रुतेन न वित्तेन न वृत्तेन न कर्मणा।
प्रवृत्त शक्यते रोद्धुं मनोभवपथेमन ॥

कामदेव की राह पर आया हुआ मन किसी भी उपाय से उस राह से हटाया नहीं जा सकता।

वक़ौल महाकवि दाग़, नाजनियों के निगाहे तीर के घायलो की अपनी कही सुनिये .—

नाम निकला तो कभी दिल से कभी आहोफुगा।
पर तेरे वस्ल का अरमान निकला ही नहीं ॥

मेरे दिल से कभी आह निकलती है, तो कभी दीर्घ निश्वास, पर तेरे मिलने की चिरपालित अभिलाष कभी नही निकलती।

हैं तेरी राहे मुहब्बत में हजारों फितने।
देख मुझको बजुज इस राहके चलता ही नहीं॥

तेरे प्रेम कीं राह मे हज़ारो विघ्न-बाधाये हैं, किन्तु मुझ देख, कि उस राह पर चले बिना मेरा मनही नही मानता, यानी मैं और राह का पथिक बनना नहीं चाहता।

दोहा।

इन्द्री मद लज्जा विनय, तौं लों सब शुभ कर्म।
जौं लों नारी–नयन–शर, छेदत नाहिं मर्म॥५९॥

सार----स्त्रियोंके नयन-बाण लगते ही पुरुष के लज्जा और नम्रता प्रभृति गुण हवा हो जाते हैं।

59 A man is in right path, has his passions under his control and has modesty aad humility in him only so long as tha eyes of women with beautiful eye-lids in the form of arrows with wings, stealing the patienc, thrown from brows in the form of bows that are strung up to the ears, do not pierce the heart

—※—

उन्मत्तप्रेमसंरम्भादारभन्ते यदंगनाः॥
तत्र प्रत्यूहमाधातुं ब्रह्मापि खलु कातरः॥६०॥

अतिशय प्रेम की उमङ्ग से उन्मत्त होकर स्त्रियाँ जिस काम

को आरम्भ कर देती है, उस काम में विघ्न-बाधा उपस्थित करते ब्रह्मा भी डरता है ॥६०॥

खुलासा—इश्क के जोश और जल्दी में स्त्री जो काम कर बैठती है, उससे उसे मनुष्य तो कौन चीज़ है, स्वयं ब्रह्मा भी नहीं रोक सकता। स्त्री अत्यन्त काम-पीड़ित होने पर जो छल-बल और साहस के काम करती है, उनको देखकर उसके बनाने वाला ब्रह्मा भी दाँतों तले अँगुली देने लगता है। सास-ससुर पति-पुत्र कोई भी उसे कुकर्मों से विरत कर नहीं सकते।

कामवती स्त्री अत्यन्त कुटिल,क्रूर आचरण वाली और लज्जा-हीना हो जाती है। उस समय वह अपने पति, पिता, माता, पुत्र बन्धु और कुटुम्बी तक से द्रोह करने और उनका नाश करने में भी नहीं हिचकती। घमासान युद्धक्षेत्रमें भी वह बन्दूककी गोलियों और तोपों के गोलों की परवा न करके, यदि उसे जाना हो, तो पहुँचती है। जिस श्मशान पर अकेला-दुकेला मर्द भी न जा सकता हो, उस पर वह घोर अँधेरी रात में—बादलों के गरजने, बिजली के कड़कने और ऐसी ही अनेक आपदाओंके होने पर भी—बेधड़क पहुँचती है। स्त्री के साहस की बात न पूछिये। ऐसा कौनसा काम है, जिसे वह, इच्छा करने पर, नहीं कर सकती? किसी पाश्चात्य विद्वान्ने भी कहा है —"A woman when she either loves or hates, will dare anything" स्त्री जब प्रेम या घृणा किसी एक पर तुल जाती है, तब सब कुछ करने का साहस कर सकती है। किसी कवि ने कहा है—

कहा न अवला कर सके* ? कहा न सिन्धु समाय ?
कहा न पावक में जरे ? काहि काल नाहिं खाय ?

"रसिक" कविने भी कहा है—

दोहा ।

कहा त्रिया नाहिं कर सके, कामवती जब होय ।
"रसिक" सास पति पुत्र सब, कर न सके कछु कोय ॥६०॥

दोहा ।

महामत्त या प्रेम को, जब तिय करत उदोत ।
तब वाके छल बल निरखि, विधिहू कायर होत ॥

सार----कामोन्मत्त स्त्री जो चाहे सो कर सकती है ।

60 Even Brahma (the creator) has not the power to obstruct the work which a woman undertakes being impassioned with the excitements of love

—✱—

तावन्महत्त्वं पाण्डित्वं कुलीनत्वं विवेकिता ।
यावज्ज्वलति नांगेषु हंत पञ्चेषुपावकः ॥ ६१ ॥

बड़ाई, पण्डिताई, कुलीनता और विवेक,—मनुष्यके हृदय

* एक पुत्र छोड़ कर स्त्री सब कुछ कर सकती है। केवल ब्रह्मा उस की नहीं चलता।

में तभी तक रह सकते है, जब तक शरीरमें कामाग्नि प्रज्वलित नहीं होती ॥ ६१ ॥

खुलासा—इश्क में जात-पाँति, और नीच-ऊँच का विचार नहीं है। कामी पुरुषों के विवेक या सत् असत् की विचारशक्ति को तो स्त्रियाँ अपनी एक नजर में ही हर लेती हैं। जब भले और बुरे को विचारने की शक्ति नहीं रहती, तब मनुष्य में कुलीनता प्रभृति गुण कैसे रह सकते हैं? अनेक पुरुष मुसलमानियों के प्रेम में फँसकर मुसल्मान हो गये हैं। कितने ही मेमों के मोह-जाल में फँसकर अपने हिन्दुत्व और ब्राह्मणत्व को तिलाञ्जलि देकर काले साहब बन गये हैं। यह तो कुछ नहीं, हमने कितने ही उच्च कुल के हिन्दू मेहतरानियों के इश्क मे गिरफ्तार होकर मेहतर होते देखे हैं। इसमें जरा भी शक नहीं कि, कामाग्नि के प्रज्वलित होते ही, बडप्पन और कुलीनता प्रभृति हवा हो जाते हैं।

दोहा।

बुद्धि विवेक कुलीनता, तौ लों ही मन माहिं।
कामबाण की आगि तन, जौ लों धधकत नाहिं ॥६१॥

सार---प्रेम--कुलीनता, विवेक और पाण्डित्य प्रभृति सद्गुणों का शत्रु है।

61 Respectability, wisdom, good sense and family distinction find place in a man only so long as the fire of passion has not begun to burn in him

---

शास्त्रज्ञोऽपि प्रथितविनयोऽप्यात्मबोधोऽपि बाढं
संसारेऽस्मिन् भवति विरलो भाजनं सद्गतीनाम् ॥
येनैतस्मिन्निरयनगरद्वारमुद्घाटयन्ती
वामाक्षीणां भवति कुटिलभ्रूलता कुञ्चिकेव ॥६२॥

शास्त्रज्ञ, विनयी और आत्मज्ञानियों में कोई विरला ही ऐसा होगा, जो सद्गति का पात्र हो, क्योंकि यहाँ वामलोचना स्त्रियों की वांकी भ्रू-लता-रूपी कुञ्जी उनके लिए नरकद्वार का ताला खोले रहती है ॥ ६२ ॥

खुलासा—शास्त्रज्ञ और ब्रह्मज्ञानियों की सद्गति तो तभी हो सकती है, जब कि वे कामिनियों की वाँकी भौंहों की झपेट में आने से बचें। उनकी कमानसी भौंहों को देखकर बड़े-बड़े वेदान्तियों की अक्ल मारी जाती है। वह हजार गीता, भागवत और उपनिषदों का पाठ करें, हजार योगवासिष्ठोंका परिशीलन करें, पर उनके चित्त पर चढ़ी कामिनी का उतरना बहुत कठिन है। पण्डितेन्द्र जगन्नाथ अपने "भामिनी-विलास" में लिखते हैं —

उपनिषद: परिपीता गीतापि च हत मतिपथं नीता।
तदपि न हा विधुवदना मानससदनाद्बहिर्याति ॥

उपनिषदों का पान किया और गीता भी भली भाँति पढ़ा-समझा और मनन किया, परन्तु हाय! इतना सब करने पर भी, यह चन्द्रवदनी कामिनी मेरे मनरूपी घर से बाहर नहीं जाती।

कामिनी और काञ्चन दो घाटियाँ हैं।



अगर संसार में कामिनी और काञ्चन न होते, तो इस संसार-सागर से तरना और मोक्षलाभ करना कठिन न होता। मोक्ष की राह में कामिनी और काञ्चन दो घाटियाँ पड़ती हैं। इन घाटियों को पार करना अति कठिन है। जो इन घाटियों को लाँघने में समर्थ हो, वही सद्गति या मोक्ष का अधिकारी हो सकता है। महात्मा कबीर कहते हैं—

चलूँ चलूँ सब कोइ कहै, पहुँचे बिरला कोय।
एक कनक अरु कामिनी, दुर्लभ घाटी दोय ॥१॥

एक कनक अरु कामिनी, ये लाँबी तरवारि।
चाले थे हरि भजन को, बिच ही लीन्हा मारि ॥२॥

नारि पराई आपनी, भुगते नरकै जाय।
आगि आगि सब एकसी, देते हाथ जरि जाय ॥३॥

नारी तो हम भी करी, पाया नहीं विचार।
जब जानी तब परिहरी, नारी बड़ा विकार ॥४॥

नारि नसावे तीन सुख, जेहि नर पासे होय।
भक्ति मुक्ति अरु ज्ञान में, पैठि सके नहिं कोय ॥५॥

एक कनक अरु कामिनी, दोऊ अग्नि की झाल।
देखे ही तें पर जले, परसि करे पैमाल ॥६॥

जहाँ कामतहाँ राम नहिं, रामतहाँ नहिं काम।
दोऊ कबहूँ ना रहे, काम राम इक ठाम॥

(१)

चलूँ चलूँ सब कहते हैं, पर कोई विरला ही पहुँचता है, क्योंकि उस (भगवान् की) राह मे कनक और कामिनी दो दुर्लंघ्य घाटियाँ हैं।

(२)

कनक और कामिनी ये दो लम्बी तलवारें हैं। हरिभजनको चले थे, पर इन तलवारों ने बीच राह में ही मार लिया।

(३)

स्त्री अपनी हो चाहे पराई, भोगने से नरकमें जाना ही पडता है क्योंकि अपनी आग और पराई आग—दोनों मे ही हाथ देने से हाथ जलता है।

(४)

जब हममें विवेक-विचार नहीं था, तब हमने भी स्त्रीकी थी, लेकिन जब उसका असल तत्व जाना, तब उसे त्याग दी; क्योंकि स्त्री बड़ी विकारवान है।

(५)

स्त्री तीन सुखो को नष्ट कर देती है। जिसके स्त्री होती है, उसे ज्ञान नहीं होता अत ईश्वर की भक्ति में भी मन नहीं लगता और भक्ति बिना मुक्ति नहीं मिलती।

(६)

कनक और कामिनी दोनों आग की लपट हैं। इनके देखने से ही पर जलते हैं और छूने से तो प्राणी नष्ट ही हो जाता है।

(७)

जहाँ स्त्री है वहाँ राम नहीं और जहाँ राम है वहाँ स्त्री नहीं। भगवान् की भक्ति और स्त्री की प्रीति दोनों एकही पुरुष नहीं कर सकता। जिस तरह दिन और रात एकत्र नहीं हो सकते, उसी तरह राम और काम भी एकत्र नहीं रह सकते।

साराश यह, मोक्ष लाभ करने या जन्म-मरण से बचकर परम-पद पाने में ये स्त्रियाँ ही बाधक हैं। लोग इनके जालमें फँस जाते हैं, अत जन्म-जन्मान्तर तक नरक भोगते हैं। उनको सद्गति मिलना कठिन हो जाता है। बकौल महाकवि जौक, कोई समझदार, जहाँदीदा पुरुष ही इस स्त्री-जालमें फँसने से बचता है। कहा है—

दुनिया है वह सैयाद कि सब दाम में इसके।
आजाते हैं लेकिन कोई दाना नहीं आता॥

दुनिया वह जाल है कि, इसमे सभी फँस जाते हैं, कोई विचारशील ही इसमें फँसने से बचता है। जो इस जालमे नहीं फँसता, वही नरकों से बचता और मुक्ति लाभ करता है।

छप्पय।

सब ग्रन्थनके ज्ञानवान अरु नीतिवान नर।
तिन में कोउ होत मुक्त-मारग में तत्पर॥

सबको देत बहाय, बक-नयनी यह नारी।
जाकी बाँकी भौंह, नचत आतिही अनियारी॥
यह कूँची करम कपाट की, खेलनको ऊकत फिरत।
जिनके न लगत मन दृगनमें, ते भवसागरको तरत॥६२॥

सार----सुन्दरी स्त्रियाँ पुरुषोंकी सद्गतिमें बाधक हैं।

62 One may be versed in the Shastras, reputedly wise and humble, but there are few who can claim the higher and better life—after death for, there is the oblique brow of women having beautiful eyes moving in it which like a key opens the lock of the gate of hell

—*—

कृशः काणः खंजः श्रवणरहितः पुच्छविकलो
व्रणी पूयक्लिन्नः कृमिकुलशतैरावृततनुः॥
क्षुधाक्षामो जीर्णः पिठरजकपालार्पितगलः
शुनीमन्वेति श्वा हतमपि निहन्त्येव मदनः॥६३॥

काना, लँगड़ा, कनकटा और दुमकटा कुत्ता, जिसके शरीर में अनेक घाव हो रहे हैं, उनसे पीव और राध झरते हैं, दुर्गन्ध का ठिकाना नहीं है, घावों में हजारों कीड़े पड़े हैं, जो भूख से व्याकुल हो रहा है और जिसके गले में हाँड़ी का घेरा पड़ा हुआ है, कामान्ध होकर कुतिया के पीछे-पीछे दौड़ता है। हाय! कामदेव बड़ा ही निर्दयी है, जो मरे को भी मारता है।

खुलासा—कुत्ता इतने क्लेशों से व्यान होने पर भी, शरीर में दम न होने पर भी और क्षुधा से व्याकुल होने पर भी, कामान्ध होकर, कुतिया के पीछे दौडता है। इससे स्पष्ट मालूम होता है कि कामदेव वडा ही नीच और निदयी है, क्योंकि वह मुसीवत से मरते हुओ पर भी, अपने सत्यानाशी वाण छोड़ने में आगा-पीछा नहीं करता। जो कामदेव ऐसे दुर्वलों का यह हाल करता है, वह माचा-मलाई घी-दूध और रवडी-पेड़े खाने वाले सण्ड-मुसण्डों का तो औरभी बुरा हाल करता होगा। धूर्त्त साधु सन्त और पण्डे महन्त जो नित्य माल पर माल उडाते हैं, क्या काम-वाणो से रक्षित रहने मे समर्थ हो सकते होंगे? कदापि नहीं। जो ऐसा कहते हैं, वे महापापी और मिथ्यावादी हैं। वे एक पाप तो जारकर्म का करते हैं और दूसरा मिथ्याभाषण का।

हमारे देश के अनेक तीर्थों मे जो कुकर्म होते हैं, उन की याद आने से कलेजा फटने लगता है। हमारी बेचा माँ वहिनो और वेटियों की आवरु वचना कठिन हो रहा है। सच तो यह है, दुष्टों ने तीर्थों और मन्दिरो को इन कुलाङ्गनाओ को फँसाने का जाल मुकर्रर कर रक्खा है। मोटे ताजे वैरागी सन्त और महन्त मुफ्त का वढिया से-वढिया माल उडाते हैं। इसके वाद जव उन्हें कामदेव सताता है, तव भोली-भाली स्त्रियों को वहकाकर, उन्हें उल्टी पट्टियाँ पढा कर, उनकी लाज लूटते और उनका सतीत्व भङ्ग करते हैं। घोंघावसन्त भोंदू लोग ऐसे सण्ड मुसण्डों को सच्चा महात्मा समझते हैं। मनमें इतना भी नहीं समझते कि, हमारे लड्डू

पेडे, रबडी, मलाई, मोहनभोग और खीर पूरी प्रभृति उडाने वालो को क्या काम न सताता होगा? ये अपनी कामाग्निको किस तरह शान्त करते होंगे? जब पेडके पत्ते और हवा खाकर जीवननिर्वाह करनेवालों को ही कामदेव सताता है, तब क्या इन को छोड देता होगा? महात्मा भर्तृहरि के कुत्ते से लोगो को शिक्षा ग्रहण कर, सावधान रहना चाहिये और स्त्रियाँ को तीर्थो या मन्दिरोंमे जाने से सर्वथा रोकना चाहिये। ये हम भी नहीं कहते कि, सभी महात्मा और पुजारी कहाने वाले ऐसे कुकर्म करते हैं, पर चूँकि हमने ये दुष्कर्म आँखों से देखे हैं, अत कहना पडता है कि, ६६ फी सदी दुष्ट इन कुकर्मों में फँसे रहते हैं। क्या आप इन्हें विश्वामित्र और पराशर प्रभृति महर्षियों से भी अधिक इन्द्रिय-विजयी समझते हैं? स्त्री पुरुष—अग्नि और घी, आग और फूस अथवा चुम्बक पत्थर और लोह के समान हैं। घी और आग के पास-पास होते ही घी पिघलने लगता है। फूस के पास अग्नि के आते ही फूस मे झट से आग लग जाती है। चुम्बक के सामने लोहा आते ही, चुम्बक लोहेको अपनी ओर खींचता है। ये नेचरल (Natural) या स्वाभाविक मामले हैं, इनमें मनुष्य का वश नही। इसी लिये महात्माओ ने कहा है .—

नारी निरखि न देखिये, निरखि न कीजे दौर।
देखत ही तें विष चढे, मन आवे कछु और॥
सर्व सोना को सुन्दरी, आवे वास सुवास।
जो जननी हो आपनी, तोहू न बैठे पास॥

स्त्री को कभी घूर कर न देखना चाहिये, उस से आँखें न मिलानी चाहियें। क्योकि स्त्री के देखने से ही विष चढ़ता है और फिर मन बिगड जाता है।

अगर सुन्दरी सोने की भी हो और उस में सुगन्ध आरही हो, यदि वह अपने पैदा करनेवाली महतारी हो, तोभी उस के पास न बैठना चाहिये।

आशा है, हमारे देश के सीधे-सादे लोग इन पंक्तियाँ पर ध्यान दे, अपने घरोंकी इज़्ज़त-आबरू पर पानी न फिरने देंगे।

छप्पय।

दुबरो कानो हीन श्रवण, बिन पूँछ नवाये।
बूढो बिकल शरीर, बारविन छार लगाये॥
झरत शीशतें राध, रुधिर कृमि डारत डोलत।
क्षुधा क्षीण अति दीन, गले घट कण्ठ कलोलत।
यह दशा श्वान पाई तऊ, कुतियन से उरझत गिरत।
देखो अनीत या मदनकी, मृतकन को मारत फिरत॥६३॥

सार---कोई भी प्राणी कामदेव के बाणों से अछूता बच नहीं सकता।

63 A dog thin, one-eyed, lame, deaf without tail, with sores full of puss and worms walking over its body, hungry, old, having the round neck of a broken pot round its shoulder, goes after a bitch for intercourse, Alas Kamdev (Cupid) makes senseless even those who are almost dead

(An animal under the influence of Cupid is devoid of all sense.)

—*—

स्त्रीमुद्रां झषकेतनस्य जननीं सर्वार्थसम्पत्करीं
ये मूढाः प्रविहाय यांति कुधियो मिथ्याफलान्वेषिणः ॥
ते तेनैव निहत्य निर्दयतरं नग्नीकृता मुण्डिताः
केचित्पञ्चशिखीकृताश्च जटिलाः कापालिकाश्चपरे ॥६४॥

जो मूर्ख सब अर्थ और सम्पदों की देने वाली, कामदेव की मुद्रारूपी स्त्रियों को त्यागकर, स्वर्ग प्रभृति की इच्छा से, घर छोड़कर निकल गये हैं, उन्हें विरक्त भेष में न समझना चाहिए। उन्हें कामदेव ने अनेक प्रकार के कठोर दण्ड दिये हैं। इसीसे कोई नङ्गा फिरता है, कोई सिर मुँडाए घूमता है, किसी ने पञ्चकेशी रखाई है, किसी ने जटा रखाई है और कोई हाथ में ठीकरा लेकर भीख माँगता फिरता है ॥६४॥

खुलासा—स्त्री कामदेव की मुद्रा या मुहर है। जिस तरह राजकी मुद्रा या मुहर का अनादर करनेवाले को राजा अनेक प्रकार के दण्ड देता है उसी तरह कामदेव भी अपनी स्त्रीरूपी मुद्रा का अनादर करनेवालों को नाना प्रकार के दण्ड देता है। किसीको नङ्गा करके फिराता है, तो किसी से भीख मँगाता है।

यही भाव नीचे की कविता में औरभी स्पष्ट रूप से झलकता है :—

कुण्डलिया ।

कामिनि मुद्रा कामकी, सकल अर्थ को देत ।
मूरख याको तजत हैं, झूठे फल के हेत ।
झूठे फल के हेत, तजत तिनही को डाडे ।
गहि-गहि मूँडे-मूँड, वसन बिन कर-कर छाँड़े ।
भगवा करि-करि भेष, जटिल ह्वै जागत जामिनि ।
भीख माँग के खात, कहत हम छाँडी कामिनि ॥६४॥

सार---स्त्री-त्यागियों को कामदेव नाना प्रकार के दण्ड देता है ।

64 Those fools, that throw aside the token of king Kamadeva namely the women who are productive of love and all sorts of fortunes, and run after unknown subjects, are cruelly punished by the king Kamadeva, some by being made to roam about naked, some by being made to have their heads shaved, some by being allowed to keep only five bunches of hair on their head and some by being made to beg with a pot in their hand

—*—

विश्वामित्रपराशरप्रभृतयो वाताम्बुपर्णाशना-
स्तेऽपि स्त्रीमुखपंकजं सुललितं दृष्ट्वैव मोहं गता ॥
शाल्यन्नं सघृत पयोदधियुतं भुञ्जन्ति ये मानवा -
स्तेषामिन्द्रियनिग्रहो यदि भवेद्विन्ध्यस्तरेत्सागरम् ॥६५॥

विश्वामित्र, पराशर, मरीचि और शृङ्गी प्रभृति बड़े-बड़े विद्वान् ऋषि-मुनि,जो वायु-जल और पत्ते खाकर गुजारा करते थे, स्त्री के मुखकमल को देखकर मोहित हो गये, तब जो मनुष्य अन्न, घी, दूध, दही प्रभृति नाना प्रकार के व्यञ्जन खाते और पीते हैं, कैसे अपनी इन्द्रियों को वश में रख सकते हैं ? यदि वे अपनी इन्द्रियों को वश में कर सकें, तो विन्ध्याचल पर्वत भी समुद्र में तैर सके ॥ ६५ ॥

खुलासा—कामदेव बडा वली है। उसने जब केवल जल, वायु और पत्ते खानेवाले मुनियोंको न छोड़ा, तब वह घी दूध खाने वालों को कब छोड सकता है ? महामुनि विश्वामित्र जब अपना ज्ञान-ध्यान और विवेक-बुद्धि खोकर स्वर्गीय अप्सरा मेनका की रूपच्छटा पर मुग्ध हो गये, महर्षि पराशर नाव में बैठे बैठे अनजान नाविक की कन्या पर मोहित हो गये और हया शर्म को तिलाञ्जलि देकर, दिन-दहाडे अपनी माया से दिन में अन्धकार करके, अपनी कामाग्नि की शान्ति में मशगूल हो गये ; जब मरीचि और शृङ्गी जैसे ऋषि वेश्याओंके हाव-भावों पर मर मिटे, तब साधारण लोग मोहिनियोंकी मोह-पाशसे कैसे बच सकते हैं ? कहा है—

स्त्रीभि· कस्य न खण्डित भुवि मनः

इस पृथ्वी पर स्त्रियों ने किस का मन खण्डित या आकृष्ट नहीं किया ? अर्थात् स्त्रियोंने प्राय सभी का मन हरा,—सभी के दिलों पर अपनी छाप जमाई।

छप्पय।

कौशिकादि मुनि भये, बात पय पर्णाहारी।
तेहू तिय-मुख-कमल देख, सब बुद्धि बिसारी।
दधि घृत ओदन दूध, मधुर पकवान मलाई।
नित प्रति सेवन करे, रहे बहु मोद बढाई।
बहु विधि ज्ञानी नर जग भए, वे नहिं मन कर सके बस।
यदि होवहिं तो गिरिविन्ध्य जनु, उदधि मध्य उतराहि तस॥६५॥

सार---जब विश्वामित्र और पराशर जैसे मुनि स्त्रियोंके माया-जालमें फँस गये, तब और कौन बच सकता है?

65. Vishvamitra, Parashara and others who lived upon air water and dry leaves only (they also) became captivated as soon as they saw the charming lotus like faces of women Surely then if those who live upon rice mixed with ghee, butter and milk, can be successful in controlling their passions, Vindhya mountain would float on the ocean

—※—

संसारेस्मिन्नसारे कुनृपतिभुवनद्वारसेवावलम्ब-
व्यासंगव्यस्तधैर्यं कथममलधियो मानसं संविदध्यु: ॥
यद्येता: प्रोद्यदिन्दुद्युतिनिचयभृतो न स्युरम्भोजनेत्रा:
प्रेङ्खत्कांचीकलापा: स्तनभरविनमन्मध्यभागास्तरुण्य: ॥६६॥

स्त्री-त्याग की प्रशंसा।

—:—

अगर इस असार ससार में, पूर्ण चन्द्रमा की सी कान्तिवाली, कमल की सी आँखों वाली, कमर मे लटकती हुई कर्धनी पहनने वाली, स्तनों के भार से झुकी हुई कमर वाली युवती स्त्रियाँ न होतीं, तो निर्मल-बुद्धि मनुष्य, दुष्ट राजाओं के द्वार की सेवाओ में, अनेक कष्ट उठाकर अधीर-चित्त क्यो होते? ॥६६॥

खुलासा—पुरुषों को अपने पेट के लिये, राजा-महाराजाओं और अमीर-उमराओं की सेवा करके, उनकी टेढ़ी भृकुटियो से हर समय कांपते रहने और वारम्वार अपमानित होने एवं अन्यान्य प्रकार की अनेकों मुसीबतें उठाने को क्या जरूरत थी? ससार में पुरुष अपनी प्राणप्यारी के लिये ही नाना प्रकार के कष्ट सहता है उसी के लिये रणक्षेत्र में जाकर अपनी गर्दन दे देता है, उसी के लिये तरह-तरह की जिल्लत और वेइज़्ज़ती वर्दाश्त करता है। उसी के सुख की ग़रज से, वह अपने घोर शत्रुओं तक की खुशामदें करके अपने मान को मलीन करता है। वहुत कहना व्यर्थ है, स्त्री ही पुरुषों के मानमर्दन और दीनता का कारण है।

छप्पय।

तो असार ससार जान, सन्तोष न तजते।
भीर भार के भरे भूप को, भूल न भजते।
बुद्धि विवेक निधान, मान अपने नहिं देते।

हुकुम विरानो राख, दुःख सम्पद नाहिं लेत ।
जो यह नहिं होती शशि-मुखी, मृगनयनी केहरि कटी ।
छवि जटी छटा निकसी छरी, रस लपटी छूटी लटी ॥६६

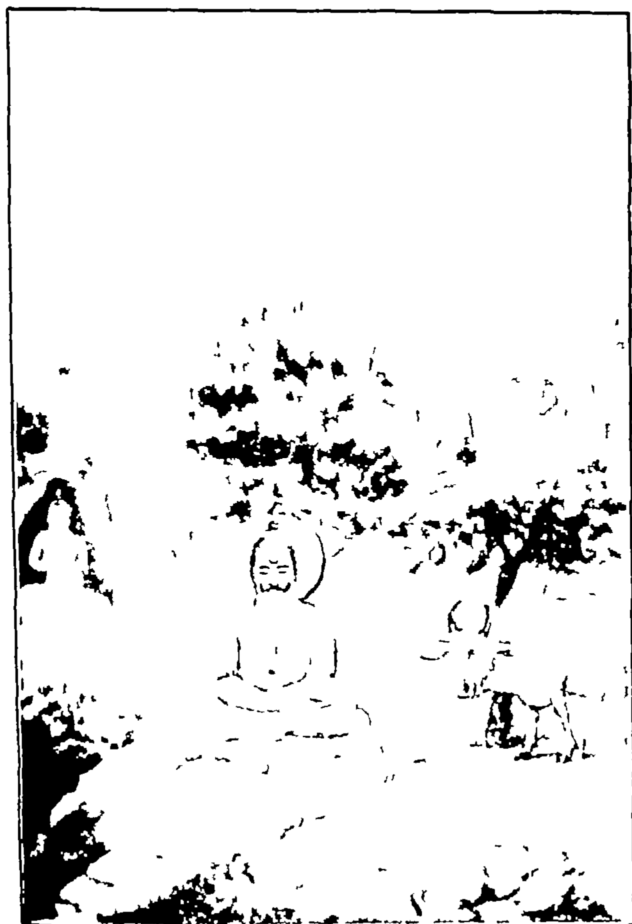
सार—स्त्रियों के ही कारण से पुरुषों को नाना प्रकार की तकलीफें उठानी पड़ती हैं ।

66 If there would not have been such lotus eyed young women with face shining like a newly risen moon, wearing sweet sounding girdle, whose waist is bent under the load of breasts, then persons of pure intellect would not have put up with various insults by serving in the courts of wicked kings.

सिद्धाध्यासितकन्दरे हरवृषस्कन्धावगारुढ्द्रुमे ।
गङ्गाधौतशिलातले हिमवतः स्थाने स्थिते श्रेयसि ॥
कः कुर्वीत शिरःप्रणाममलिनं मानं मनस्वी जनो
यद्यत्रस्तकुरङ्गशावनयना न स्युःस्मरास्त्रं स्त्रियः ॥६७॥

यदि त्रस्ता मृगशावकनयनी कामास्त्ररूपा कामिनी इस जगत् में न होती , तो सिद्ध—महात्माओं की गुफायें, महादेव के वाहन—नन्दीश्वर—बैल के कन्धा रगडने के वृक्ष और गङ्गा-जल से पवित्र हुई शिलाओं वाले हिमालय के स्थान छोडकर, कौन मनस्वी—बुद्धिमान् पुरुष लोगों के सामने जा, उन्हें माथा झुका, प्रणाम करके, अपने मान को मलीन करता ? ॥६७॥

खुलासा—संसार में, एकमात्र स्त्री के ही कारण से,पुरुषों को अनेक तरह से नीचा देखना पडता है । अगर स्त्री न होती, तो



यदि जगत् में कामिनी न होती, तो महादेव के वाहन नन्दी के कन्धा रगड़ने के धूलों और गंगाजल से पवित्र हुई शिलाओं वाले हिमालय के स्थान छोड़ कर, कौन मनस्वी पुरुष लोगों के सामने जा, उन्हें सिर-झुका अपने मान को मलिन करता ? (पृ० १६०

पुरुष हिमालय पर्वत की गुफाओं में अथवा गङ्गा-तट पर किसी उत्तम वृक्ष की छाया में बैठकर, शिव-शिव करता हुआ, अपने दिन सभी सुख-शान्ति से व्यतीत करता। उसे अपनी मान-प्रतिष्ठा खोकर, जने-जने की खुशामद करने की कौनसी आवश्यकता थी? इस में जरा भी शक नहीं कि, संसार में एकमात्र स्त्री ही के कारण, पुरुष को तरह-तरह की जिल्लते उठानी और जगह-जगह बे-इज्जती सहनी पड़ती है।

कुण्डलिया।

अभय हरिण-शावक-नयन, काम-बाण-सम नार।
जो घर में होती नहीं, तो सहजहिं होतौ पार।
सहजहिं होतौ पार, बैठ गिरगुहा सिद्ध वन।
जहाँ तरुन सों अंग, खुजात फिरैं हरवाहन।
स्वच्छ फटिक हिम-शैल, तले जहँ वहैं गंगपय।
निशिदिन धरि हरि-ध्यान, चित्तकूं राखिय निर्भय ॥६७॥

सार—स्त्रियोंके कारण ही पुरुषों को जगह-जगह नीचा देखना पड़ता है; नहीं तो वन-पर्वतोंमें किस चीज़ का अभाव है।

67 *If there would not have been women who are the instruments of Kamdeva and who have eyes like those of the fearless young deer, then what high-minded man would have humiliated himself by bowing his head down before men and*

women, leaving the blissful region of the Himalayas in whose caves pious men reside and where the bull of God Shiva rubs his shoulder against the trees and where the mountain slabs are washed by the water of the Ganges

—*—

संसार तव निस्तारपदवी न दवीयसी ।
अन्तरा दुस्तरा न स्युर्यदि रे मदिरेक्षणाः ॥६८॥

हे संसार ! यदि तुझ में मद से मतवाले नेत्रोंवाली दुस्तर स्त्रियाँ न होतीं, तो तेरे परली पार जाना कुछ कठिन न होता ॥६८॥

खुलासा—मनुष्य इस लोक में, कर्म-बन्धन या जन्म-मरण की फाँसी से पीछा छुडाने के लिए आता है। मोक्ष की साधना के लिये ही, उसे मनुष्य-देहरूपी पारसमणि मिलती है कि, वह नियत अवधि के भीतर, उससे मोक्षरूपी सोना बना ले। पर, यहाँ आने पर, उसका बचपन तो खेल-कूद और पढ़ने-लिखने में कट जाता है। यौवनावस्था आने पर वह चञ्चलनयनी, उन्नत नितम्बिनी, पीन-पयोधरा कामिनियों के रूप-जाल मे फँस जाता है। इनमे वह ऐसा भूलता है, कि उसकी सारी उम्र बीत जाती है और उसे अपने कर्त्तव्य-कर्म की याद तक नहीं आती। इतने में ही उसकी अवधि पूरी हो जाती है और उससे पारसमणि रूपी मनुष्य-देह छिन जाती है यहाँ से वह मोक्षरूपी सोना बनाये बिना ही, फिर कोरा चला जाता है। तात्पर्य यह कि, कामिनियों के कारण से

मनुष्य इस संसार-सागर से पार नही हो सकता। उसके इस काम में वे बाधा डालती हैं। सच है, ससार मे यदि कामिनी और काञ्चन न होते, तो फिर किसी को भी इस भव-सागर के पार करने में कठिनाई न होती। रसिक कवि ने खूब कहा है--

दोहा।

जो होती नहिं नार, मदमाती मृगलोचनी।
जगके परली पार, गमन न दुर्लभ कछुक था॥

सोरठा।

जो नहिं होती नार, तो तरिबौ जग में सुगम।
यह लॉबी तरवार, मार लेत अधबीचही॥

संसार-सागर से पार होने में, नेत्रों से जादू करनेवाली सुन्दरी स्त्रियाँ ही बाधा-स्वरूप हैं।

68 O world, it would not have been very difficult to cross it if there were not this great obstacle in the form of woman having beautiful eyes

—*—

यौवन-प्रशंसा।

—*—

राजंस्तृष्णांबुराशेर्नहि जगति गतः कश्चिदेवावसानं
कोवार्थोऽर्थैः प्रभूतैः स्ववपुषि गलिते यौवने सानुरागे॥

गच्छामः सद्म तावद्विकसितनयनेन्दीवरालोकनानां
यावच्चाक्रम्य रूपं झटिति न जरया लुप्यते प्रेयसीनाम्॥८६॥

हे महाराज! इस तृष्णारूपी समुद्र के पार कोई न जा सका। अतीव प्यारी यौवनावस्था के चले जाने पर, अधिक धन-सञ्चय से क्या लाभ होगा? हम शीघ्र ही अपने घर क्यों न चले जायँ, क्योंकि, कहीं ऐसा न हो कि, विकसित कुमुद और कमल के समान नेत्रों वाली हमारी प्यारियों के रूप को वृद्धावस्था घुला-घुलाकर बिगाड़ डाले।

खुलासा—राजन! तृष्णा-पिशाचिनी का अन्त नहीं। यह दिन-दिन बढ़ती ही जाती है। हजार होने पर लाख की, लाख होने पर करोड़ की और करोड़ होने पर अरब-खरब की अथवा साम्राज्य की इच्छा होती है। मनुष्य बूढ़ा हो जाता है, उसके बाल पक जाते हैं, दाँत गिर जाते हैं, पर तृष्णा न बूढ़ी होती है और न उसका कोई अङ्ग क्षीण होता है। वह तो बढ़ती ही जाती है। किसी ने कहा है:—

निःस्वः वष्टि शतं शती दशशतं लक्षं सहस्राधिपो,
लक्षेशः क्षितिपालतां क्षितिपतिश्चक्रेशतां वाञ्छति।
चक्रेशः पुनरिन्द्रतां सुरपतिर्ब्राह्मं पदं वाञ्छति,
ब्रह्मा शैवपदं शिवो हरिपदं आशावधिं को गतः?॥

निर्धन सौ रुपये चाहता है, सौ वाला दश हजार चाहता है,

और हज़ारपति लाख रुपये चाहता है, लखपति राजा होना चाहता है, राजा सम्राट् होना चाहता है, सम्राट इन्द्र होना चाहता है, इन्द्र ब्रह्मा होना चाहता है, ब्रह्मा शिव होना और शिवजी विष्णु होना चाहते हैं। किस की आकाक्षा का शेष हुआ है? मतलब यह, आज तक कोई भी इस तृष्णा-नदी के पार न जा सका। क्या हम इस के पार पहुँच सकेंगे? हरगिज़ नहीं। तब हम क्यों इस पिशाचिनी के फेर में पड़कर, अपनी जवानी को बर्बाद करें, क्योंकि जवानी एक बार जाकर फिर नही आती? महाकवि दाग ने कहा है —

रहती है कब बहारे जवानी, तमाम उम्र।
मानिन्द बूये गुल, इधर आई उधर गई॥
जो जाकर न आये, वह जवानी देखी।
जो आकर न जाये, वह बुढापा देखा॥

जवानी की बहार सारी उम्र कहाँ रहती है? वह तो फूलो की खुशबू की तरह इधर आती है और उधर चली जाती है। जवानी तो जाकर फिर नहीं आती और बुढ़ापा आकर फिर नहीं जाता।

औरभी किसी हिन्दी-कवि ने कहा है—

सदा न फूले तोरई, सदा न सावन होय।
सदा न जोबन थिर रहे, सदा न जीवे कोय॥

अगर तृष्णा के फेर में पडे रहने से, इधर हमारी जवानी चली

गई और उधर हमारी प्राणप्यारी की जवानी चली गई, तो हमारे धन जमा करने से क्या लाभ होगा ? हमने अपनी आज़ादी इसी लिये खोई है कि, हम धन कमाकर, घर में जा, अपनी नवयुवती का यौवन-सुख भोगें पर हमारे एक इसी धुन में लगे रहने से सब चौपट हो जायगा। इसलिये हमें शीघ्र ही घर जाना चाहिये और जवानी के, प्रातःकालीन दीपक के समान, निस्तेज होने से पहले, अपनी प्राणवल्लभा की उठती जवानी का आनन्द उपभोग करना चाहिये। क्योंकि, यदि हम प्रवास में रहे और प्यारी हमारे पास न रहे—हम से दूर रहे, तो हमारा धन और हमारी जवानी दोनो ही वृथा हैं। ऐसी जवानी और ऐसी दौलत से कोई लाभ नहीं। किसी ने कहा है—

वित्तेन किं ? वितरणा यदि नास्ति दीने,
किं सेवया ? यदि परोपकृतौ न यत्न
किं सङ्गमेन ? तनयो यदि नेक्षणीय ।
किं यौवनेन ? विरहो यदि वल्लभाया ॥

अगर ग़रीब और मुहताजों को धन न दिया जाय, तो धन के होने से क्या लाभ ? वह धन निष्फल है। यदि पराया उपकार न किया जाय, तो सेवा निष्फल है। जिस स्त्री-संगम से पुत्र न पैदा हो, वह स्त्री-संगम वृथा है। यदि प्यारी के साथ जुदाई हो, तो जवानी वृथा है। ऐसी जवानी से क्या फ़ायदा ? सारांश यह है, कि जब स्त्री-पुरुष दोनो ही जवान हों, तभी

काम-क्रीडा का आनन्द है। बुढ़ापे मे क्या रक्खा है? स्त्री-भोग का आनन्द जवानी में ही है, क्योंकि जवानी में ही बदन में ताक़त रहती है और जवानी में ही कामदेव का जोश रहता है। अगर स्त्री का यौवन उतार पर आजाय, उसके स्तन सिकुड जायँ या थैले से लटकने लगें, तब क्या आनन्द है? उस समय स्त्री उल्टी बुरी लगती है। जो मज़ा है, वह नवीना नारी में ही है।

कहा है —

नववस्त्र नवच्छत्र नव्या स्त्री नूतन गृहम् ।
सर्वत्र नूतन शस्त सेवकान्ने पुरातने ॥

सब देशों में नया कपडा, नया छाता, नयी स्त्री और नया घर—ये अच्छे समझे जाते हैं। केवल नौकर और अन्न ये पुराने अच्छे समझे जाते हैं। कहा है :—

शशी दिवसधूसरो गलितयौवना कामिनी,
सरो विगतवारिज मुखमनक्षर स्वाकृते ।
प्रभुर्धनपरायणः सततदुर्गत सज्जनो ।
नृपाङ्गणगत खलो मनसि सप्तशल्यानि मे ॥

दिन का मलिन चन्द्रमा, क्षीणयौवन कामिनी, बिना कमलों का तालाब, सुन्दर सूरतवाला निरक्षर—मूर्ख, धनका लोभी स्वामी, दरिद्री सज्जन और राजसभा में दुष्ट—ये सात मेरे हृदय में काँटे की तरह खटकते हैं।

सारांश यह है कि, सब काम अपने-अपने समय पर अच्छे लगते और अपना फल देते हैं। खेती सूख जाने पर बरसने से क्या लाभ? समय पर चूक कर, पीछे पछताने से क्या फायदा? पानी आ जाने पर, मेड बाँधने से क्या प्रयोजन? आग लग जाने पर, कुआँ खोदने से क्या मतलब? नदी आजाने पर बन्धा बाँधने और बुढ़ापा आजाने पर शादी करने से क्या लाभ? नीति में लिखा है —

(१)

निर्वाण दीपे किमु तैलदानं
चौरे गते वा किमु सावधानम।
वयोगते किं वनिता-विलास
पयोगते किं खलु सेतुबन्ध॥

(२)

शीतेऽतीते वसनमशनं वासरान्ते निशान्ते
क्रीडारम्भः कुवलयदृशां यौवनान्ते विवाहः॥
सेतोर्बन्धः पयसि गलिते प्रस्थिते लग्नचिन्ता
सर्वं चैतद्भवति विफलं स्वस्वकाले व्यतीते॥

दीपक बुझ जाने पर तेल डालने से क्या? चोर के माल ले जाने पर सावधानी से क्या? जवानी जाने पर वनिता-विहार से क्या? जल के चले जाने पर पुल बाँधने से क्या? ॥१॥

जाड़ा चला जाने पर कपड़े पहनने से क्या? साँझ हो जाने

पर भोजन करने से क्या? रात बीत जाने पर नीलकमलों के समान नेत्रोंवाली स्त्रियों के साथ प्रसङ्ग करने से क्या? जवानी चली जाने पर विवाह करने से क्या? जल के चले जानेपर पुल बाँधने से क्या? प्रस्थान कर देने पर, लग्न-चिन्ता से क्या? अर्थात ये सब अपना-अपना समय बीतने पर निष्फल हैं ॥२॥

बुढापे में चौदह-चौदह और सोलह-सोलह बरस की उठती जवानी की कामिनियों के साथ जो ना-समझ बूढ़े खुर्राट विवाह करते हैं, वे इस श्लोक से शिक्षा ग्रहण करे। क्या सिरसका फूल हीरेमें छेद कर सकता है? ऐसे अधर्म्मियो की इस लोक में बदनामी होती और परलोक में उन्हें भयङ्कर दण्ड मिलता है। इन की स्त्रियाँ इनके लात मार कर, या तो कहार और रसोईयों से आशनाई करती अथवा साईस और कोचवानों के साथ भाग जाती हैं। हाँ, कोई-कोई कलियुगी पतिव्रता, अपने बूढ़े बालम को, बिना जरासा भी कष्ट दिये, सेत-मेत में, पुत्ररत्न देकर, उसके कुल का नाम चला देती अथवा वंश को डूबने से बचा लेती है। धिक्कार है! ऐसे विवाह और ऐसी औलाद को? ऐसी वर्णसंकर सन्तान से वंश का नाम लोप हो जाना कहीं भला।

कुण्डलिया।

नरवर! तृष्णासिन्धु के, पार न कोई जाय।
कहा अर्थ संचय किये, कालसर्प वय खाय।

कालसर्प वय खाय, नेह अरु प्रेम नसावै ।
कहा होय घर गये, तबै कछु हाथ न आवै ।
तासों तबलों वेग, भाग चलिये द्वारे घर ।
कमलनयन तिय रूप, जरा जबलों नहिं नरवर ॥६९॥

सार---कमलनयनी कामिनियों के भोगने का समय युवावस्था ही है। जो पुरुष धन-तृष्णा में फँस,अपनी और अपनी पत्नी की जवानी का सुख नहीं भोगते,वे बड़े ही मूर्ख हैं। धन भी तो सुख-भोगों के लिये ही कमाया जाता है; जब सुख-भोग न भोगे, तब धन कमाना वृथा ही हुआ।

69. O Sovereign, no one has been able to cross this ocean of desires, and when this my young age full of affection is lost in itself, then what is the use of earning much wealth I should therefore go home before old age takes away the beauty of my beloved lady whose eyes are like blossomed lotuses

---

रागस्यागारमेकं नरकशतमहादुःखसंप्राप्तिहेतु-
र्मोहस्योत्पत्तिबीजं जलधरपटलं ज्ञानताराधिपस्य ॥
कन्दर्पस्यैकमित्रं प्रकटितविविधस्पष्टदोषप्रबन्धं
लोकेऽस्मिन्नह्यनर्थनिजकुलदहनं यौवनादन्यदस्ति ॥७०॥

अनुराग के घर, नरक के नाना प्रकार के दुःखो के हेतु, मोह की उत्पत्ति के वीज, ज्ञानरूपी चन्द्रमा के ढकने को मेघ-समूह, कामदेव के मुख्य मित्र, नाना दोषो को स्पष्ट प्रकटानेवाले और अपने कुल को दहन करनेवाले—यौवन के सिवा, इस लोक में, दूसरा कोई अनर्थ नहीं है ॥७०॥

खुलासा—सारी आफ़तों का मूल—अनुराग, यौवनावस्था में ही होता है। इस अवस्था में ही मनुष्य को प्रेम या इश्क़ की बीमारी लगती है। उस्ताद जौक कहते हैं:—

इश्क का जोश है जब तक, कि जवानी के हैं दिन।
यह मर्ज करता है शिद्दत, इन्हीं अय्याम में खास ॥

प्रेमरूप व्याधि के उभरने का खटका जवानी में ही रहता है। ये दिन ही इस बीमारी के लिये ख़ास हैं।

जब मनुष्य पर इश्क का भूत सवार हो जाता है, तब वह, ज्ञानी और पण्डित होने पर भी, अज्ञानी और मूर्ख हो जाता है, उसे बुरे-भले का विचार नहीं रहता। उसकी आँखों के सामने उसका माशूक ही हरदम फिरता रहता है। वह अपने माशूक को प्राप्त करने के लिये नाना प्रकार के उपाय करता है। यदि उसकी मनष्कामना पूरी नही होती, तो वह कुपित होता है। क्रोध से उसकी रही-सही बुद्धि भी मारी जाती है। बुद्धि के नष्ट होने से मनुष्य विना पतवार की नाव की तरह शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। अनेकों नौजवान इस प्रेम या इश्क की बीमारी में

गिरफ्तार होकर जान से मारे गये। अनेकों के घर तबाह हो गये और अनेको करोडपति खाकपति हो गये। स्पष्ट है कि, अनुराग या मुहब्बत हजारों आफतों की जड है। अनुरागी इस जन्म में स्त्री का गुलाम होकर रहता है। वह काठपुतली की तरह उसे जो नाच नचाती है, वह वही नाच नाचता है। परमात्मा को कभी भूलकर भी याद नही करता। मौत का ख्याल न रहने से, नाना प्रकार के अत्याचार और जुल्म करता है। लेकिन यह अनुराग जवानी में ही होता है, इसीलिये कवि ने जवानी की निन्दा की है। इसमें शक नही कि, जवानी अनेक प्रकार के अनर्थों की जड है। कहा है —

यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्॥

जवानी, धनसम्पत्ति, प्रभुता और अज्ञानता,—इनमे से प्रत्येक अनर्थकारी है। जहाँ ये चारों एकत्र हों, वहाँ की तो बात ही न पूछिये।

छप्पय।

इन्द्रिन को हित-धाम, काम को मित्र महाबर।
नरक दुःख को हेतु, मोह को बीज मनोहर।
ज्ञान सुधा हर-भीम, सजल सावन को बादर।
नाना विधि बरबाद करन कों, बड़ो बहादुर।

सबही अघको है मूल्य, यह यौवन अक्षताहि को कवच ।
या बिना और को कर सके, सुन्दर मुख पर श्याम कच ॥७०॥

सार---जवानी अनर्थों की जड़ है। अतः जवानी में मनुष्य को खूब सावधानी से चलना चाहिये।

70. In this world there is nothing more harmful than young age, which is the seat of affection, the root cause of the miseries of a hundred hells, the very seed for the growth of delusion, the clouds as it were for covering the moon of reasoning, the only friend of Kamdev, the door of many kinds of vices and the destroyer of its own self

---

शृङ्गारद्रुमनीरदे प्रचुरतः क्रीड़ारसस्रोतसि
प्रद्युम्नप्रियबान्धवे चतुरतामुक्ताफलोदन्वति ॥
तन्वीनेत्रचकोरपारणविधौ सौभाग्यलक्ष्मीनिधौ
धन्यः कोऽपि न विक्रियां कलयति प्राप्तेनवेयौवने ॥७१॥

शृङ्गार रूपी वृक्षों के सींचनेवाले, क्रीडारस को विस्तार से प्रवाहित करनेवाले, कामदेव के प्यारे मित्र, चातुर्य्यरूपी मोतियों के समुद्र, कामिनियों के नेत्ररूपी चकोरों को पूर्णचन्द्र, सौभाग्य-लक्ष्मी के खजाने—यौवन को पाकर, जो विकारों के वशीभूत नहीं होते वे निश्चय ही भाग्यवान् हैं ॥७१॥

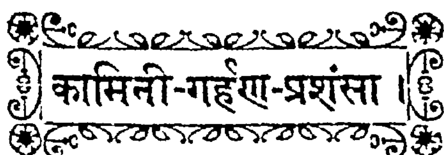
खुलासा—यौवन विषयवासनाओ को बढ़ाने वाला और भोग-विलास का जबर्दस्त सोता है। यह स्त्रियों को प्यारा लगनेवाला तथा चतुराई और सुख-सम्पत्तियो की खान है। जवानी में, मनुष्य की भोग-विलास की इच्छाएँ बहुत ही तेज हो जाती हैं, इसलिये यह बड़ा ही नाजुक समय है। इस अवस्था में, जो पुरुष अपनी इन्द्रियों को वश में रख सकता है, उन्हें कुमार्ग में जाने से रोक सकता है, वह सचमुच ही भाग्यवान् है। धातुओं के क्षीण होने पर, बुढ़ापा आने पर, तो सभी शान्त हो जाते हैं; पर इस जवानी दीवानी में ही जो शान्त रहे, स्त्रियो के जाल में न फँसे, वही प्रशंसा-योग्य है। भीष्मपितामह ने अपनी सारी उम्र बिना स्त्री के ही बिता दी; जीवन-भर ब्रह्मचर्य-व्रत पालन किया। यदि वे चाहते, तो अनेक स्वर्ग की अप्सरायें उनके चरणों को धो-धोकर पीतीं। पर यदि वे ऐसा करते, तो महाशक्तिशालियों में उनकी गणना न होती और संसार उन्हें धर्मधुरीण शूरशिरोमणि न कहता।

छप्पय।

सार—जवानी में जो विकारों के वशीभूत नहीं होते, वे निश्चयही प्रशंसापात्र हैं।

71 He is fortunate who is not beside himself on attaining this young age which is like the raining clouds to the tree of love, the fountain of various enjoyments, the dear friend of Kamdev, the ocean of pearl-like dexterity, the full-moon to the partridge-like eye of woman and the store house of good fortune





कामिनी-गर्हणा-प्रशंसा।

कान्तेत्युत्पललोचनेति विपुलश्रोणीभरेत्युत्सुकः
पीनोत्तुङ्गपयोधरेति सुमुखाम्भोजेति सुभ्रूरिति ॥
दृष्ट्वा माद्यति मोदतेऽतिरमते प्रस्तौति जानन्नपि
प्रत्यक्षाशुचिपुत्रिकां स्त्रियमहो मोहस्य दुश्चेष्टितम् ॥७२॥

अहो! मोह की कैसी विचित्र महिमा है कि, बड़े-बड़े विद्वान् पण्डित भी, प्रत्यक्ष ही अपवित्रता की पुतली—स्त्री को देखकर मोहित हो जाते हैं; उसकी स्तुति करते हैं, आनन्दित होते हैं, रमण करते हैं और उत्कण्ठित होकर हे कमल-नयनी! हे विशाल नितम्बोंवाली! हे विशालाक्षी! हे कल्याणि!

हे शुभे! हे पुष्टपयोधरवाली! हे सुन्दर भौंहोंवाली प्रभृति नाना प्रकार के सम्बोधनों से उसे सम्बोधित करते हैं ॥७२॥

खुलासा—स्त्री हर तरह से अपवित्र और गन्दगी का पिटारा है। उसके स्तन मांस के लौंदे हैं, उसका मुँह कफ का आगार है, उसकी जाँघें मूत्र से आप्लावित रहती हैं और उसके मल-मूत्र त्यागने के स्थानों में दो अङ्गुल का भी अन्तर नहीं—ऐसी स्त्री की, साधारण नहीं, बड़े बड़े विद्वान् और पण्डित खुशामद करते हैं, उसे अच्छे से अच्छे नामों से सम्बोधन करते हैं, यह क्या मोह की महिमा नहीं है? मोह उनकी विद्या बुद्धि और ज्ञान को नष्ट कर देता है, इसी से वे गन्दगी की पुतली को संसार के सभी पदार्थों से अधिक चाहते और प्यार करते हैं। निश्चय ही, मोह ने जगत् को अन्धा कर रक्खा है। देखिये, विद्वानों ने स्त्रियोंकी कैसी तारीफ़ेंकी हैं ,—

स्त्रियों की तारीफों के नमूने।

—*—

संस्कृत कवियों की उक्तियां।

[illegible]।
[illegible] ॥

हे सुन्दरि! तेरे हार के मोती तारों की तरह खिल रहे हैं। तेरे सफ़ेद वस्त्र चाँदनी का चमत्कार दिखा रहे हैं और तेरा मुख पूर्णमासी के चन्द्रमा की तरह शोभायमान है अतः तू निश्चय ही [illegible] है।

श्यामलेनांकित बाले भाले केनापि लक्ष्मणा।
मुखं तवांतरासुप्तभृङ्गफुल्लांबुजायते ॥ १०३ ॥

हे बाले! तेरी पेशानी या मस्तक में जो एक काला-काला तिल सा है, उससे तेरा चेहरा ऐसा मालूम होता है, गोया खिले हुए कमल के बीच में भौंरा सो रहा हो।

स्मयमानाननां तत्र तां विलोक्य विलासिनीम्।
चकोराश्च चरीकाश्च मुदं परतरां ययु ॥ ११८ ॥

उस मन्द-मन्द मुस्कराने वाली नायिका को देखकर चकोरों और भौंरों का खूब आनन्द आया, यानी चकोर उसे चन्द्रमा समझ कर खुश हुए और भौंरे कमल समझ कर।

दिवानिशं वारिणि कण्ठदघ्ने दिवाकराराधनमाचरन्ती ॥
वक्षोजतायै किमु पक्ष्मलाक्ष्यास्तपश्चरत्यम्बुजपङ्क्तिरेषा ॥१२३॥

जल में कंठ तक रहकर, दिन-रात सूर्य की आराधना करने वाली, यह कमलों की क़तार क्या सुनयनी नायिका के कुच बनने के लिये तप कर रही है?

आननं मृगशावाक्ष्या वीक्ष्य लोलालकावृतम् ॥
भ्रमद्भ्रमरसम्भारं स्मरामि सरसीरुहम् ॥१३१॥

हिरन के बच्चे की सी आँखों वाली सुन्दरी के मुँह को चञ्चल अलकों से ढका हुआ देखने से मुझे ऐसा मालूम होता है, गोया कमल के ऊपर भौंरों का झुण्ड घूम रहा है।

जगदन्तरमम्रृतमयैरंशुभिरापूरयन्नितराम् ॥
उदयति वदनव्याजात् किमु राजा हरिणशावनयनाया ॥

मृगशावकनयनी के चेहरेके बहाने से संसार को अपनी अमृत-मय किरणों से भर देने के लिये, क्या चन्द्रमा उदय हुआ है ?

तिमिर शारद चन्दिरचन्द्रिका' कमलविद्रुम चम्पककोरका ।
यदि मिलकति तदापि तदानन खलु तदा कलया तुलयामहे ॥

घोर अन्धकार, शरद्का चन्द्रमा, चाँदनी. कमल, मूँगा और चम्पाकली,—ये सब अगर किसी समय एकही पदार्थमें इकट्ठे पाये जाये, तो मैं उस नायिका के चेहरे के एक अंश की तुलना कर सकूं, यानी घोर अन्धकारसे उस के काले-स्याह बालों की, शरद् के चाँदसे उसके मुखकी, चाँदनीसे लावण्यकी, कमलसे नेत्रों की, प्रवाल से होठोंकी और चम्पाकी कलियोंसे दाँतोकी तुलना करूँ।

उर्दू-कवियों की मनोहर उक्तियाँ।

कोई स्त्रियों के दाँतो की तारीफ करता है, तो कोई उसके होठोंकी प्रशंसा में कविता रचता है, और कोई उसके गालके तिल पर ही अपनी शायरी का खातमा करता है। उर्दू-कवियों की तारीफों के नमूने भी देखिये —

दाँत यूँ चमकें हँसीमे रात उस माहपाराके।
मैंने जाना, माहतायाँ पारा पारा होगया ॥१॥

अश्क के कतरे, नहीं देखते हैं उस रुख पर।
सितारे धूप में, हम दोपहर को देखते हैं ॥२॥

माहतायाँ = चाँद। माहपारा = चन्द्रवदनी। पारा पारा हो गया = टुकड़े-टुकड़े हो गया। अश्क = आँसू। रुख = गाल।

बहर में मोती पानी पानी, लाल का खूँ पत्थर में।
देखो, लबो दन्दाँसे, तुम्हारे लालो गुहरके झगड़े हैं ॥३॥

न क्यों तेरे दाँतोंसे, झूठा हो मोती।
कि दावा किया था, सफाईका झूठा ॥४॥

वह चन्द्रमुखी रातको जो हँसी, तो उसकी दाँतों की क़तार की चमक से मुझे ऐसा मालूम हुआ ; गोया चन्द्रमाके टुकड़े-टुकड़े हो गये ॥१॥

उसके गाल पर पसीनेकी बूँदें नहीं हैं, वे तो दोपहरके समय धूप में तारे दिखाई दे रहे हैं ॥२॥

तेरे दातों की आभा को देखकर, समन्दर में मोती शर्म के मारे पानी पानी हो रहा है और तेरे ओठों की सुर्खी को देख कर लाल का दिल पहाड़ की गुफा में स्पर्द्धा के मारे खून हो गया है। देख तो सही, तेरे दाँत और होठों के कारण, मोती और लालों की कैसी बुरी दशा हो रही है ॥३॥

मोती ने तेरे दाँतों से सफाई में बढ़ जाने का दावा किया था मगर वह तेरे दाँतों के मुकाबले में झूठा निकला ॥४॥

एक हिन्दी कवि की भी काव्यकला-कुशलता का नमूना देखिये —

गोरे मुख पर तिल लसत, ताहि करूँ प्रणाम।
मानो चन्द्र बिछाय कर, पौढे शालग्राम ॥

गोरे मुँह पर जो तिल शोभायमान है, उसे मैं प्रणाम करता हूँ,

बहर = समुद्र । कोह = पहाड़ । लब = होंठ ।

क्योंकि मुझे ऐसा जान पड़ता है, मानो चन्द्रमाको बिछाकर शाल-ग्राम सो रहे हों।

मियाँ नजीर की तारीफोंके भी चन्द नमूने देखिये —

छोटासा खाल, उस रुख खुरशीद ताब में।
जर्रा समा गया है, दिले आफताब में॥

उस सूर्य की भाँति चमकनेवाले मुख पर छोटासा तिल देखने में ऐसा मालूम होता है, जैसे सूर्य में एक छोटा सा कण।

सहर इस झमक से आया, नजर एक निगार राना।
कि खुद उसके हुस्ने रुखको, लगा तकने जर्रा आसा॥

सवेरे ही मुझे एक सुन्दर प्रतिमा दिखाई दी कि, मैं सूर्य-कण की भाँति उसके मुखारविन्द की शोभा को देखने लगा, यानी सूर्य उसके सामने कण की तरह था।

बुतो की मजलिस में शब को माहरू,
जो और टुक भी कयाम करता।
कनिश्त वीरां सनम को बन्दा,
बरहमनों को गुलाम करता॥

अगर वह चन्द्रमुखी मूर्त्तियों की सभा में रात को जरा देर और ठहर जाती, तो मन्दिर उजड जाते, मूर्त्तियाँ उसकी गुलाम हो जातीं, ब्राह्मण—पुजारी उसके सेवक हो जाते। उसके सौन्दर्य पर देवता और मनुष्य दोनों मोहित हो जाते हैं।

सफाई उस की झलकती है, गोरे सीने में।
चमक कहां है, य अलमास के नगीने में॥

उसके गोरे सीने में जो सफाई और चमक दमक झलक रही है, अलमास के नगीने में वह चमक कहाँ है ?

नहीं हवा में य बू नाफए खुतन की सी।
लपट है य तो, किसी ज़ुल्फे पुरशिकनकी सी॥

हवा में जो महक आ रही है, यह खुतन देश की कस्तूरी की नहीं है। मुझे तो यह उसकी घूँघर वाली लटों की महक सी मालूम होती है।

महाकवि ग़ालिब के भी चन्द नमूने देखिये :—

जहाँ तेरा नक़्शे कदम देखते है।
खयाबां खयाबां इरम देखते हैं॥

जहाँ हमें तेरा चरण चिह्न दिखाई देता है, उसी स्थान को हम स्वर्ग से बढ़कर समझते हैं।

महाकवि दाग़ का भी एक नमूना लीजिये :—

बुझ गया गुलरू के आगे, शमा और गुलका चिराग़।
बुलबुलों में शोर, परवानों मे मातम हो गया॥

उसके सुन्दर मुख के आगे दीपक और फूल दोनों की प्रभा फीकी पड़ गई। तभी तो बुलबुलें शोर कर रही हैं और परवाने (पतङ्ग) शोक मना रहे हैं।

कहाँ तक लिखें, विद्वानों ने स्त्रियों की तारीफ़ में पोथे के पोथे लिख डाले हैं।

उपदेशक की सलाह।



अगर कोइ ज्ञानी पुरुष इन स्त्री-दासोंको नसीहत देता है, इनको स्त्रियों की प्रीतिका नफा-नुकसान समझता है, तो ये चिढ़ते और उसे खोटी-खरी सुनाते हैं। अगर कोई कहता है भैया! यह राह—प्रेमकी राह—बड़ी ख़राब है। इसमें बड़ी तकलीफें हैं। महाकवि दाग़ ने कहा है :—

बुरी है ऐ दाग़ राहे उल्फ़त।
ख़ुदा न ले जाय ऐसे रास्ते।
जो अपनी तुम ख़ैर चाहते हो।
तू भूलकर दिल्लगी न करना।

ऐ दाग़! प्रेम की राह बुरी है। भगवान् इस राह से किसी को न ले जाय। जो तुम अपना भला चाहते हो, तो भूलकर भी इस राह पर क़दम न रखना।

उस्ताद ज़ौक़ ने भी कहा है :—

मालूम जो होता अञ्जामे मुहब्बत।
लेते न कभी भूल के हम नाम मुहब्बत॥

अगर मुझे प्रेम का नतीजा मालूम होता, तो मैं कभी भूल के भी प्रेम का नाम न लेता।

भाई! प्रेम का नाम लेना सहज है, पर प्रेम करना कठिन है। गोता खाना सहज है, पर उसकी लहरें सहना मुश्किल है। इस राह में मजनूँ और फरहाद की जो दुर्दशा हुई, वह क्या तुम्हें नहीं मालूम? इसमें जान तक के लाले पड़ जाते हैं। इन बातोंको सुन कर स्त्री- दास फरमाते हैं :—

स्त्री-दासका जवाब।



मर गये तो मर गये, हम इश्क़ में नासह को क्या।
मौत आने के लिये है, जान जाने के लिये॥
जिसने दिल खोया उसी को कुछ मिला।
फ़ायदा देखा, इसी नुक़सान में॥

हम इश्क में मर गये तो मर गये, उपदेशक महाशय की क्या हानि? मौत आनेको है और जान जाने को है। जिसने किसीको दिल दिया, उसेही कुछ मिला। हमने तो इसी हानिमें लाभ देखा।

उपदेशकजी! प्रेममय जीवन ही जीवन है। जिसमें प्रेम नहीं, उसका जीवन सारशून्य—थोथा है। गुलाब में काँटे हैं, पर क्या काँटोंके भयसे लोग गुलाबको छोड़ सकते हैं? चन्दनके वृक्षों पर सर्प लिपटे रहते हैं, तो क्या सर्पों के भय से कोई चन्दन को

ग्रहण नहीं करता ? मधु के छत्ते पर विषैली मधु-मक्खियाँ छाई रहती हैं, तो क्या कोई मधु का छत्ता तोड़ कर मधु नहीं लेता ? हजार दु:ख-कष्ट झेलने पड़ें, मैं झेलूँगा, क्योंकि मुझे अपनी माशूका विना नहीं सर सकता। किसी ने कहा है:—

हैं तेरी राहे मुहब्बत में, हजारों फितने।
देख मुझको, बजुज इस राहके चलता ही नहीं॥

देखिये मिष्टर शिलर महोदय कहते हैं—"I have experienced earthly happiness; I have lived and I have loved" मैंने पार्थिव जीवन का अनुभव किया है। मैंने जीवनोपयोग किया है और प्रेम भी किया है।

होल्टी महोदय कहते हैं—"Love converts the cottage into a palace of gold" प्रेम झोंपडेको सुवर्णमय महल में परिणत कर देता है।

कोरनर महोदय कहते हैं—"Only since I loved is life lovely; only since I loved knew I that I loved" जब से मैंने प्रेम किया, तभी से मैंने अनुभव किया कि मैं जीवित हूँ।

कहिये पाठक! विद्वानोंके ये जवाव सुनकर आपका दिल भरा या नहीं ? जव विद्वानों का यह हाल है,तव मूर्खों का क्या कहना? उनको दोषी ठहराना अन्याय है। जव शास्त्र-ज्ञाता पण्डित ही इन मोहिनियों के जालों में फँस जाते हैं, तव और इनसे कौन बच सकता है ? कहा है—

मनुष्य दुर्लभ प्राप्य वेदशास्त्राण्यधीत्य च।
बध्यते यदि ससारे को विमुच्यते मानव ॥

दुर्लभ मनुष्य शरीर को पाकर और वेदशास्त्र पढ़कर भी यदि मनुष्य संसार-बन्धन में बँध जावे, तो संसार-बन्धन से कौन छूटेगा ?

औरभी—

पाठका. पठितारश्च ये चान्ये शास्त्रचिन्तका ।
सर्वे व्यसनिनो मूर्खा य क्रियावान्सपण्डित ॥

जो शास्त्र पढ़ने और पढ़ाने वाले केवल शास्त्रोंको विचारते हैं, पर उन पर अमल नहीं करते, वे मूर्ख और व्यसनी हैं। जो उनको पढ़ कर स्त्री-पुत्र धन-दौलत प्रभृतिसे विरक्त होते हैं, वही पण्डित हैं।

स्त्रियां जगत् की झूठन, नरक-कूप, महागन्दी और अपवित्र हैं। इनके भीतर राध लोहू पीव और खखार प्रभृति के पनारे बह रहे हैं। यह गुम्बद की कलई की तरह ऊपर ही से सोहनी मालूम होती हैं। देखिये गिरिधर कविराय क्या कहते हैं—

कुण्डलिया।

नारी श्रेणी नरक की, है प्रसिद्ध नहीं लुकी।
यथा समान परकीया, तथा जान ले स्वकी।
तथा जान ले स्वकी, तीन को एकै रूपम्।
अस्थि मास नस चर्म, रोम मल मूत्रहि कूपम्।

कह गिरिधर कविराय, पुरुष इन कियो अजारी ।
ऐसा दुष्ट न और, जगत् में जैसी नारी ॥

कुण्डलिया ।

कान्ता उत्पल-लोचना, प्रिया कृशोदरि बाल ।
घटस्तनी पंकजमुखी, कामिनि अधर प्रवाल ।
कामिनि-अधर प्रवाल, सुभ्रु कहि-कहिके बोलें ।
आनँद अधिक उछाह, मत्त बन पण्डित डोलें ।
अशुचि पूतरी नारि, ताहि मन जाने शान्ता ।
महा नरक की खान, मोह बस मानै कान्ता ॥७२॥

अपनी और पराई, रूपवती और कुरूपा सभी नारियाँ मलमूत्रकी खान और नरकद्वार की कुञ्जी हैं; पर मोहान्ध होनेसे पण्डितों और विचारवानों को भी यह असली बात समझ नहीं पड़ती। इसी से वे इन की प्रशंसा के पुल बाँधते हैं ।

72 *How wonderful is the action of delusion because people at the sight of the women who is impurity personified eagerly describe her thus—"How beautiful is she", "she is lotus eyed", "her lips are very big in size", "her breasts are high and full grown" "her lotus-like face is very handsome and her brows are very fascinating" at her sight they are charmed, become infatuated, constantly remember her and praise her*

—*—

स्मृता भवति तापाय दृष्टा चोन्मादवर्द्धिनी ॥
स्पृष्टा भवति मोहाय सा नाम दयिता कथम् ॥७२॥

जो स्त्री स्मरणमात्र करने से सन्ताप करती है, देखते ही उन्माद बढाती है और छूते ही मोह उत्पन्न करती है, उसे न जाने क्यों प्राणप्यारी कहते हैं ? ॥७२॥

खुलासा—जिसके ख़ाली याद आने से ही मनमें वेदना सी होने लगती है, जिसके देखनेसे मनुष्य मतवाला और पागल सा हो जाता है और जिसके छूनेसे ही, विवेक और ज्ञान का नाश होकर, मोह की बढती होती है, ऐसी क़दम-क़दम पर दु ख देनेवाली स्त्री को लोग प्यारी, प्राणप्यारी, प्रिया, कल्याणी, प्राणाधिका प्रभृति क्यों कहते हैं, यह बात समझ में नहीं आती ?

वास्तवमें स्त्री दुःख और आपदाओं की खान है, पर लोगों को यह बात मालूम नहीं होती । वजह यह है कि,हिप्नोटाइज करनेवालों की तरह,स्त्री नजरसे नजर मिलते ही,अपनी जादूभरी आँखों से,मदिरा की तरह, मोह पैदा कर देती है। उस मोहसे मनुष्यका ज्ञान नष्ट हो जाता है। ज्ञान नष्ट हो जानेसे उसे कुछ-का-कुछ दीखने लगता है। जिस तरह मोहान्ध पुरुप अभक्ष्य को भक्ष्य, अकार्यको कार्य और दुर्गमको सुगम समझने लगता है , उसी तरह, साक्षात् विप होने पर भी, मोहान्ध को स्त्री विपसी न दीखकर अमृतसी दीखती है । अमृतसी दीखनेकी वजह से ही कामान्ध पुरुप उसे "प्राणप्यारी" कहते हैं ।

दोहा।

सुधि आये सुधि-बुधि हरत, दरसन करत अचेत।
परसत मन मोहित करत, यह प्यारी किहि हेत ॥७३॥

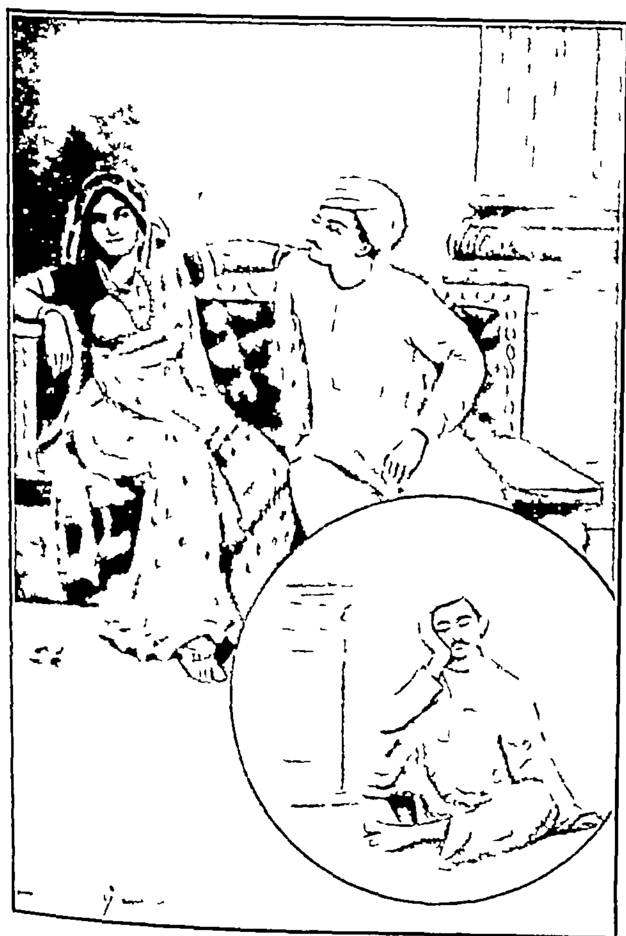
73 *How can we call a woman "beloved" whose recollection even gives pain, whose very sight increases intoxication of mind and whose touch creates a great sensation in us*

तावदेवामृतमयी यावल्लोचनगोचरा।
चक्षुः पथादपगता विषादप्यतिरिच्यते ॥७४॥

स्त्री जब तक आँखों के सामने रहती है, तब तक अमृतसी मालूम होती है, किन्तु आँखोंकी ओट होते ही, विष से भी अधिक दुःखदायिनी हो जाती है।

खुलासा—स्त्री पुरुष के पास होने से निश्चय ही अमृत सी मालूम होती है ; क्योंकि वह अपने हाव-भाव कटाक्ष और मधुर वचन तथा सेवा प्रभृति से पतिके चित्तको हाथमें लिये रहती है ; पर अलग होतेही मनमें भारी विरह-वेदना करती है। वियोग विकल पुरुष का खाना-पीना और नियमित समय पर सोना प्रभृति छूट जाता और साथही स्वास्थ्य तक नष्ट हो जाता है। स्त्रीका विरह पुरुषके शरीर पर जहरका काम करता है। उसके मन में घोर सन्ताप होता है। इसी से कहा है कि, स्त्री आँखो के सामने से हटते ही विषवत् हो जाती है।

ऐसी ही बात महाकवि कालिदास ने "शृङ्गार-तिलक" में कही है :—



स्त्री जब तक आँखों के सामने रहती है, अमृत सी मालूम होती है, आँखों की ओट होते ही विष से भी अधिक दुखदायिनी हो जाती है। इस चित्रमें, ऊपर, पुरुष स्त्रीके सामने बैठा हुआ मुख-सुधा पान कर रहा है, किन्तु नीचे जुदाई में दुखी हो रहा है, यही भाव दिखाया है।

(पृष्ठ १८८)

अपूर्वो दृश्यते वह्नि कामिन्या. स्तनमण्डले ।
दूरतो दहते गात्र हृदि लग्नस्तु शीतल ॥

कामिनी के स्तनमण्डलों में अपूर्व अग्नि है, जो दूर से तो शरीर को जलाती है और हृदय से लगाने पर शीतल हो जाती है।

मतलब यह है कि, स्त्री स्मरण करने से सन्ताप करती, देखने से चित्त को हर लेती और मनुष्य को अन्धा बना देती, छूने से बल नाश करती सम्भोग करने से वीर्य का नाश करती और नेत्रों के सामने से हटने पर विरहाग्नि में जलाती है। स्त्री से किसी तरह भी पुरुष को सुख नहीं। स्मरण करनेमें सुख, न देखने में सुख, छूने में सुख, न भोगने में सुख, पास रहने में सुख, न अलग होने में सुख। फिर भी लोग स्त्री पर जान देते है, यह क्या कम आश्चर्य की बात है?

वियोगियोंके सम्बन्धमें उर्दू कवियोंकी उक्तियाँ।



प्राणप्यारी स्त्री अथवा आशनाकी जुदाईमें पुरुष पागल सा हो जाता है। उसके शरीरमें खून और मांसका नाम नहीं रहता—हाड़ों का कङ्काल रह जाता है। जिन्दगी भार मालूम होती है। विरही पुरुष हर क्षण मौत को याद करता है, पर मौत भी, उस विपत्ति के समयमें, उससे वैर सा कर लेती है। यहाँ हम, अपने मनचले

पाठकों के मनोरञ्जनार्थ, उर्दू-कवियों की चन्द कवितायें देते हैं। पाठक देखें कि, विरही पुरुषोंको क्या हालत होती है।

वह मैं कि मुझे आलमे बालाकी खबर थी।
ऐ बेखबरी खाक नहीं अपनी खबर आज॥

एक दिन था कि, मुझे पृथ्वीही नहीं—स्वर्ग तककी बात मालूम थीं, पर आज मुझे अपनीभी खबर नहीं कि हूँ या नहीं हूँ, बेखबरी तेरा भला हो। प्यारी की जुदाई की वजह से अजब बेखबरी—बेहोशी छाई हुई है।

बेकसी सदमये हिजरां की मुझे ताब नहीं।
काश दुश्मन ही चले आये जो अहबाब नहीं॥

एक तो विरहका दुःख और उस पर विजनता, बताइये, किस तरह कोई दुःख उठाये। मैंने माना कि, मेरे मित्र नहीं हैं, जो आकर मुझे धीरज दें; पर शत्रु तो हैं, वही चले आवें, जिस से विजनता तो किसी तरह कम हो।

सब्र आना तो मुहब्बत मे, बहुत मुश्किल है।
मौत भी तो नहीं इसको, वह काफिर दिल है॥

प्रेम में धीरज आना तो बहुत कठिन है। इस काफिर दिलको मौत भी नहीं आती! यह प्रेम की आग में तप कर ऐसा कठोर

आलमेबाला = स्वर्ग। बेकसी = मजबूरी। सदमये = तकलीफ। हिजरां = वियोग। काश = खुदा करे। अहबाब = मित्र।

हो जाता है कि, मौत भी इसे शान्ति नही दे सकती। बेचारे धैर्य्य की तो बात ही क्या!

कौन गमख्वार इलाही शबेगम होता है।
अब तो पहलू में मेरे दर्द भी कम होता है॥

दुःख की रात में कोई किसी का साथी नही होता। मुझे आज अत्यन्त दुःख है। शायद, इसीलिये, हज़रते दर्द भी मेरे दिलसे आज खिसक गये हैं। उन के होने से तबियत बहलती रहती थी। (शायराना नाज़ुक ख़याली का अन्त हो गया।)

अमीर महोदय कहते हैं—

पुतलियाँ तक भी तो फिर जाती हैं, देखो दम निज़ा।
वक़्त पड़ता है, तो सब आँख चुरा जाते हैं॥

जब बुरा समय आता है, तब पुतलियाँ तक फिर जाती हैं। अपने-बेगाने सब आँख चुरा जाते हैं, कोई काम नहीं आता।

कोई और कवि कहता है :—

होता नहीं है, कोई बुरे वक़्त में शरीक।
पत्ते भी भागते हैं, खिज़ाँमें शजरसे दूर॥

बुरे समयमें कोई साथी नहीं होता, पतझड़में पत्तेभी वृक्षको छोड़ भागते हैं।

वियोगी कहता है, कि मेरा यार मेरे पास नहीं है। उसको

गमख्वार—[illegible]। पहलू—[illegible]। [illegible]—[illegible]। खिज़ाँ—पतझड़ [illegible]

शबे वस्ल खिली चाँदनी।
वह घबरा के बोले सहर हो गई।

मिलन की रात को चाँदनी ऐसी खिली कि, दिन सा मालूम होने लगा। वह घबरा कर बोले—"हाय! सवेरा हो गया, अब जुदाई के सदमे उठाने होंगे।

दी मुअज्जन ने शबे-वस्ल अज़ाँ पिछली रात।
हाय कम्बख़्तको किस वक्त ख़ुदा याद आया॥

मिलनकी रातको, तड़का होनेसे कुछ पहले, मुल्लाने अज़ाँ दी, तो वह घबरा के बोले—"हाय! कम्बख़्त को किस वक्त ख़ुदा याद आया। अब हम अलग-अलग हो जायँगे!"

किसी विरही से किसीने उसकी मिजाज-पुर्सीकी—कुशल प्रश्न किया तो आप कहने लगे—

न पूछो कि दिल शाद है या हज़ीं है।
ख़बर भी नहीं या कि है या नहीं है॥

क्या पूछते हो हमारा दिल ख़ुश है या नाख़ुश? हमें तो यह भी ख़बर नहीं कि, वह है भी या नहीं।

विरहकी रातका वर्णन उस्ताद ज़ौक़ने ख़ूब किया है। उसका

शबेवस्ल—मुलाकात की रात। सहर—सवेरा। मुअज्ज़िन=मुल्ला जो मसजिद में [illegible] रात गये अज़ाँ देता है। उस समय दीनदार मुसलमान बाद मुँह धोकर मसजिद में जा नमाज़ पढ़ते हैं। अज़ाँ—बांग। शाद—ख़ुश। हज़ीं—रंजीदा।

मुझ ज़ुल्फों के मारे को ज़ञ्जीर मत पहनाओ। मेरे बदन में ज़रा भी दम नहीं। मैं जुदाई के कष्ट उठाते-उठाते एकदम दुर्बल हो गया हूँ। मेरे क़ैद करने के लिये एक मकडी का जाला ही काफी है।

और भी :—

ये नातवां हूँ कि आया जो यार मिलने को।
तो सूरत उस की, उठाकर पलक न देख सका॥

यार की जुदाईमें ऐसा कमज़ोर हो गया हूँ कि, जब यार मुझ से मिलने को आया, तो मैं पलक उठाकर उस की सूरत तक न देख सका।

कहिये पाठक! अब तो आप ने देख लिया कि, प्यारीकी जुदाई में वियोगी पुरुषोंकी क्या दुर्दशा होती है। जब तक स्त्रियाँ सामने रहती हैं, तभी तक सामने स्वर्ग दीखता है, उनके नज़रों की ओट होते ही प्राण निकलने लगते हैं। मृत्युकाल से भी अधिक वेदना होती है।

सूचना—यदि ऐसी ऐसी शेरों और गज़लोंका आनन्द लूटना चाहते हैं, तो श्रीमान् पण्डित ज्वालादत्तजी शर्मा कृत "उस्ताद ज़ौक़", "महाकवि दाग़" और "महाकवि ग़ालिब", हरिदास एण्ड कम्पनी, कलकत्ते से मंगावें। पण्डितजी उर्दू कवियों पर आलोचनात्मक लेख लिखने में सिद्धहस्त हैं। हमने ये कविताएं आपही की पुस्तकों से उद्धृत की हैं। [illegible] रघुराज सिंह बी० ए० के लिये महाकवि नज़ीर से भी हमने कुछ शेर लिये हैं। उर्दू

नामृतं न विषं किंचिदेकां मुक्त्वा नितम्बिनीम्।
सैवामृतलता रक्ता विरक्ता विषवल्लरी ॥ ७५ ॥

सुन्दरी नितम्बिनी को छोड़कर न और अमृत है न विष। स्त्री अगर अपने प्यारे को चाहे तो अमृतलता है और जब वह उसे न चाहे, तो निश्चय ही विषकी मञ्जरी है॥७५॥

खुलासा--इस जगत् में स्त्री ही अमृत है और स्त्री ही विष है। जब वह अपने आशिक को चाहती है, तब तो अमृत सी दीखती है और वही जब अपने आशिक़ से नाराज हो उसे नहीं चाहती, तब विष हो जाती है। इस बात को पुरुषमात्र आसानी से समझ सकते हैं। स्त्री जब अपने प्यारे को प्यार करती है, तब उस का प्यारा उस पर जी-जान निछावर करता है, उस के इशारों पर कठपुतली की तरह नाचता है, पर ज्योंही वह अपने चञ्चल स्वभाव अनुसार उसे छोड़ दूसरेको चाहने लगती है त्योंही उसका वही प्यारा, उसे विष सी समझ कर, उसके प्राण-नाश पर भी उतारू हो जाता और अपनी भी जान दे देता है।

पञ्चतन्त्र में भी लिखा है —

नामृतं न विषं किंचिदेकां मुक्त्वा नितम्बिनीम्।
यस्या संगेन जीव्येत म्रियेत च वियोगत ॥

स्त्री के सिवा अमृत और विष दूसरी कोई चीज नहीं है; क्योंकि उस के सङ्ग से प्राणी जीता और उस के वियोग से मरता है।

"भामिनी विलास" में भी लिखा है.—

श्यामं सित च सुदृशो न दृशोः स्वरूप
किं तु स्फुट गरलमेतदथामृतं च ॥
नो चेत्कथ निपतनादनयोस्तदेव
मोह मुदं च नितरा दधते युवान ॥

सुलोचनी स्त्री की आँखों में जो श्यामता और शुभ्रता—कलाई और सफेदी दीखती है, वह कलाई और सफेदी नहीं है, किन्तु विष और अमृत है। यदि यह बात न होती, तो युवा पुरुष उसकी नज़र-से नज़र मिलते ही मोहित और आनन्दित न होते।

स्त्री की आँखोंमें जो श्यामता या कलाई है, वह विष है और जो शुभ्रता या सफेदी है, वह अमृत है। जिसे वह खुश होकर अमृत की नज़र से देखती है, उसे परम आनन्द होता है और जिसे वह नाराज़ होकर विष की नज़र से देखती है, उसे मोह या दुःख होता है। क्या खूब कहा है! वाह! पण्डितराज वाह!

दोहा।

नहिं विष नहिं अमृत कहूँ, एक तिया तू जान।
मिलवे में अमृत-नदी, बिछुरे विष की खान ॥७५॥

सार--स्त्रीही अमृत और स्त्री विष है। जब वह चाहे तब तो अमृत है और जब न चाहे तब विष है।

75. There is no better nectar than a woman and no worse poison than a woman also. If she is loving, she is a creeper of nectar, but if she forsakes, she is verily a creeper of poison

—*—

आवर्त: संशयानामविनयभवनं पत्तनं साहसानम्।
दोषाणां सन्निधानं कपटशतमयं क्षेत्रमप्रत्ययानाम्॥
स्वर्गद्वारस्य विघ्नो नरकपुरमुखं सर्वमायाकरण्डम्।
स्त्रीयन्त्रं केन सृष्टं विषममृतमयं प्राणिनां मोहपाशः॥७६॥

सन्देहों का भँवर, अविनय का घर, साहसों का नगर, पाप-दोषों का खजाना, सैकड़ो तरह के कपट और अविश्वास का खेत, स्वर्ग-द्वार का विघ्न, नरक-नगर का द्वार, सारी मायाओं का पिटारा, अमृत के रूप में विष और पुरुषों को मोह-जाल में फँसाने वाला स्त्री-यन्त्र न जाने किसने बनाया ?

सुन्दरी स्त्रियाँ ऊपरसे गोरी पर भीतरसे काली होती हैं। इन का शरीर फूल की तरह कोमल और कमनीय होता है, पर इनका हृदय वज्रवत् कठोर होता है। ये दान मान, सेवा, अस्त्र और शस्त्र किसीसे भी वशमें नहीं होतीं। न कोई इनको प्यारा है और न कोई कुप्यारा। इनका स्वभाव है कि, ये नये-नये पुरुषोंकी अभिलाषा किया करती हैं। लज्जा, नीति, चतुराई और भयके कारणसे ये सती नहीं बनी रहतीं, केवल चाहने वाला न मिलने या मौका

हाथ न आने से ही ये सती बनी रहती हैं। असत्य, साहस, माया-मत्सरता और लोभ,—इनमें स्वभावसे ही होते हैं। पुरुषों से इनमें दूनी क्षुधा, चौगुनी शर्म, छैगुनी हिम्मत या बुद्धि होती है और कामदेव तो अठ गुना होता है। जब ये अपनी बराबर वालियों के साथ एकान्त में बैठती हैं, तब कहा करती हैं —'अहो, वेश्याएँ बड़ा आनन्द करती हैं। वे स्वतन्त्रता-पूर्वक नये-नये पुरुषों को भोगतीं और इच्छानुसार उन का धन ख़र्च करती हैं।" अथवा कोई-कोई कहती हैं —"मेरा मर्द तो पशु है। भोग-विलास की बातें तो जानता ही नहीं। सझा होते ही भैंस की तरह पड जाता है। मैंने इस का हाथ पकड़ कर कुछ भी सुख न पाया। *देख! फलानी का पति कैसा छैल छबीला नटनागर है इत्यादि।"* जो पुरुष इन की खूब खुशामद करता है, इन की फरमायशों को ज़बान से निकलते ही पूरी करता है। साथ ही रूपवान्, विद्वान् धनवान और गुणवान होता है, उसे छोड कर ये महा धूर्त्त नीच और अधम के साथ चली जाती हैं। कोई पाश्चात्य विद्वान् कहते हैं—"A women in love is a very poor judge of character" स्त्री जिससे चाहती है या जिससे आशनाई करती है, उसके चरित्र की परख नहीं कर सकती। कहा है—

गुणाश्रय कीर्त्तियुत च कान्तं, पतिरतिज्ञं सधनं युवानम्।
विहाय शीघ्र वनिता व्रजन्ति, नरान्तरं शीलगुणादिहीनम्॥

गुणाधार, कीर्त्तिमान्, सुन्दर, रतिक्रीडा-कुशल, धनवान् और

अज्ञान पुरुष को भी त्यागकर स्त्रियाँ नीच, निर्गुण और कुरूप के साथ चली जाती हैं" ।

दुष्टा स्त्रियाँ मिथ्या विलास-चिह्न दिखाकर अपने पतिको पागल रखती हैं और उससे पैर तक दबवाती हैं। एकको नेत्र-विकारोंसे रिझाती हैं, दूसरेके साथ वचन-विलास करती हैं, तीसरेको चेष्टाओं से प्रसन्न करती हैं और चौथेको मोहमें फँसाती हैं। स्त्रियाँ बहुरूपिणी हैं। जब यह कामवती होती हैं और पर-पुरुषसे मिलती हैं, तब ऐसे-ऐसे छलबल और कौशल करती हैं, कि चतुर-से चतुर पुरुष की अक्ल काम नहीं करती। उस समय, ज़रूरत होने से, ये अपने पति पुत्र पिता माता तक की हत्या कर सकती हैं।* स्त्री के मन में क्या है, वह कब क्या करेगी, इन बातों का जानना बड़ा कठिन है।† लोक में कहावत भी मशहूर है—"त्रिया चरित्र जाने नहीं कोई, खसम मार कर सत्ती होई।" शास्त्रों में भी कहा है—

---

* संसार में ऐसा कौनसा नीचे से नीचा काम है, जो इस प्रेम के कारण नहीं करना पड़ता ? प्रेम-पन्थ के पथिकों को ज़ात पाँत तो क्या चीज़ है, अपने प्यारे माता-पिता, बहन-भाई और अपनी औलाद तक से मुँह मोड़ना और नाता तोड़ना पड़ता है। अभी हाल ही में सुना है कि, हमारे एक परिचित की बेवा बहन अपने प्यारे, आँखों के तारे, पाले पनासे दो पुत्रों को छोड़ एक यवनके साथ भाग गई। किसीने ठीक ही कहा है—Cruel love! what is there to which thou dost not drive mortal hearts?" ऐ निर्दयी प्रेम! संसार में ऐसा क्या है, जिसे करने पर तू मनुष्योंको विवश नहीं करता ?

† डेकरैने कहा है—"I think women have an instinct of dissimulation, they know by nature how to disguise their emotions far better the most than the most consummate male courtiers can do." मेरे विचार में, स्त्रियों में कपटाचार स्वाभाविक होत

नृपस्य चित्त कृपणस्य वित्त मनोरथ दुर्जनमानवानाम्।
स्त्रियाश्चरित्र पुरुषस्य भाग्य देवो न जानाति कुतो मनुष्य ॥

राजा के चित्त, सूम के धन, दुर्जन के मनोरथ, स्त्री के चरित्र और पुरुष के भाग्य की बात,—देवता भी नहीं जानते, मनुष्य बेचारा कौन चीज है ?

स्त्रियोंके सशयोंका भँवर, साहसों का नगर और नाना प्रकार की माया और अविश्वास का पिटारा होनेमें ज़रा भी सन्देह नहीं। जो इनका विश्वास करते हैं, वे बुरी तरह मारे जाते हैं। इसलिये चतुर पुरुषोंको स्त्रियोंका विश्वास भूल कर भी न करना चाहिये। इन से सदा सावधान और सतर्क रहना चाहिये। जितनी विद्या शुक्र और बृहस्पति में है, उतनी तो इन में स्वभाव से ही होती है*।

शास्त्रकारोंने कहा है—

नदीनांच नखीनाच शृङ्गिणा शस्त्रपाणिनाम्।
विश्वासो नैव कर्त्तव्य स्त्रीषु राजकुलेषु च ॥

नदी का, नाखुन वाले जानवरों का, सींग वाले पशुओं का,

है। नितान्त कार्य्य-कुशल राज-सभासदों की अपेक्षा भी वे अपने भावों को अधिक उत्तमता से छिपा सकती हैं। स्त्रियाँ अपनी बात को जितनी अच्छी तरह छिपा सकती है, और कोई नहीं छिपा सकता।

† मिसिज़ महोदय कहते हैं—"There are certain things in which a woman's vision is sharper than a hundred eyes of the males " कुछ ऐसी भी बातें हैं, जिनमें स्त्री की नज़र पुरुषोंकी सौ आँखों से तेज़ होती है।

हथियार बाँधनेवालों का, स्त्री का और राजा का विश्वास कभी न करना चाहिये।

"श्री शङ्कराचार्य्यजी ने अपनी" "प्रश्नोत्तर-मालामें" भी कहा है—विश्वासपात्रं न किमस्ति ? नारी। अर्थात् कौन विश्वास-योग्य नहीं है ? स्त्री। इतने सब औगुणोंके सिवा, यह पुरुषकी मोक्षप्राप्तिमें बाधा-स्वरूप है। इस की तिरछी नज़र के तले पड़ने से ही पुरुष इस का दास हो जाता है और ऐसा दास हो जाता है कि, फिर पीछा नहीं छूटता। जवानीमें तो इसे छोड़नेको आपही जी नहीं चाहता। जब कुछ विरक्ति होने लगती है, तब इसकी औलादमें मन फँस जाता है। ज्ञान का उदय होने पर भी, पुरुष विचारने लगता है, अगर मैं स्त्री-बालकोंको छोड कर वनमें चला जाऊँगा, तो इन का लालन-पालन कौन करेगा ? मेरे न रहने से इनको अमुक कष्ट होगा, इन पर अमुक आफत आयेगी। अच्छा तो लड़के लड़कियों की शादी-विवाह कर के वन को चला जाऊँगा और तभी भगवान् का भजन करूँगा।' इसतरह वह वह विचारही करता रहता है कि, मौत आ जाती है और उस के विचार धरे के धरे रह जाते हैं। ठीक उस तोते का सा हाल होता है, जो मन में विचार कर रहा था कि, आदमी हट जायँ, तो मैं पिंजरेसे निकल भागूँ। आदमी हटे, तोता निकलने की चेष्टा करने लगा कि, एक काल सर्पने आकर उसे अपना भोजन बना लिया।" स्त्री के सम्बन्ध में महात्मा कबीर कहते हैं—

नारी धर्ूँ कि नारी, नख सिख सों यह खाय।
जल बूड़ा तो ऊबरे, भग बूड़ा बहि जाय॥

नैनों काजल पाय के, गाढ़ा बाँधे केश।
हाथों मेंहदी लायके, बाघिन खाया देश॥

छप्पय।

परम भवन को मीर, भवन है गूढ गरब को।
अनुचित कृत को सिन्धु, कोष है दोष अबर को।
प्रगट कपट को कोट खेत अप्रीति करन को।
सुरपुर को बटमार, नरक पुर द्वार करन को।
यह युवती यन्त्र कौन रच्यो, महा अमृत विषको भर्यो।
थिर चर नर किन्नर सुर असुर, सबके गल बन्धन कर्यो॥७६

सार---स्त्री बड़ा ज़बर्दस्त जाल है। फिर भी लोग इस में जाकर फँसते हैं और बड़े खुश होते हैं, यह आश्चर्य की बात है। इसमें एक बार फँसने पर, इससे निकलना कठिन है।

सत्यत्वेन शशांक एष वदनीभूतो नवेन्दीवर-
द्वन्द्वं लोचनतां गतं न कनकैरप्यङ्गयष्टिः कृता ॥
किन्त्वेवंकविभिः प्रतारितमतस्तत्वं विजानन्नपि
त्वङमांसास्थिमयं वपुर्मृगदृशां मंदो जनः सेवते ॥७७॥

अगर हम से पक्षपात-रहित सच्ची बात पूछी जाय, तो हम को कहना होगा कि, चन्द्रमा स्त्री का मुख नहीं, कमल उसके नेत्र नहीं, उसका भी शरीर और सब प्राणियों की तरह हाड, चाम और मांस का है। इस बात को जान कर भी, कवियों की मिथ्या उक्तियों के भुलावे में पड कर, हम लोग स्त्रियों पर आसक्त रहते और उन्हें सेवन करते हैं ॥७७॥

खुलासा—जिस तरह ससार के और प्राणियों के शरीर हाड मास और रक्त प्रभृति से बने हैं ; उसी तरह स्त्रियों के शरीर भी इन्हीं पदार्थों से बने हैं, इस बातको हम लोग जानते हैं ; पर कवियोंके झूठे चढ़ावों में आकर, हम लोग भी उन के मुख को चन्द्रमा, नयनों को कमल और देह को सुवर्ण-निर्म्मित समझ कर उन पर मरे मिटते हैं। यह हमारी बड़ी भारी गलती है।

वैराग्यपक्ष।

भला कहाँ पीयूष-निधि चन्द्रमा और कहाँ स्त्रियोंका कफ, थूक और खखार से भरा मुँह ? कहाँ भगवान् के हाथ में विराजनेवाला सुदर्शनीय कमल और कहाँ गन्दे पदार्थों से बने स्त्रियों के नेत्र ? कहाँ सूर्य की सी आभा वाला सुवर्ण और कहाँ हाड चाम और

मांस से बने स्त्रियों के शरीर ? सच्ची बात तो यह है कि, हम नरक के कीड़ों का सा आचरण करते हैं। नरक के कीड़े मल मूत्र राध लोहू प्रभृति गन्दे पदार्थोंमें रमते और सुखी रहते हैं। हम भी उन्हीं की तरह हाड़ चाम मांस, राध, खून और मलमूत्र प्रभृतिके भण्डार में रमण करते और अपने तईं भाग्यवान् समझते हैं। हम में और नरक के कीड़ों में कोई भेद है कि नहीं, यह बात जरा विचार करने से ही समझ में आजायगी।

कुण्डलिया।

नहिं शशांक-सम वदन तिय, नाहिं जलज सम नैन।
अंग कनक-सम है नहीं, कोकिल सम नहिं बैन।
कोकिल सम नहिं बैन, झूठ कवि उपमा दीन्ही।
जानत हैं सब भेद, तऊ यह अविनय कीन्ही।
हाड़ चाममय नारि, मन्दमति नाहिं देत सुझाई।
करि उपाय अनेक, ज्ञान बिन नेक न दिखाई॥२२॥

सार----सब प्राणियों की तरह--स्त्रियों का शरीर भी हाड़, चाम और मांस का है। उन्हें चन्द्रमुखी, कमल-नयनी और सुवर्ण की सी कान्तिवाली समझना सरासर भूल है।

her eyes, nor is her body made up of gold, knowing all these facts however but being deceived by the false analogy of the feets, senseless people indulge in the body of woman which consists of skin, flesh and bones

—※—

लीलावतीनां सहजा विलासा-
स्त एव मूढ़स्य हृदि स्फुरन्ति ।
रागो नलिन्या हि निसर्गसिद्ध-
स्तत्र भ्रमत्येव मुधा षडंघ्रिः ॥७८॥

जिस तरह मूर्ख भौंरा कमलिनी की स्वाभाविक ललाई को देखकर उस पर मुग्ध हो जाता और उसके चारों ओर गूँजता फिरता है, उसी तरह मूढ़ पुरुष लीलावती स्त्रियों के स्वाभाविक हाव-भाव और नाज-नखरों को देखकर उन पर मुग्ध हो जाते हैं ॥७८॥

खुलासा—कमलिनी में जो एक प्रकार की सुर्खी होती है, उसे भौंरा प्यार की निशानी समझता है और इसीलिये उस पर आशिक होकर उसके चारों ओर गूँजता हुआ घूमा करता है। कमलिनी की तरह नवयौवना स्त्रियों में भी विलास—हाव-भाव और नाज-नखरे स्वभाव से ही होते हैं, पर अज्ञानी लोग उनके हावभावों को देखकर मन में समझते हैं कि, ये स्त्रियां हमें चाहती हैं पर असलमें वे चाहती-चाहती नहीं, हावभाव दिखाना तो उनका स्वभाव है। उनके हावभावों को प्यार के चिह्न सम-

झना महामूर्खता है। स्त्रियों को पुरुषों को तड़फने देखने में भी एक प्रकार का मजा सा आया करता है, इसीलिये चञ्चल स्त्रियाँ जहाँ पुरुषों को देखती हैं, वहाँ नाज़-नखरे किया करती हैं और जब उनका शिकार मछली की तरह तड़पता है, तब मनमें बड़ी खुश होती हैं।

दोहा।

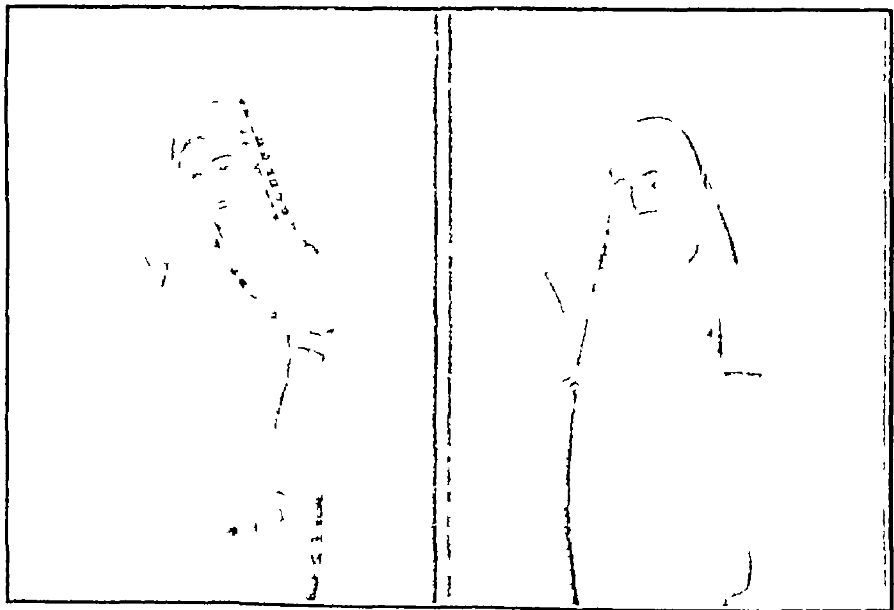
कामिनि बिलसत सहज में, मूरख मानत प्यार।
सहज सुगन्धित कुसुमिनि, भौंरा भ्रमत गँवार ॥७८॥

सार---लीलावती चंचल स्त्रियों के हावभाव और नाज़-नखरों को मुहब्बत की निशानी समझना नादानी है। यह तो उनका स्वभाव है।

78 The amorous plays of sportful women are quite natural to them but they arouse passion in the hearts of foolish men, just as a black bee hovers over a lotus being attracted by its redness which is natural to it

—*—

यदेतत्पूर्णेन्दुद्युतिहरमुदाराकृतिवरं—
मुखाब्जं तन्वंग्याः किल वसति तत्राधरमधु।
इदं तावत्पाकद्रुमफलमिवातीवविरसं—
व्यतीतेऽस्मिनकाले विषमिव भविष्यत्यसुखदम् ॥७६॥



स्त्री का पूर्णमासी के चाँद की छवि को हरनेवाला कमल-मुख, जिसमें अधरामृत रहता है, जवानी में ही अच्छा मालूम होता है, बुढ़ापा आनेपर वही कमल-मुख अनार के पके और सड़े फल की

स्त्री का पूर्णिमा के चन्द्रमा की छवि को हरनेवाला कमल-मुख, जिसमें अधरामृत रहता है, मन्दार के फल की तरह प्रभात या यौवनावस्था तक ही अच्छा मालूम होता है, समय बीतने यानी बुढापा आने पर, वही कमल-मुख अनार के पके और सडे फल की तरह विष सा हो जाता है ॥७८

खुलासा—जिस तरह अनार का फल अपने समय में अमृत का मजा देता है, पर समय निकल जाने पर वह बदजायके और कडवा हो जाता है, उसी तरह स्त्री का पूनों के चाँद को शर्माने वाला कमल सा मुँह उठती जवानी या भर-जवानी में ही अमृत सा रहता है। जवानी दीवानी के जाते ही, वह सडे हुए अनारके फलकी तरह निकम्मा और विषसा हो जाता है, क्योंकि बुढापा आने से दाँत गिर जाते हैं, गाल पिचक जाते हैं, चमडे में झुर्रियाँ पड जाती हैं और सुर्खी चली जाती है। बेकन महोदय कहते हैं—"Beauty is as summer fruits which are easy to corrupt and can not last" सौन्दर्य ग्रीष्म ऋतुके फलों के समान है, जो जल्दी ही सड़ जाते और अधिक समय तक नहीं ठहर सकते।

दोहा।

अधर मधुर मधु सहित मुख, हुतो सबन सिरमौर।
सो अब बिगरे फलन-सम, भयौ और सों और ॥७९॥

सार—स्त्री की सारी शोभा जवानी में ही है। जवानी गई, फिर कुछ नहीं।

79 *The beautiful lotus like face of a woman that surpasses the beauty of the full-moon having honeyed lips in it is very pleasant in young age only but when that time is past it becomes painful like poison just like the fruit of Mandara*



उन्मीलत्त्रिवलीतरङ्गनिलया प्रोत्तुङ्गपीनस्तन-
द्वन्द्वेनोद्यतचक्रवाकमिथुना वक्त्राम्बुजोद्भासिनी॥
कान्ताकारधरा नदीयमभितः क्रूराशयानेष्यते
संसारार्णवमज्जनं यदि ततो दूरेण संत्यज्यताम् ॥८०॥

खुलासा—स्त्री एक नदी है। उसके पेट पर जो त्रिवली के समान तीन रेखायें हैं, वही उस नदी की लहर हैं, उसके दोनों कठोर कुच चकवेके जोड़े हैं और उसके जो क्रूर अभिप्राय हैं, वही भँवर हैं—जिस तरह और नदियाँ समुद्रमे जाकर गिरती हैं, उसी तरह स्त्री-नदी भी संसार-सागर में जाकर गिरती है। जिस तरह और नदियों मे गिरी हुई चीज नदी के प्रवाह के साथ बहती हुई समुद्र मे जा पड़ती है, उसी तरह स्त्री-नदी मे गिरी हुई वस्तु भी संसार-सागर मे जा पड़ती है। जो पुरुष इस स्त्री नदी मे स्नान या क्रीड़ा प्रभृति करते हैं, वे उसके तेज़ बहाव में बहते हुए संसार-सागर में जा पड़ते हैं। समुद्र मे गिरे बाद बचना कठिन हो जाता है, इसलिये जो पुरुष संसार सागर मे डूबने से बचना चाहें, वे स्त्री नदी से दूर रहें। इस भयङ्कर नदी के पास जा न जाँय। इस स्त्री-नदी का ज़ोर साधारण नदियों की अपेक्षा

बहुत अधिक है। और नदियो मे तो वही डूबता है, जो उनके अन्दर घुसता या पैर देता है, पर स्त्री-नदी तो सामने आये हुए पुरुष को अपने बल से अजगर की तरह भीतर खींच लेती है और फिर उसे संसार-सागर मे लेजा पटकती है। "भामिनी विलास कर्त्ता" पण्डितवर जगन्नाथ महाराजने और ही तरह रूपक बांधा है। उसका आशय कुछ और है, फिर भी उसका रसास्वादन कीजिये .—

रूपजला चलनयना नाभ्यावर्तास्त्रिवलि भुजंगा।
मज्जन्ति यत्र सन्त सेय तरुणी तरंगिणी विषमा॥

रूप ही जल है, चचल नयन मछलियाँ हैं, नाभि भँवर है और त्रिवलि के बाल सर्प हैं—यह तरुण स्त्री रूपी नदी दुस्तर नदी है। इस नदी में श्रृ गारशास्त्र-प्रवीण सज्जन स्नान करते हैं।

महाकवि कालिदास के एक रूपकका भी आस्वादन कीजिये। उसमें कुछ और ही मजा है —

बाहू द्वौ च मृणालमास्यकमल, लावण्यलीलाजल,
श्रोणी तीर्थशिला च नेत्रशफरी, धम्मिल्ल शैवालकम।
कान्ताया स्तनचक्रवाक युगल, कन्दर्पबाणानलैर्दग्धा-
नामवगाहनाय, विधिना रम्य सरो निर्मितम्॥

ब्रह्माने कामदेव के बाणों की अग्नि-ज्वाला से जलते हुए पुरुषों के स्नान करने के लिये स्त्री रूपी सुन्दर तालाब बनाया है। इस तालाब मे क्या क्या चीजें हैं? इस तालाब मे स्त्री की दोनों भुजायें तो कमल की डंटी है, उसका मुँह कमल है, उसके लावण्य

का विलास जल है, कमर उतरने की सीढ़ी है, उसके नेत्र मछलियाँ हैं, उसके बँधे हुए केश—बाल सिवार हैं और दोनों स्तन चक्रवाक के जोड़े हैं।

इसमें कोई शक नहीं, कि कन्दर्प-ताप को स्त्री के पयोधर—कुच ही शान्त करते हैं। शरीर में कामबाणों की ज्वाला उठने पर, स्त्री ही उस ज्वाला को शान्त करती है, पर बीमार होकर दवा खाने और आरोग्य होने की अपेक्षा बीमार न होना कहीं अच्छा है।

छप्पय ।

त्रिवली तरल तरंग, लसत कुच चक्रवाक-सम ।
प्रफुलित आनन कंज, नारि यह नदी मनोरम ।
महा भयानक चाल, चलत भवसागर-सन्मुख ।
हाथ धरत ही ऐंच लेत, जितको अपनो रुख ।
संसार-सिन्धु चाहत तर्यो, तौ तू यासौं दूर रह ।
जाको प्रवाह अतिही प्रबल, नेक न्हात ही जात बह ॥८०॥

सार—स्त्री-रूपी दुस्तर नदी से सदा दूर रहो, क्योंकि इसके सामने जानेवाले की भी ख़ैर नहीं।

face shining like the lotus, but whose intention is very crooked should be shunned carefully if one does not wish to be drowned in it (A river may appear very pleasing in sight but anything falling in it is taken to the deep ocean so can the woman may appear attractive but any one indulging in her is ruined

—*—

जल्पन्ति सार्द्धमन्येन पश्यन्त्यन्यं सविभ्रमाः ।
हृदये चिन्तयन्त्यन्यं प्रियः को नाम योषिताम् ॥८१॥

स्त्रियाँ बात तो किसी से करती हैं, देखती किसी और को हैं, और दिल में चाहतीं किसी और को हैं। विलासवती स्त्रियों का प्यारा कौन है ?

खुलासा—वास्तव में स्त्रियों का प्यारा कोई भी नहीं। जो एक ही समय में बात एक से करती हैं, देखती दूसरे को, और दिल में चाहती तीसरे को हैं, उनका प्रेम किस से हो सकता है ? स्त्री स्वभाव से ही चञ्चल है, इसका चित्त एक जगह स्थिर नहीं रहता। इसके मनमें कुछ, बातों में कुछ और आँखों में कुछ। इसके चित्त का पता नहीं। यह सदा किसी एक से मुहब्बत नहीं रखती। बेईमानी, धोखेबाजी, छल, कपट, झूठ और बेवफाई तो परमात्मा ने इसे खूब ही दी हैं। महाकवि दागने खूब कहा है—

तुम से बढ़कर हर बशर, हिस्से में अपनी लग गई।
तुमने रक्खी कौनसी छोड़ी, जमाने के लिये॥

सच है, सभी अच्छी चीजें तुम्हारे हिस्सेमें आगईं। एक वफा जरूर तुम से बचकर मेरे हिस्से मे आगई है। इस खूबी को छोड कर और सब खूबियाँ तुम्हारे पास मौजूद हैं।

स्त्री बाहर से जैसी मनोहर दीखती है, भीतर से वैसी नहीं होती। उसका शरीर मनोहर होता है, पर हृदय वज्रवत् कठोर होता है। वह अपने चन्द्रमुखसे मधु जैसी मीठी-मीठी बातें करती है, और तीक्ष्ण चित्तसे चोट मारती है। इसीलिये कहते हैं कि, उसकी जीभ में मधु और हृदयमें हालाहल विष रहता है। पर जिन्होंने संसार नहीं देखा है, जिन्हें इस जगत्की टेढी सीधी बातें नहीं मालूम, वे नानजुर्बेकार नौजवान, इन बातोंको न समझ कर, इन कुटिला कामिनियों का पूर्ण विश्वास कर बैठते हैं। इनके यह कहने पर, कि आपही हमारे सूरज, आपही हमारे चाँद और आपही हमारे परमेश्वर हो, आप ही से हमें जगत् में उजियाला है, नवयुवक पागलसे हो जाते हैं और इन्हें सती सीता और सावित्री समझकर इनके क्रीत दास हो जाते हैं। जब कामी पुरुष मोलट आने इनके काबू में हो जाते हैं, तब ये निरङ्कुश होकर अपनी माया रचने लगती हैं। एक को आँखोंके इशारों से, दूसरे को बातों से, तीसरे को चेष्टाओं से प्रसन्न करती और चौथे—अपने पति—को अपनी माया में पागल बनाये रखती हैं। उसे सूझता होने पर भी अन्धा कर देती हैं। उस के मौजूद रहते कुकर्म करती हैं, पर उस मोंदू को कुछ नहीं सूझता। बुद्धिमानों को इनके सतीत्व पर हरगिज विश्वास न करना चाहिये क्योंकि, किसी एक की होना तो

विधाता ने इनके भाल में लिखा ही नहीं। किसीने ठीक ही कहा है :—

> यदि स्यात्पावक शीत प्रोष्णो वा शशलाञ्छन ।
> स्त्रीणा तदा सतीत्व स्याद्यदि स्याद् दुर्जनो हित ॥

अगर आग शीतल हो जाय, चन्द्रमा गरम हो जाय और दुर्जन हितकारी हो जायें, तभी स्त्रियों के सतीत्व का विश्वास किया जा सकता है।

और भी कहा है—

> यो मोहान्मन्यते मूढो रक्तेय मम कामिनी ।
> स तस्या वशगो नित्य भवेत् क्रीडाशकुन्तवत ॥

जो मूढ मनुष्य यह समझता है कि, यह स्त्री मुझे प्यार करती है, वह उसके वश होकर खेल के पक्षी की तरह हो जाता है। पर वास्तव में, वह उसे नहीं चाहती। उसको न कोई प्यारा है और न कुप्यारा। जिस पर तबियत आजाय, वह उसी की है। पर उसकी भी सदा-सर्वदा नहीं। चञ्चल नारी-जातिका चित्त भी कभी स्थिर हो सकता है ?

दोहा।

> मन में कछु बातन कछु, नैनन में कछु और ।
> चितकी गति कछु और ही, यह प्यारी किहि ठौर ॥८१॥

सार—स्त्री बेवफा है। उसकी मुहब्बत सदा-

सर्वदा किसीके साथ रह ही नहीं सकती। जिसकी स्त्री वफ़ादार और सती हो, वह निस्सन्देह पूर्ण पुण्यात्मा है।

81. A woman while talks with one man, looks amorously towards some other and at the same time, she thinks in her mind of a quite different person, who can be said to be the true lover of a woman?

—※—

मधु तिष्ठति वाचि योषितां हृदि हालाहलमेव केवलम्।
अतएव निपीयतेऽधरो हृदयं मुष्टिभिरेव ताड्यते॥ ८२॥

स्त्रियोंकी बातोंमें अमृत और हृदय में हलाहल विष होता है, इसीलिए पुरुष उनका अधरामृत पान करते और उनकी छातियों को मर्दन करते है।

खुलासा—मनुष्य का स्वभाव है कि, वह अमृत को शौक़ से पीता और विषसे घृणा करता है, इसीलिये पुरुष स्त्रियोंके नीचले होठों को चूसते और उन के कुचोंको मलते (पीटते) हैं। क्योंकि उनके होठों में अमृत और कुचों के नीचे हृदय में विष रहता है।

महाकवि कालिदास स्त्रियों के मनमोहन रूप से खुश और उनके हृदय की कठोरता से दुखित होकर कहते हैं —

इन्दीवरेण नयनं मुखमंबुजेन कुन्देन दन्तमधरं नवपल्लवेन।
अङ्गानि चम्पकदलैः स विधाय वेधा कान्ते! कथं घटितवानुपलेनचेतः॥

हे प्यारो! उस ब्रह्माने, नीलकमलसे नेत्र, कमल सा मुख, कुन्द से दाँत, नये पत्तों जैसे होठ और चम्पा के पत्तोंके समान अन्यान्य अङ्ग बनाकर, स्त्री का हृदय पत्थर से क्यों बनाया?

स्त्रियों का हृदय पत्थर के समान होता है, इस में शक नहीं। इस हृदय के कठोर होने के कारण से ही उन में दया, वफा और मुहब्बत नहीं होती, जो उनके ऊपर जान देता है, जो उनकी इच्छा पूरी करनेके लिये दिन-को-दिन और रात-को रात नहीं समझता, जो उन के लिए घोर परिश्रम करता और तरह-तरह की ज़िल्लतें सहता है, उन को धन गहने देता, उनका मान रखता और खुशामद करता और रति क्रीड़ा से उन को अच्छी तरह सन्तुष्ट करता है, उस को भी वे, निर्दयता-पूर्व्वक, जरा सी देर में, त्याग कर चली जाती हैं। ऐसी स्त्रियों का हृदय यदि पत्थर का नहीं, तो किसका है?

दोहा।

अधरन में अमृत बसत, कुच कठोरता वास।
यातें इनको लेत रस, उनको मर्दन त्रास।८२॥

सार—स्त्री का दिल पत्थर से बना है और उसमें विष भरा है; इसीसे उसमें वफ़ादारी नहीं, किन्तु निर्दयता, छल, कपट, दग़ाबाज़ी और फरेब प्रभृति दुर्गुण भरे हैं।

82 There is sweetness in the speech of a woman and poison in her heart, therefore, the lips are tasted and the breasts are pressed by the fist.

—*—

अपसर सखे दूरादस्मात्कटाक्षशिखानला—
त्प्रकृतिविषमाद्योषित्सर्पाद्विलासफणाभृत ॥
इतरफणिना दष्टा शक्याश्चिकित्सितुमौषधै—
श्चतुरवनिताभोगिग्रस्तं त्यजन्ति हि मन्त्रिण ॥८३॥

हे मित्र ! सहज ही क्रूर, विलास रूपी फण वाले और कटाक्षरूपी विषाग्नि धारण करनेवाले स्त्री-रूपी सर्पसे दूर भाग, क्योंकि और सर्पों का काटा हुआ तो मन्त्र तथा औषधियो से अच्छा हो सकता है, पर चतुर स्त्री-रूपी सर्पके डसे हुए को झाड-फूँक वाले गारुडी भी छोड भागते है।

खुलासा—स्त्री सर्प के समान हैं। इस का विलास इस का फण है और कटाक्ष विषाग्नि है तथा यह स्वभावसे ही सर्पके समान क्रूर या विषैली है। यह स्त्री-सर्प और सर्पोंसे अधिक भयङ्कर है; क्योंकि और सर्पों का खाया मनुष्य मन्त्र या दवा अथवा झाड-फूँक से कदाचित अच्छा भी हो जाता है, पर इस स्त्री-सर्पके खाये का तो इलाज ही नहीं। इसका काटा हुआ भी, कालसर्प के काटे हुए की तरह, न खेलता है और न बकरता है।

उस्ताद जौक फरमाते हैं :—

डसा हो कालेने जिस को काफिर
तो वह फिसूँ के असर से खेले।

दहानो गेसू का तेरा मारा,
न मुँह से बोले न सरसे खेले ॥

मसल मशहूर है, काले का काटा हुआ नहीं खेलता—नहीं अच्छा होता। फिर तेरे मुँह और जुल्फों का काटा हुआ आदमी यदि मुँह से नहीं बोलता और सर से नहीं खेलता, तो क्या आश्चर्य है ?

महात्मा कबीर भी कहते हैं —

नागिन के तो दोय फन, नारी के फन बीस ।
जाकौ डस्यो न फिर जिये, मरि है बिधा बीस ॥
कामिनि काली नागिनी, तीन लोक मझार ।
नाम-सनेही ऊबरा, विषिया खाये झार ॥
नारी निरखि न देखिये, निरखि न कीजे दौर ।
देखत ही तें विष चढ़ै, मन आवे कछु और ॥

स्त्री-मात्र नागिन-स्वरूपिणी हैं। जैसी ही अपनी स्त्री, वैसी ही पराई। विष तो सभी में होता है। विष का अपना और पराया क्या ? मनुष्य अपने विष से भी मरता है और पराये विष से भी। अपने कूए में गिरने से भी डूब जाता है और पराये कूए में गिरने से भी। स्त्रियों से सुख की आशा करना, मृगमरीचिका से जल पानेकी आशा करने के समान है। "भामिनी-विलास" रचयिता पण्डितेन्द्र जगन्नाथ महाराज कहते हैं और सच कहते हैं—

अलया. फणिशावतुरयशीला
नयनान्ता परिपुस्सितेपुलीला ।

चपलोपमिता खलु स्वय यावत
लोके सुखसाधनं कथ सा ? ॥

जिस की अलकावलि साँप के बच्चेके से स्वभाव वाली है और जिस की आँखों के कटाक्ष सपुंखबाणों की तरह लीला करने वाले हैं और जिस की स्वय विद्युत्लतासे उपमा दी जाती है, हा ! वह स्त्री इस लोक में किस तरह सुखदायी हो सकती है ?

सरांश यही है कि,स्त्रियाँ नागिनोंसे भी अधिक भयङ्कर हैं. अत अपना भला चाहने वालों को इन से दूर रहना चाहिये। इन में सुख नहीं, घोर दुःख है , अमृत नहीं, हालाहल विप है। सर्प के काटेकी दवा है, पर इन के काटे की दवा नहीं।

दोहा।

मन्त्र-यन्त्र-औषधनते, तजत सर्प विष लाग ।
यह क्यों हूँ उतरत नहीं, नारि नयनको नाग ॥८३॥

सार—स्त्री-रूपी सर्पसे दूर रहो, क्योंकि उस के काटे का इलाज नहीं है।

83 O my friend, keep yourself aloof from a woman who is like a serpent Both are crooked and cruel by nature and the oblique glances of the woman are like the flames of an arrow and whose gay activities are her hood. Serpent-bite may be cured by medicine, but even the charmers give them up who are bitten by this serpent-like clever woman

—#—

विस्तारितं मकरकेतनधीवरेण
स्त्रीसंज्ञितं बडिशमत्र भवाम्बुराशौ ॥
येनाचिरात्तदधरामिषलोलमर्त्य-
मत्स्यान्विकृष्य पचतीत्यनुरागवह्नौ ॥८४॥

इस संसार-रूपी समुद्र में, कामदेव-रूपी धीवरने स्त्री-रूपी जाल फैला रक्खा है। इस जालमें वह अधरामिष-लोभी पुरुष-रूपी मछलियो को, शीघ्रता से, खींच-खींच कर अनुराग-रूपी अग्नि में पकाता है।

खुलासा—क्या अच्छा रूपक है। इसमें सागर संसार-सागर है। मछली पकड़नेवाला मछुआ या धीवर स्वय कामदेव है। मछली पकडने का जाल स्त्री है। मछलियाँ पुरुष हैं। उन का चारा, जिस के लोभसे पुरुष रूपी मछलियाँ जाल में फँसती हैं, अधरामिष है। मछलियोंको, भाग जानेके डरसे, शीघ्र ही पका डालने की अग्नि, अनुराग है।

अजब मजेदार मामला है। कामदेव-धीमर बडा ही चलाक है। वह पुरुष रूपी मछलियों के फँसाने के लिये जाल और चारा प्रभृति सभी सामान लैस रखता है। एकवार फँस कर मछलियाँ निकल न भागें, इसलिये आग भी तैयार रखता है। इधर मछली जाल में फँसी और उधर आग पर रक्खी। ऐसे चालाक धीवर के जालमें फँस कर कौन बच सकता है? तात्पर्य यह कि एक बार इश्क या प्रेम मे फंसने पर पुरुष निकल नहीं सकता। जब तक जालमे न फंसे, तभी तक खैर है। अब जो पुरुष कामदेव

के जालमें फँस कर प्राण न गँवाना चाहें, वे कामदेवके स्त्री–जाल से दूर रहें।

महाकवि कालिदासने स्वय स्त्री को व्याध वना कर और ही तरह रूपक वाँधा है। उन की उक्ति का भी मजा,चख लीजिये —

इय व्याधायते बाला भूरस्या कार्मुकायते।
कटाक्षाश्च शरायन्ते मनो मे हरिणायते ॥

यह नवयौवना बाला मेरे फँसाने या मारने के लिये व्याध—शिकारी सी हो रही है। इस की भौंहें धनुष के समान हैं, यानी यह बाला अपने भौंह रूपी धनुष से मेरे मन को व्याकुल करती है—अपनी तिरछी नजरों से मुझे घायल करे देती है।

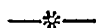
वात एक ही है, स्त्री के सामने जाने, उसे घूरकर देखने और उसकी नज़रसे नजर मिलानेसे ही पुरुष मारा जाता है। जो स्त्रीसे दूर रहें, अथवा उसे देखकर नीची नज़र कर लें, उससे आँखे न मिलावें, वे वेशक उसके जाल या वाणों से वच सकते हैं। जिन्हें अपने कल्याण की इच्छा हो, वे स्त्रियों की छाया के भी पास न जायँ। उनसे दूर रहनेसे पुरुष को इस लोक में ही सुख-सम्पत्ति और मरने पर सद्गति मिलेगी।

दोहा।

काम-भील भव-सिन्धु में, वसी नारी डार।
मीन नरनको गहि पचत, प्रेम अग्निको वार ॥८४॥

84 *The world is like the ocean and Kamdev the fisher*

man He has spread the net in the form of woman and catches and burns, in the fire of love, those who are greedy enough to taste the bait in the form of her lips.



कामिनीकायकान्तारे कुचपर्वतदुर्गमे ।
मा सञ्चर मनः पान्थ तत्रास्ते स्मरतस्करः ॥८५॥

हे मन-रूपी पथिक ! कुच-रूपी पर्वतो से होकर, दुर्गम कामिनी के शरीर रूपी वनमें न जाना, क्योंकि वहां कामदेव-रूपी तस्कर रहता है ।

खुलासा—वन और पर्वतों मे अकसर तस्कर या चोर बैठे रहते हैं, इसलिये बुद्धिमान लोग वैसे वन-पर्वतों में नहीं जाते क्योंकि वहाँ जाने से धन और प्राणोंके नाश का खटका रहता है। स्त्री रूपी वन में भी कुच-रूपी पहाड हैं और उनके बीचमें कामदेव-तस्कर छिपा रहता है। जो मूढ भूलकर भी स्त्री-रूपी वनमें जाता है उसके धन और प्राण खतरेमें पड जाते हैं। सारांश यह कि, स्त्री से प्रेम करने वाले की धन-दौलत, इज्जत आबरू और प्राण सभी खतरे मे रहते हैं। इसलिये धीमानो को स्त्री से सदा दूर रहना चाहिये।

कुण्डलिया ।

कुच-पर्वत बर जोर, चोर एक तहाँ बसत है ।
करमें लिये कमान, बाण पाँचों बरसत है ।
लूट लेत सब साज, पकर कर राखत चेरे ।
मूँद नैन अरु कान, भुलान्यौ तू कित एरे ॥८५॥

सार—अपनी कुशल चाहो तो स्त्रियों से दूर रहो ।

85. O my traveller-like mind, do not venture to enjoy the body of woman which is like a dense forest very difficult to pass through on account of big breasts which are like mountains and where dwells the thief Kamdev (Cupid)

—*—

व्यादीर्घेण चलेन वक्रगतिना तेजस्विना भोगिना
नीलाब्जद्युतिनाहिना वरमहं दष्टो न तच्चक्षुषा ॥
दष्टे संति चिकित्सका दिशिदिशि प्रायेण धर्मार्थिनो
मुग्धाक्षीक्षणवीक्षितस्य न हि मे वैद्यो न चाप्यौषधम् ॥८६

बड़े लम्बे, तेज़ चलनेवाले, टेढी चालवाले, भयङ्कर, फणधारी काले साँप से काटा जाना भला , पर अत्यन्त विशाल, चञ्चल, टेढी चाल वाले, तेजस्वी, नीलकमल की कान्तिवाले कामिनी के नेत्रों से डसा जाना भला नहीं , क्योंकि सर्प के काटे हुए को बचाने वाले धर्मार्थी मनुष्य सर्वत्र मिलते हैं , पर सुनयना की दृष्टिसे काटे हुए की न कोई दवा है न वैद्य ।

खुलासा—साँप के काटे को आराम करने वाले प्राय. सर्वत्र मिलते हैं। वे लोग बिना कुछ लिये साँप के काटे आदमी का इलाज करते और सुनते ही नङ्गे पैरों दौड़े चले आते हैं। उनके सिवा साँप के काटे की दवा भी जहाँ-तहाँ बिकती है। जङ्गलों में जड़ी-बूटियाँ भी पाई जाती हैं। इसलिये साँप के काटे हुए आदमी के बचने की उम्मीद रहती है, पर स्त्री के नेत्रों द्वारा काटे हुए आदमी का इलाज करने वाले और उसकी दवा—दोनों ही नहीं मिलते, इसलिये स्त्रीके काटे हुएका बचना कठिन हो जाता है। अत. प्राणरक्षा चाहने वालों को स्त्री के नेत्रों से सदा दूर रहना चाहिये, जिससे कि वे काट न सकें।

छप्पय।

महा भयकर चपल वक्रगति, अरु फणधारी॥
डसे कालिया नाग, नहीं कछु विपता भारी।
करें चिकित्सा वैद्य, धर्म-हित देयँ जिवाई।
पै नाहिं कोउ वैद्य, चिकित्सा और उपाई,
जेहि डसत भुजगिनि त्रिय चपल, करि कटाक्ष सो नहिं जियत।
यह जानि विदुषजन जगत में, विषय रूप विष किमि पियत॥८६

सार—स्त्री-सर्पके काटे का इलाज नहीं है।

bitten by snakes but there is neither a physician nor any medicine to cure those who have been glanced for a short while through the eyes of a good-looking woman

—⁂—

इह हि मधुरगीतं नृत्यमेतद्रसोऽयं
स्फुरति परिमलोऽसौ स्पर्श एष स्तनानाम् ॥
इति हतपरमार्थैरिन्द्रियैर्भ्राम्यमाणो
ह्यहितकरणदक्षैः पञ्चभिर्वञ्चितोऽसि ॥८७॥

यह कैसा मधुर गाना है, यह कैसा उत्तम नाच है, इस पदार्थ का स्वाद कैसा अच्छा है, यह सुगन्ध कैसी मनोहर है, इन स्तनो को छूनेसे कैसा मजा आता है। हे मनुष्य! तू इन पांच विषयोंमें भ्रमता हुआ, परमार्थ-नाशिनी नरकादिकी साधन-भूत पांचो इन्द्रियोंसे ठगा गया है।

खुलासा—कान निरन्तर गाना सुनना चाहते हैं, नाक अतर फुलेल और फूल प्रभृति चाहती है, चमडा सुन्दरी षोडशी बालाके कठोर कुचों को मर्दन करना चाहता है, रसना—जीभ खट्टे मीठे पदार्थों का स्वाद लेना चाहती है। कान, नेत्र, नाक, त्वचा और जीभ—इन पाँचों इन्द्रियोंका स्वभाव अपने अपने विषय—शब्द, रूप गन्ध, स्पर्श और रसकी ओर जाने का है। बस, ये पाँचो इन्द्रियाँ पुरुष को अपने-अपने विषयों में फँसा कर बेकाम कर देती हैं। इनमें से एक-एक विषय भी मनुष्य का सर्व्वनाश कर सकता है। अगर ये पाँचों हों, तब तो कहना ही क्या? सर्व्वनाश को पश्चात्

मेल की तरह अत्यन्त शीघ्रता से पास आया समझिये। सुनिये, एक-एक विषयसे ही प्राणीका किस तरह सर्व्वनाश हो जाता है.—

घास और दूब खानेवाला हिरन, बहुत दूर होने पर भी, व्याध के गीत पर मोहित होकर, प्राण गँवा देता है, यानी एक "कान" नामक इन्द्रियके वश होकर मारा जाता है। अगर हिरन की श्रवण-इन्द्रिय—कान को शब्द या गान सुनने का चसका न हो, तो वह क्यों शिकारी के जाल में फँसकर प्राणनाश करावे ?

पर्वत के शिखर के समान आकारवाला और खेल में ही वृक्षो को उखाड फेंकने वाला महा बलवान हाथी, केवल हथनीको भोग-लालसा से, शिकारियों के घेरे में आकर बँध जाता है, यानी एक लिङ्गेन्द्रियके वशीभूत होनेसे, अपनी आज़ादी खोकर, सदाको कैद हो जाता है।

पतङ्ग दीपक को रमणीय शिखा के रूप पर मुग्ध होकर उस से आलिङ्गन करने को, उसके ऊपर बारम्बार गिरता और अन्त में जलबल कर खाक हो जाता है। पतङ्ग केवल एक नेत्र इन्द्रिय के वशीभूत होकर अपने प्राण गँवाता है।

अगाध जल मे डूबी हुई मछली चारे के लोभ से बँसिया मे मुँह देकर अपने प्राण गँवाती है, यानी एक जिह्वा—जीभ-इन्द्रियके वशीभूत होकर मछली अपने प्राण गँवाती है।

भौंरा कमल को कातर सकता है और अपने पङ्खो से उड़ भी सकता है, किन्तु वह सुन्दर मनभावन गन्ध के लोभ से कमल में

— —

इद हि मधुरगीतं नृत्यमेतद्रसोऽयं
स्फुरति परिमलोऽसौ स्पर्श एष स्तनानाम् ॥
इति हतपरमार्थैरिन्द्रियैर्भ्राम्यमाणो
स्वहितकरणधूर्तैः पञ्चभिर्वञ्चितोऽसि ॥८७॥

यह कैसा मधुर गाना है, यह कैसा उत्तम नाच है, इस पदार्थ का स्वाद कैसा अच्छा है, यह सुगन्ध कैसी मनोहर है इन स्तनों को छूनेमे कैसा मजा आता है! हे मनुष्य! तू इन पाच विषयोमे भ्रमता हुआ परमार्थ-नाशिनी नरकादिकी साधन-भूत पाँचों इन्द्रियोसे ठगा गया है।

खुलासा—कान निरन्तर गाना सुनना चाहते हैं, नाक अतर फुलेल और फूल प्रभृति चाहती है, चमडा सुन्दरी षोडशी बालाके कठोर कुचों को मर्दन करना चाहता है, रसना—जीभ खट्टे मीठे पदार्थों का स्वाद लेना चाहती है। कान, नेत्र, नाक, त्वचा और जीभ—इन पाँचों इन्द्रियोंका स्वभाव अपने अपने विषय—शब्द, रूप गन्ध, स्पर्श और रसकी ओर जाने का है। बस, ये पाँचों इन्द्रियाँ पुरुष को अपने-अपने विषयों में फँसा कर बेकाम कर देती हैं। इनमें से एक-एक विषय भी मनुष्य का सर्व्वनाश कर सकता है। अगर ये पाँचों हों, तब तो कहना ही क्या? सर्व्वनाश को पहुँच

मेल की तरह अत्यन्त शीघ्रता से पास आया समझिये। सुनिये, एक-एक विषयसे ही प्राणीका किस तरह सर्व्वनाश हो जाता है.—

घास और दूब खानेवाला हिरन, बहुत दूर होने पर भी, व्याध के गीत पर मोहित होकर, प्राण गंवा देता है, यानी एक "कान" नामक इन्द्रियके वश होकर मारा जाता है। अगर हिरन की श्रवण-इन्द्रिय—कान को शब्द या गान सुनने का चसका न हो, तो वह क्यों शिकारी के जाल में फँसकर प्राणनाश करावे ?

पर्वत के शिखर के समान आकारवाला और खेल में ही वृक्षो को उखाड़ फेंकने वाला महा बलवान हाथी, केवल हथनीको भोग-लालसा से, शिकारियों के घेरे में आकर बँध जाता है., यानी एक लिङ्गेन्द्रियके वशीभूत होनेसे, अपनी आजादी खोकर, सदाको कैद हो जाता है।

पतङ्ग दीपक की रमणीय शिखा के रूप पर मुग्ध होकर उस से आलिङ्गन करने को, उसके ऊपर बारम्बार गिरता और अन्त में जलबल कर खाक हो जाता है। पतङ्ग केवल एक नेत्र इन्द्रिय के वशीभूत होकर अपने प्राण गँवाता है।

अगाध जल में डूबी हुई मछली चारे के लोभ से काँटिया में मुंह देकर अपने प्राण गँवाती है, यानी एक जिह्वा—जीभ-इन्द्रियके वशीभूत होकर मछली अपने प्राण गँवाती है।

भौंरा कमल को कतर सकता है और अपने पङ्खों से उड़ भी सकता है, किन्तु वह सुन्दर मनभावन गन्ध के लोभ से कमल में

bitten by snakes but there is neither a physician nor any medicine to cure those who have been glanced for a short while through the eyes of a good-looking woman

—:o:—

इह हि मधुरगीतं नृत्यमेतद्रसोऽयं
स्फुरति परिमलोऽसौ स्पर्श एष स्तनानाम् ॥
इति हतपरमार्थैरिन्द्रियैर्भ्राम्यमाणो
ह्यहितकरणदक्षैः पञ्चभिर्वञ्चितोऽसि ॥८७॥

यह कैसा मधुर गाना है, यह कैसा उत्तम नाच है, इस पदार्थ का स्वाद कैसा अच्छा है, यह सुगन्ध कैसी मनोहर है, इन स्तनो को छूनेसे कैसा मजा आता है ! हे मनुष्य ! तू इन पांच विषयोमें भ्रमता हुआ, परमार्थ-नाशिनी नरकादिकी साधन-भूत पाँचों इन्द्रियोसे ठगा गया है ।

खुलासा—कान निरन्तर गाना सुनना चाहते हैं, नाक अतर फुलेल और फूल प्रभृति चाहती है, चमडा सुन्दरी षोडशी बालाके कठोर कुचों को मर्दन करना चाहता है, रसना—जीभ खट्टे मीठे पदार्थों का स्वाद लेना चाहती है । कान, नेत्र, नाक, त्वचा और जीभ—इन पाँचों इन्द्रियोंका स्वभाव अपने अपने विषय—शब्द, रूप गन्ध, स्पर्श और रसकी ओर जाने का है । बस , ये पाँचो इन्द्रियाँ पुरुष को अपने-अपने विषयों में फँसा कर बेकाम कर देती हैं । इनमें से एक-एक विषय भी मनुष्य का सर्व्वनाश कर सकता है । अगर ये पाँचों हों, तब तो कहना ही क्या ? सर्व्वनाश को पञ्जाब

मेल की तरह अत्यन्त शीघ्रता से पास आया समझिये। सुनिये, एक-एक विपयसे ही प्राणीका किस तरह सर्व्वनाश हो जाता है:—

घास और दूब खानेवाला हिरन, बहुत दूर होने पर भी, व्याध के गीत पर मोहित होकर, प्राण गँवा देता है, यानी एक "कान" नामक इन्द्रियके वश होकर मारा जाता है। अगर हिरन की श्रवण-इन्द्रिय—कान को शब्द या गान सुनने का चसका न हो, तो वह क्यों शिकारी के जाल में फँसकर प्राणनाश करावे?

पर्वत के शिखर के समान आकारवाला और खेल में ही वृक्षो को उखाड फेंकने वाला महा बलवान हाथी, केवल हथनीकी भोग-लालसा से, शिकारियों के घेरे में आकर बँध जाता है, यानी एक लिङ्गेन्द्रियके वशीभूत होनेसे, अपनी आजादी खोकर, सदाको कैद हो जाता है।

पतङ्ग दीपक की रमणीय शिखा के रूप पर मुग्ध होकर उस से आलिङ्गन करने को, उसके ऊपर बारम्बार गिरता और अन्त में जलबल कर ख़ाक हो जाता है। पतङ्ग केवल एक नेत्र इन्द्रिय के वशीभूत होकर अपने प्राण गँवाता है।

अगाध जल में डूबी हुई मछली चारे के लोभ से कँटिया में मुँह देकर अपने प्राण गँवाती है, यानी एक जिह्वा—जीभ-इन्द्रियके वशीभूत होकर मछली अपने प्राण गँवाती है।

भौंरा कमल को कतर सकता है और अपने पङ्खों से उड भी सकता है, किन्तु वह सुन्दर मनभावन गन्ध के लोभ से कमल में

बन्द होकर अपने प्राण गँवा बैठना है , यानी अपनी नाक-इन्द्रिय के वश होकर भौंरा अपने प्राण गँवा देता है।

कहा है—

> कुरङ्गमातङ्गपतङ्गभृङ्गमीना हता पञ्चभिरेव पञ्च।
> एक प्रमादी स कथ न हन्यते य सेवते पञ्चभिरेव पञ्च॥

जबकि हिरन, हाथी, पतङ्ग, भौंरा और मछली—ये पाँचों एक-एक विषय के ग्राही होते हुए विषयों में फँस कर मौतके निवाले होते हैं, तब मनुष्य जोकि रूप, रस, गन्ध,शब्द और स्पर्श—पाँचों विषयों के फेर में फँसा रहता है, कैसे वेमौत न मरता होगा? संसार में बन्धन भी बहुत होते हैं, पर प्रेम-रूपी रस्सी का बन्धन सबसे बुरा है। कड़ी से कडी बांसकी गाँठ को काट सकने वाला भौंरा, कमल के फूलमें बन्द होकर, उस की नर्म पाशको नहीं काट सकता और उस के भीतर बैठा हुआ अपने मन में यह विचारता है.—

> रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभात
> भास्वानुदेष्यति हसिष्यतिपद्मजाल।
> इत्थ विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे
> हा हन्त-हन्त नलिनीगज उज्जहार॥

जब रात का अन्त होगा और सवेरा होगा , तब सूर्य भगवान् उदय होंगे और कमल खिलेगा, उस समय मैं इस कमलके बन्धन से निकलकर इधर-उधर घूमूँगा और दूसरे फूलों का रस पान करूँगा—भौंरेके ऐसा विचार करते-करते ही, अचानक एक

जङ्गली हाथी तालाव के किनारे आता है और तालाब में घुस भौंरे समेत कमल के वृक्ष को खा जाता है और भौंरे के विचार उस के मनमें ही रह जाते हैं।

अब पाठक अच्छी तरह समझ गये होंगे कि, एक-एक इन्द्रिय के वश होकर ही प्राणी किस तरह मारे जाते हैं, पर जो प्राणी अपनी पाँचों इन्द्रियों के वशीभूत रहते होंगे, उन की क्या गति होती होगी। जो मनुष्य मधुर गान सुनते होंगे, सुन्दरी वाराङ्ग-नाओंका नाच देखते होंगे, तरह-तरह के स्वादिष्ट भोजन करते होंगे, उत्तमोत्तम इत्र, फुलेल, सैन्ट, ओडीकलन प्रभृति सूँघते होंगे और कठोर कुचोवाली सुन्दरी तरुणी स्त्रियों को छाती से लगाते होंगे—वे क्या सर्व्वनाश से वच सकेंगे?

यह जीवात्मा रूपी भौंराभी, कमलके भौंरेकी तरह, संसार रूपी तालाव और शरीररूपी कमलमें वैठा हुआ, पञ्चेन्द्रियोंका सुख लूटता हुआ, उत्तमोत्तम ग्रन्थ पढ़ और महात्माओं के उपदेश सुन कर विचार किया करता है कि, कल से मैं ईश्वर-भजन करूँगा, परसों या अमुक दिनसे मैं अमुक दान-पुण्य करूँगा। जीवात्मा यह विचार करता ही रहता है और काल-रूपी हाथी अचानक आकर इसे अपने मुख में धर जाता है। इस तरह इसके सारे विचार धरे-के-धरे ही रह जाते हैं। इसलिये मनुष्य को अपनी इन्द्रियाँ अपने वश में करनी चाहियें।

कान नाक प्रभृति पाँचों ज्ञानेन्द्रियों और हाथ, पाँव, गुदा, लिंग और मुख—पाँचों कर्मेन्द्रियोंको चलानेवाला एक "मन" है।

मन जिधर चाहता है, ये पाँचों इन्द्रियाँ उधर ही जाती हैं , इसलिये मन दसों इन्द्रियों का सञ्चालन कर्त्ता है। अब जो प्राणी दुःख और क्लेशों से बचना चाहें, जो जगत् को अपने वशमें करना चाहें, जो परमात्मा से मिलना चाहें अथवा जो परमपद या मोक्ष चाहें, उन का पहला काम अपने मन और इन्द्रियों को पूर्ण रूप से अपने वश में करना है। पर मन बड़ा चञ्चल और तेज चलने वाला है। इस की चाल हवा और बिजली की चमक से भी तेज है। इस को वश करना सहज नहीं, क्योंकि इस का स्वभाव ही इन्द्रियों को विषयों की ओर झुकाना है और विषयों में फँसे हुए मनुष्य का कहीं ठिकाना नहीं। मन का वश करना कठिन होने पर भी, अभ्याससे वह सहजमें वश हो जाता है। अंगरेज़ीमें एक कहावत है—"Where is a will, there is a way" जहाँ इच्छा होती है, वहाँ राह भी हो जाती है। यदि मनुष्य इस बात पर कटिबद्ध हो जाय, तो मन अवश्य वशमें हो जायगा। मन वशमें हुआ और मनुष्य देवता हुआ। फिर उसे क्या दु:ख ?

मन के सम्बन्ध में गिरिधर कविकी कुण्डलियाँ पाठकों को सुनाते हैं.—

कुण्डलिया।

रे मन ! शब्द स्पर्श जो, रूप पुन रस गन्ध।
सर्व दु:खका बीज यह, तू नहिँ समझत अन्ध॥
तू नहिँ समझत अन्ध, सदा इन्हीं को चाहे।
अपनी हत्यी आप, आपने तन को दाहे॥

कह गिरिधर कविराय, जो प्रत्यक आनँद घन रे।
लिखहि माहिँ रह लीन, सुखी तब होंय मन रे॥

और भी—

कुण्डलिया।

रे मन! भौतिक वर्ग मे, तू महन्त परधान।
तेरे पाछे हैं सबै, देह बुद्धि इन्द्रिय प्रान।
देह बुद्धि इन्द्रिय प्राण, इन्होंमे तू है नायक।
क्रिया तेरे आधीन, मानसी वाचिक कायिक।
कह गिरधर कविराय, होंय तबहीं धन-धन रे।
जब निर्विकार हो रहे, सर्वथा इक रस मन रे॥

छप्पय।

कान निरन्तर गान तान, सुनिबोही चाहत।
लोचन चाहत रूप, रैन-दिन रहत सराहत।
नासा अतर सुगन्ध, चहत फूलन की माला।
त्वचा चहत सुख-सेज, संग कोमल-तन बाला।
रसनाहू चाहत रहत नित, खाटे मीठे चरपरे।
इन पचन या प्रपञ्च सों, भूपनको भिक्षुक करे॥८७॥

सार—अगर मनुष्य नित्य सुख चाहे, तो इन्द्रियों को विषयों की ओर न जाने दे, उन्हें अपने वश में करे।

87 O men, you have been made to run about cheated by these five senses, which obstruct the way for the other world and are skilful in doing evils (Ear) —How sweet is this song, (Eye) how beautiful is this dance, (Taste) how tasteful is this, (Smell) how sweet is this scent, and (Touch) how very pleasing are these breasts to touch

—※—

न गम्यो मन्त्राणां न च भवति भैषज्यविषयो
न चापि प्रध्वंसं व्रजति विविधैः शान्तिकशतैः ॥
भ्रमावेशादङ्गे किमपि विदधद्भव्यमसमं
स्मरोऽपस्मारोऽयं भ्रमयति दृशं घूर्णयति च ॥८८॥

जब कामदेव रूपी अपस्मार—मृगी—रोग का, भ्रमके आवेश से, दौरा होता है, तब शरीर में असह्य वेदना होती है, शरीर दूखता है, मन घूमता है और आँखें चक्कर खाती है। यह रोग मन्त्र, औषधि, नाना प्रकार के शान्ति-कर्म और पूजा-पाठ किसी से नाश नहीं होता।

खुलासा-अपस्मार या मृगी रोग शोक चिन्ता प्रभृतिसे होता है। उस के दौरे के समय मनुष्य का ज्ञान नष्ट हो जाता है, नेत्र टेढ़े-तिरछे घूमने लगते हैं, हाथ पाँवों का सत्त्व निकल जाता है और स्मरण-शक्ति नष्ट हो जाती है। कामदेव रूपी अपस्मार रोग में भी प्राय ऐसे ही लक्षण होते हैं। कामार्त्त रोगी का मन और नेत्र घूमने लगते हैं। होश-हवास हवा हो जाते हैं। मुँहसे कहना कुछ चाहता है और निकलता कुछ है। साधारण अपस्मार

और कामदेवके अपस्मारमें एक बडा भेद है। वह यह कि, अपस्मार तो घृत, ब्राह्मी घृत, कूष्माण्ड घृत, स्वल्प पञ्चगव्य घृत और महा पञ्चगव्य घृत तथा त्रिफला तैल एवं भूतो के रोग में जो भाड-फूँक मन्त्र-जन्त्र किये जाते हैं, उन से आराम हो जाता है; पर कामदेव-रूपी अपस्मार की कोई भी औषधि आज तक किसीने नहीं निकाली इसलिये भगवान् न करे, जो किसी को यह रोग हो। जिन्हें इस भयङ्कर प्राणनाशक और परमार्थनाशक रोग से वचना हो, वे कामिनियोंके चञ्चल नेत्रो से दूर रहें, क्योंकि स्त्रियो की तेज नज़रों से वचने वालों को यह रोग नही होता। यदि कोई उन की चपेट में आ जाय, उन का विप उस पर चढ़ जाय, तो विपस्य विपमौपधम अर्थात् विप की औपधि विप है। उन का विप वे ही उतार सकती हैं। महाकवि कालिदासने अपने "शृङ्गार-तिलक" में कहा भी है —

दृष्टिं देहि पुनर्वाले ! कमलायत लोचने !
श्रूयते हि पुरालोके विपस्य विपमौपधम् ॥

हे वाले ! हे कमलनयनी ! मेरी ओर फिर अपनी दृष्टि फेंक, क्योंकि सुनते हैं कि विप को दवा विप है। मुझ पर तेरा जहर चढ़ा है, अगर तू ही उतारे तो वह उतर सकता है।

किसीने किसी इश्कके मरीजके इलाज के लिये किसी हकीमको बुलाया। हकीम साहब नब्ज़ टटोलने लगे, तो किसी बुद्धिमानने कहा--

जूँ पञ्जशाखा तू न जला उँगलियाँ तवीव।
रख रख के नब्ज़ आशिके तफ्ता जिगर पै हाथ ॥जौक॥

हकीम साहब ! क्यों अपने हाथ को पञ्ज शाखे की तरह दिल-जले आशिक की नब्ज़ पर रख कर वृथा जलाते हो ? इश्क का मरीज़ आप की दवा से आराम न होगा।

दोहा।

मन्त्र दवा अरु आपसों, वेदन मिटे न वैद।
कामबान सों भ्रमत मन, कैसे मिटहै कैद ॥८८॥

सार—साधारण अपस्मार या मृगीरोग का इलाज है, पर कामके अपस्मार का इलाज नहीं है।

88. Thus Kamdev (Cupid) like Epilepsy gives much pain due to senselessness, overcasts the mind and rolls the eyes Neither any charm nor any medicine has any effect on those attacked by it, nor is it cured by various pacifying worships

—*—

जात्यन्धाय च दुर्मुखाय च जराजीर्णाखिलांगाय च
ग्रामीणाय च दुष्कुलाय च गलत्कुष्ठाभिभूताय च ॥
यच्छन्तीषु मनोहरं निजवपुर्लक्ष्मीलवश्रद्धया
पण्यस्त्रीषु विवेककल्पलतिकाशस्त्रीषु रज्यते कः

कुरूप, बुढ़ापे से शिथिल, गँवार, नीच और गलित कुष्ठी को, थोडे से धन की आशा से, जो अपना सुन्दर शरीर सौंप देती है और जो विवेक रूपी कल्पलता के लिये छुरी के समान है, उस वेश्या से कौन विद्वान् रमण करना चाहेगा ?

वेश्या एकमात्र धन की दासी है ।



वेश्या पैसों को प्यार करती है; पुरुषको नहीं । उसे जो पैसा देता है, वह उसी की हो जाती है, चाहे वह भङ्गी, चमार, या चाण्डाल ही क्यों न हो । जातिहीन, कुलहीन, जन्मान्ध, कुरूप, बूढ़ा, दुर्बल, काना और गलित कुष्टी भी अगर धनी हो और उसे धन दे, तो वेश्या बिना किसी तरह के विचार और पशोपेश के उस के नीचे अपना सोने सा शरीर बिछा देती है । वेश्या को जवान और बूढ़े, खूबसूरत और बदसूरत, काने और अन्धे, लूले और लङ्गड़े, निर्बल और सबल, चोर और ठग, ज्वारी और शराबी, सदाचारी और कदाचारी, हिन्दू और मुसल्मान, सब समान हैं । उस को न किसी से मुहब्बत है और न किसी से परहेज़ । वह धन देने वाले को चाहती है और न देने वाले से परहेज़ करती है ।

किसी कविने कहा है और बिल्कुल ठीक कहा है :—

> वित्तेन वेत्ति वेश्या स्मरसदृशं कुष्टिनं जराजीर्णम् ।
> वित्त विनापि वेत्ति स्मरसदृशं कुष्टिनं जराजीर्णम् ।।

पैसेवाले कोढ़ी और जराजीर्ण पुरुष को वेश्या कामदेव के समान सुन्दर समझती है, और बिना पैसे वाले धनहीन को, चाहे वह कामदेव के समान सुन्दर ही क्यों न हो, कोढ़ी और बुढापे से जीर्ण समझती है ।

वेश्या जगत् की जूटन, गन्दगी का पिटारा और नरक-कूप

है। कौन बुद्धिमान ऐसी वेश्या के नर्म नर्म ओठों को चूमना और उसे आलिङ्गन करना पसन्द करेगा?

वेश्यामें और स्त्रियों से अधिक मोहन-शक्ति है।



यों तो संसार में जितनी स्त्रियाँ हैं, सभी पुरुष के चित्त को हरने वाली हैं, पर साधारण स्त्रियोंकी अपेक्षा वेश्या में चञ्चलता बहुत जियादा होती है, इसी से उस में पुरुष को मोहित कर लेने की शक्ति भी उनसे हजार गुणा जियादा होती है। वेश्यायें अपने गाने-बजाने का जाल बिछाकर और रूपका चुगा दिखाकर नौजवान पक्षियोंको, सहज में, अपने फन्देमें फँसा लेती हैं। इनकी लपक-झपक, चटक-मटक, नाज़ो-अदा और हाव-भाव तथा नखरो पर उठती जवानी के नातजुरबेकार नौजवान शीघ्र ही फँस कर, इन के गुलाम हो जाते हैं। जो इन के दास या शिष्य हो जाते हैं, वे फिर किसीके नहीं रहते। उन्हें अपनी घर-गृहस्थी, अपने पूज्यपाद माता-पिता और अर्द्धाङ्गी कहलाने वाली स्त्री तक विषवत् बुरे लगते हैं।

साधारण नवयुवकों को पागल बनाना तो वेश्याओंके बांये हाथ का खेल हैं। जब इन्होंने एकान्त वनमें रहनेवाले, वृक्षों के पत्तों और जल पर गुजारा करनेवाले महान् तपस्वी शृङ्गी और मरीचि तकको

अपना चेला वनाकर छोडा, उनको अपने रूप-जालमे फँसाकर, उनके कठिन परिश्रम से किये हुए तपको क्षणभर में नष्ट कर दिया , तव इनके लिये नादान नौजवानों को फन्देमें फाँसना कितनी वडी वात है? ऐसी शिकार मारनेमें तो इन्हें जरा भी कठिनाई नहीं होती।

ये दिव्य मणिधारी सर्प की तरह देखने में वड़ी मनोहर होती हैं। ये अपनी रूपच्छटा से पुरुषों के मनों को मोह लेतीं, मधुर-मधुर वातों से चित्तों को चुरा लेतीं तथा हाव-भाव और नाज अदाओं से हिये को हर लेती हैं। योद्धाओं के अग्निवाणोंसे चाहे रक्षा हो जाय, पर इन के नयनवाणों से किसी का निस्तार नहीं। इन के चञ्चल नेत्र प्राय सभी के हृदयों में क्षोभ करते हैं। किसी विरली ही सती का सपूत इनके नेत्र-वाणों से वंचे तो वच सकता है।

वेश्या सच्ची राक्षसी है।



वेश्यायें पुरुष का रक्त मांस खा जानेवाली सच्ची डायन हैं। क्योंकि जो काम डायनों के सुने जाते हैं, वही काम ये करती हैं। डायनें जिसे नजर-भर देख लेती हैं, वही गल-गल कर मरता है और वह उस का कलेजा निकाल कर खा जाती हैं। वेश्यायें भी जिस पर अपने कटाक्षवाण चला देती हैं, वही पगला हो जाता है और

फिर वे उसका कलेजा निकाल खाती हैं। वेश्यायें लड़के और नौजवान सब को खा जाती हैं, खासकर धनियों की तो चटनी ही कर जाती हैं। इन से न राजा की रक्षा है और न प्रजा की। इन की झपेट में जो आ जाता है, ये उसी का करम-कल्याण कर देती हैं। ये देखते ही पुरुषों को घायल कर देती हैं और पीछे अपनी नज़र से उनके प्राण खींच लेती हैं। सर्प का डसा आदमी बच भी सकता है; पर इन डायनों का डसा हुआ नहीं बचता। साँपों के तो मुँह में विष रहता है, पर इन के समस्त शरीरमें विष रहता है। सर्प मनुष्य के पास आकर डसता है, पर इन का विष तो दूर से ही, इनके देखनेमात्र से ही, चढ़ जाता है, इनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग और एक-एक बाल तक में जहर भरा है, इसी से इनका कोई अङ्ग भी, यदि पुरुष की नजरोंमें आ जाता है, तो उस पर बुरी तरहसे जहर चढ़ने लगता है। किसीने कहा है —

धर्म-कर्म-धन-भञ्जिणी, सन्तति खावनहार।
वेश्या है अति राक्षसी, बुधजन कहत पुकार॥

और भी—

दर्शनात् हरते चित्त, स्पर्शनात् हरते बलम्।
मैथुनात् हरते वीर्य्य, वेश्या प्रत्यक्ष-राक्षसी॥

वेश्या साक्षात् राक्षसी है, क्योंकि वह देखने से चित्त को, छूने से बलको और मैथुन से वीर्य को हरती है।

—— ° ——

वेश्याओंके कारण कुल-वधुएँ भ्रष्ट होती हैं।



वेश्याओं की वजह से श्रेष्ठ कुलवती, पतिपरायणा अबलायें नाना प्रकारके कष्ट भोगती हैं। वेश्याभक्त न अपनी सहधर्म्मणियों के पास आते, न उनसे बोलते और न उन का आदर-सन्मान करते हैं। पतिव्रता स्त्रियों को खाने को अन्न, और तन ढाँकने को कपडा भी नसीब नहीं होता, पर वेश्याओं को, जो अपने पतियों को तज, सखुरकुल एव पितृकुल को बदनाम कर, वेश्यावृत्ति करती हैं, सब तरह के सुख मिलते हैं। पतिपरायणा नारियों को मरने के लिये जहर तक नहीं मिलता, पर वेश्याओंको हजारों-लाखो के ज़ेवर मिलते हैं। वेश्याभक्तों की सती स्त्रियाँ मिहनत-मजदूरी करके पेट भरती हैं। अनेक कुलाङ्गनायें चरखे कात-कात कर और आटा पीस-पीस कर अपनी शिशु-सन्तानोंको पालती हैं। इस तरह नासमझ लोग बड़ा अन्याय करते हैं। उन के अन्याय-आचरण के फल-स्वरूप इन दुष्टा वेश्याओं की सख्या दिनों-दिन बढ़ती है, क्योंकि जब धर्म-मार्ग पर चलने से भी उन्हें अन्न-वस्त्र तक नहीं मिलते, पति का सुख नसीब नहीं होता, तब वे अन्तस की अग्नि शान्त न होने और नाना प्रकार के दु ख पाने से दुखित हो, अपना धर्म त्याग, अधर्म-मार्ग का अवलम्बन करतीं और वेश्या हो जाती हैं। इस में उनका अपराध नहीं क्योंकि जैसी इन्द्रियाँ मर्दों के होती हैं, वैसी ही इन्द्रियाँ स्त्रियोंके होती हैं। काम मर्दोंको सताता

है, तो स्त्रियों को भी सताता है। जिस चीज़ की ख्वाहिश पुरुषों को होती है, उसी की स्त्रियों को भी होती है। जो पुरुष आप खाते, रण्डियों को खिलाते, आप मौज करते, वेश्याओं को मौज कराते, किन्तु घर की स्त्रियों की सुध भी नहीं लेते, उनकी स्त्रियाँ उनका मुँह काला करती हैं—उन के जीते जी उनकी बदनामी कराती हैं। वह जैसा करते हैं, वैसा फल भोगते हैं। अत समझदारों को आगा-पीछा सोचकर वेश्याओं से सदा दूर रहना चाहिये।

वेश्याभक्तों की दुर्दशा।



नासमझ नादान लोग जब वेश्याओं के कटाक्ष-बाणोंसे घायल होते हैं, तब रात-दिन अष्ट पहर चौंसठ घडी उन्हें वही वह दीखती हैं। वे उन्हें स्वर्गीय देवी समझ, उन को हर तरह से स्तुति, पूजा और उपासना करते हैं। कोई कहता है—

दिल से मिटना तेरी अङ्गुश्त हिनाई का ख्याल।
हो गया गोश्त से नाखुन का जुदा हो जाना॥

कोई कहता है—

दिल वह क्या जिसको नहीं तेरी तमन्नाये विसाल।
चश्म वह क्या जिस को तेरे दीद की हसरत नहीं॥

इस तरह इनके उपासक और भक्त इनकी स्तुति किया करते हैं। इन की ज़बान से बात निकलती नहीं कि, इन के भक्त उसे

फौरन ही पूरी करते हैं। इन की फरमायशें पूरी करने के लिये, इनके सेवक अपनी जमीन-जायदाद् गिरवी रख देते हैं, अपनी घर की स्त्री का जेवर तक उतार कर इन के हवाले कर देते हैं। इतने पर भी, यदि कोई त्रुटि या गलती हो जाती है, तो वेश्यायें सख्त नाराजी जाहिर करती हैं। उनकी नाराजी वेश्याभक्तों के लिये रुद्र के तीसरे नेत्र खुलने या महाप्रलय होनेके समान होती है। वे घबरा कर इन के चरणों में लोटते और क़दमों में नाक रगड-रगड कर माफी माँगते हैं।

जब वेश्यायें देखती हैं कि,हमारे उपासकों के पास धन नहीं रहा, घर-घूरा सब बिक चुका, तब वे उन्हें जूतियों से पिटवा कर अपने घरों से निकलवा देती हैं। पर वे वेहया, इतनी बेइज्जती और जिल्लतें उठाने पर भी, इन को छोड़ना नहीं चाहते, पैरों में गिरते हैं, अनेक तरह की खुशामदे करते हैं, तब उन्हें ये अपने नीचे दर्जे के सेवकोंमें रहने देती हैं। अच्छे-अच्छे खानदानी अमीरों के लडकों से घर में झाड़ू लगवातीं, खाना पकवातीं, पीकदान साफ करवाती और हुक्के भरवाती हैं। कहाँ तक लिखें, वेश्या-दासों की अन्त में बड़ी मिट्टी खराब होती है। भगवान् दुश्मन को भी वेश्या के फन्दे में न फँसावे। वेश्या बुरी बला है। यदि वेश्याओं की पूरी तारीफ लिखी जाय, तो एक पोथा हो जाय, इसलिये हम इस विषय को यहीं ख़तम करते हैं।

वेश्या है अवगुण भरी, सब दोषों का सिन्धु।
अलप दोष वर्णन किये, लखो सिन्धु में बिन्दु॥

ऐसी औगुणों की खान, धन-धर्म नसाने वाली, अबलाओं पर अन्याय करने वाली, कुलवधुओंको दुष्कर्मों का पाठ पढ़ानेवाली, बाल-हत्या, पुत्री-हत्या और गोहत्या तक करानेवाली वेश्याको जो देखते, छूते और उस से रमण करते हैं, उन को धिक्कार है। नाचते समय वेश्या स्वयँ कहती है.—

जब पूरण पाप के भागडे ते,
भगवन्त कथा न रुचे जिनको ॥
एक गणिका नारी बुलाय लेईं,
नचवावत हैं दिनको रन को ॥
मृदङ्ग कहे धिक् है ! धिक् है !!
मजीर कहे किनको किनको ?॥
तब हाथ उठाय के नारि कहे,
इनको इनको इनको इनको ॥

वेश्या की चालें ।



वेश्यायें अपने यारो को रिझाने और नये-नये शिकार फँसाने के लिये, मन्दिरों, मेलों-तमाशों और तीर्थ-स्थानों तथा बाग़-बगीचोमे जातीं और नाना प्रकारके मनोमोहक वस्त्राभूषण पहनती हैं । कितनी ही अपने यारों की इच्छानुसार श्रृङ्गार करती और कहती है— "प्यारे ! तुम्हारे बिना हमें क्षण-भर कल नहीं पडती । माँ के मारे हमारी नहीं चलती। माँ के नाराज होने के भयसे आपसे रुपया-पैसा लेना पड़ता है वरना हमारी इच्छा नहीं कि, आप से कुछ लें । आप हमारे

सूरज और चाँद हो, आप ही हमारे पान का चूना, बिछौनेकी चादर, हुक्के को चिलम और थूकने की पीकदानी हो।" नादान लोग इन की झूठी और मक्कारी की बातों पर लट्टू होकर, इन को अपनी सच्ची प्रेमिका समझ लेते हैं, पर जहाँदीदा लोग जानते हैं कि, वेश्याओं में प्रीतिका नाम भी नहीं। अगर सूर्य्यमण्डल में शीतलता हो, चन्द्रमा अग्नि उगलने लगे, विन्ध्याचल समुद्र में तैरने लगे तो वेश्या में प्रीति हो सकती है। आज तक जूए में सत्य, कव्वे में पवित्रता, सर्पमें सहनशीलता, स्त्रियोंमें काम-शान्ति, नपुंसकों में धैर्य्य, शराबी में तत्त्वचिन्ता, राजा में मैत्री और वेश्या में सतीत्व न किसीने देखा और न सुना। वेश्यागामी कामकन्दला का नाम पेश करते हैं, पर कामकन्दला वेश्या नहीं, गणिका थी। वेश्या और गणिका में बड़ा भारी भेद है। गणिका वेश्या से बहुत अच्छी होती है। वेश्या धन के लिए प्रेम प्रकट करके विषयी पुरुषों को तृप्त करती है। गणिका अनेक प्रकार की विद्यायें जानती और प्रेम-प्रतीतिको समझती है। वेश्या नीच उपायों से कामियोंको ठगती है, पर गणिका उच्च प्रीति-रीति बाँध कर धन हरती है। वेश्या केवल धन की साथिन होती है, पर गणिका गुण, रूप और विद्वत्ता की भी ग्राहिणी होती है। लेकिन आजकल गणिका कहाँ? जिधर देखो, वेश्या-ही-वेश्या नज़र आती हैं। सच पूछो तो न गणिका भली और न वेश्या। दोनों से ही पुरुष के रूप, धन और यौवन की क्षति है, अतः बुद्धिमानों को दोनों से ही बचना चाहिये। भूल कर भी, इन का नाम न लेना चाहिये। किसीने क्या खूब कहा है —

गाना ।

रण्डी नहीं किसी की यार, ओ घर बार लुटाने वाले ।
तीखे नयन चलाने वाले, रण्डी नहीं किसी की यार ॥
इनका झूठा है जंजाल, इनका खोटा है व्यवहार ।
इसमें नफा नहीं है यार, ओ घरबार लुटाने वाले ॥
इनके नखरे इनकी चाल, इनके चिकने-चिकने गाल ।
इनके लम्बे—लम्बे बाल, आफत करने वाले ।
रण्डी नहीं किसीकी यार, ओ घर बार लुटाने वाले ॥
इनकी सुहबत, इनकी बातों में मत आना ।
इनपर दिलको मत ललचाना, इनकी सुहबतसे घबराना ॥

आफत आजाय जाने वाले ।
रण्डी नहीं किसी की यार ।
ओ घर बार लुटाने वाले ॥
जब तक पैसा तबतक रण्डी ।
जबतक बिलसे तबतक मण्डी ।
वह तो खा खा हुई मुष्टण्डी ।
तुम पर आने लगे तमाले ।
जब से रुक गई घरकी मोरी ।
मांगो भीख करो या चोरी ।
अब तो हवा जेल की खा ले ।
रण्डी नहीं किसी का यार ।
ओ घर बार लुटाने वाले ॥

छप्पय ।

जातिहीन, कुलहीन, अन्ध, कुत्सित कूरूप नर ।
जरा-ग्रासित कृशगात, गलितकुष्ठी अरु पाडर ।
ऐसेहू धनवान होय, तौ आदर वाको ।
अपनो गात बिछाय, लेत रस सर्वस ताको ।
गनिका विवेक-बेलको, कदन करन वारी ।
निरखि बच रहे कुलवन्त, नर रचत पचत मूरख हरषि॥८९

89 What sensible man would like to have sexual intercourse with those prostitutes who give away their beautiful bodies for the sake of a little wealth even to those who are born blind, are ugly, are inactive due to old age, are foolish, are of low caste and are suffering from leprosy These prostitutes are like knives to cut the creeper of reasoning

—※—

वेश्यासौ मदनज्वाला रूपेन्धनसमेधिता ॥
कामिभिर्यत्र हूयन्ते यौवनानि धनानि च ॥९०॥

यह वेश्या सुन्दरता रूपी ईंधनसे जलती हुई प्रचण्ड कामाग्नि है। कामी पुरुष इस अग्निमें अपने यौवन और धनकी आहुति देते हैं।

खुलासा—वेश्या तेज आगके समान है। जिस तरह आग लकड़ियों से जलती है, उसी तरह वेश्या-रूपी अग्नि वेश्या के रूप-रूपी ईंधनसे जलती है। जिस तरह होमकी अग्निमें घृत चाँवल और तिल प्रभृति की आहुति दी जाती है, उसी तरह वेश्याग्निमें कामी लोग अपनी जवानी और धन की आहुति देते हैं। होम की अग्निमें

घृत चाँवल प्रभृति जिस तरह जल कर राख हो जाते हैं; उसी तरह वेश्या-रूपी अग्नि में कामियों के रूप, यौवन और धन की राख हो जाती है। साराश यह कि, वेश्या से प्रीति करने वालों के रूप, यौवन और धन क़तई नाश हो जाते हैं। रण्डीबाज़ी करने वाले अनेकों करोड़पति ख़ाकपति और दर-दर के भिखारी हो गये। अत बुद्धिमानों को इस वेश्या-रूपी भयङ्कर अग्नि से सदा दूर रहना चाहिये ; क्योंकि जिस तरह अग्नि में गिरनेवाला सर्वथा भस्म हो जाता है, उसी तरह वेश्या-रूपी अग्नि में गिरने वाला भी सर्वथा भस्म हो जाता है। क्योंकि रूप-यौवन तो चन्द रोज में ही स्वाहा हो जाते हैं। जब तक धन रहता है, वेश्या प्यार (झूठा दिखावटी प्यार) करती है। जहाँ कामी धनहीन हुआ कि, वेश्याने उसे घर से धक्के देकर या जूतियाँ लगवा कर निकाला। जब कामी इस दुर्गतिको पहुँच जाता है, तब वह या तो विष प्रभृति खाकर या गले में फाँसी लगाकर मर जाता है अथवा चोरी वगैर करनेसे पकड़ा जाकर जेल में ठूँस दिया जाता है। वहाँ वह दुख पा-पाकर मर जाता है। अगर जेल की अवधि पूरी करके चला भी आता है, तो फिर वेश्या के लिये धन देने को चोरी प्रभृति करता है या किसी की हत्या करके उसका धन हथियानेकी चेष्टामें पकड़ा जाकर फाँसी पर लटका दिया जाता है।

दोहा।

गनिका कनिका अगिन की, रूप समिध मजबूत।
होम करत कामी पुरुष, धन यौवन आहूत ॥९०॥

सार—वेश्या धन और प्राणों के नाश करने वाली भयङ्कर अग्नि है।

90 *The prostitutes are the flames of passion burning with the fuel of beauty Lustful men throw into that fire their wealth and health.*

—※—

कश्चुम्बति कुलपुरुषो वेश्याधरपल्लवं मनोज्ञमपि।
चारभटचोरचेटकनटविटनिष्ठीवनशरावम्॥ ९१॥

वेश्या का अधर-पल्लव (ओठ) यद्यपि अतीव मनोहर है; किन्तु वह जासूस, सिपाही, चोर, नट, दास, नीच और जारोंके थूकनेका ठीकरा है, इसलिये कौन कुलीन पुरुष उसे चूमना चाहेगा?

खुलासा—सुन्दरी वेश्या के होठ निश्चय ही बड़े मनोहर होते हैं, परन्तु उसके सुन्दर होठोंको चोर, बदमाश, गुण्डे, गुलाम, डाकू और भाँड प्रभृति महानीच चूमते और चूसते हैं, इसलिये वह महा अपवित्र और गन्दे हो जाते हैं। ऐसे गन्दे और नापाक ओठों को कौन प्रतिष्ठित और ऊँचे कुल का पुरुष चूमना चाहता है? अर्थात् उसे नीच लोग ही चूमना चाहते हैं, कुलीन पुरुष उस नीचों के थूकने के ठीकरे के अपनी जीभ लगा कर उसे गन्दी नहीं करते।

पहले लिख आये हैं कि, वेश्या पैसे की गुलाम है, उसे पैसे से प्रेम है। वह रूप, यौवन, गुण, विद्या और उत्तम वंश प्रभृति को

नही देखती। उसे यदि भङ्गी और चमार धन दें, तो वह उन्हीकी हो जाती है। उस के सुन्दर ओंठोंको वही चूमते-चाटते और उस के शरीरको गन्दा करते हैं। जिसे कुछ भी पवित्रता—अपवित्रता का ध्यान है, जिसने उच्च कुल और उत्तम वर्णमें जन्म लिया है, वह ऐसी गन्दगी की खान से नेह लगाकर क्यों अपनी आत्मा को कलुषित करेगा? वेश्या नीच पापियों के योग्य है, अत नीच लोग ही उसके पास जायँगे। भङ्गी और चमारों का काम भङ्गी चमार ही करेगे; ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य उन के कामोंको हरगिज न करेगे।

सोरठा।

गनिका के मृदु ओठ, को कुलीन चुम्बन करै?
नट, भट, विट, ठग, गोठ, पीकपात्र है सबनको ॥९१॥

सार—वेश्याएँ महा अधम और पापियों के द्वारा भोगी जाती हैं, अतः वे श्रेष्ठ-कुलोत्पन्न पुरुषों के योग्य नहीं।

91. Though the leaf-like lips of a prostitute are beautiful, yet what respectable person would kiss that which is the pot where cheats, rogues, rustics, thieves and knaves throw their saliva

---

धन्यास्त एव तरलायतलोचनानां
तारुण्यरूपघनपीनपयोधराणाम् ।

क्षामोदरोपरिलसत्त्रिवलीलतानां
दृष्ट्वाकृतिं विकृतिमेति मनो न येषाम् ॥६२॥

चञ्चल और बड़ी-बड़ी आँखो वाली, यौवन के अभिमानसे पूर्ण, दृढ और पुष्ट स्तनो वाली, क्षीण उदर भाग पर त्रिवलीसे सुशोभित युवती स्त्रियो की सूरत देख कर जिन पुरुषोके मनमे विकार उत्पन्न नही होता, वे पुरुष धन्य है।

खुलासा—बड़ी-बड़ी चञ्चल आँखों वाली, नारङ्गियोंके समान गोल और कठोर स्तनों वाली तथा पेटके अधोभाग पर तीन रेखाओं वाली जवान स्त्री को देखकर किसी विरले ही माई के लाल के मन में अनुराग उत्पन्न नहीं होता। जिसके मन में ऐसी सुन्दरी को देखकर उथल-पुथल नहीं मचती, जिसका मन ऐसी नारीको देखकर विचलित नहीं होता, वह पुरुष निश्चय ही काबिल तारीफ है। उसने ससार को जीत लिया है। उससे बढ़कर और शूरवीर नहीं। वह चेष्टा करने से सहज में परम पद पा सकता है। जिसका मन ऐसी सुन्दरी पर नहीं चलता, उसका मन और किसी भी ससारी पदार्थ पर चल नहीं सकता। जिसे ऐसी तरुणी से विराग है, उसे ससारसे विराग है। जिसे ऐसी नारी से विरक्ति है, वह निश्चयही महात्मा है। किसीने ठीक ही कहा —

सानुरागा स्त्रियं दृष्ट्वा, मृत्यु वा समुपस्थितम्।
अविक्लमना स्वस्थो, मुक्त एव महाशय ॥

अनुराग-पूर्ण स्त्री और मौत को सामने देखकर भी जिस का मन व्याकुल नहीं होता, वह महाशय मुक्त रूप है।

दोहा ।

क्षीण लक अरु पीन कुच, लखि तियके दृगतीर ।
जे अधीर नहिं करत मन, धन्य धन्य ते धीर ॥९२॥

सार---परमा रूपवती नवीना नारी पर जिस का मन नहीं चलता, वह मनुष्य नहीं देवता है ।

92 *Blessed are those whose minds are not disturbed on looking at the woman who has restless big eyes, is young and handsome, has full grown and high breasts and on whose thin belly are the elegant lines*

बाले लीलामुकुलितममी सुन्दरा दृष्टिपाताः
किं क्षिप्यन्ते विरम विरम व्यर्थ एष श्रमस्ते ॥
सम्प्रत्यन्ये वयमुपरतं बाल्यमास्था वनान्ते
क्षीणो मोहस्तृणमिव जगज्जालमालोकयामः ॥८३॥

हे बाले ! लीलासे जरा-जरा खुले हुए नेत्रोंसे सुन्दर कटाक्ष हम पर क्यों फेंकती है ? विश्राम ले ! विश्राम ले ! हमारे लिये तेरा यह श्रम व्यर्थ है । क्योंकि अब हम पहले जैसे नहीं रहे, अब हमारा छोकरपन चला गया, अज्ञान दूर हो गया । हम वनमें रहते हैं और जगज्जालको तिनकेके समान समझते हैं ।

93 *Maiden! why are you casting your sweet and sportful glances at me? Pray, stop there Your efforts in this connection are useless I am a changed man now Youth*

has passed away I long to live in the woods now My illusion is gone. I consider the worldly bondage as that of straw.

इयं बाला मां प्रत्यनवरतमिन्दीवरदल—
प्रभाचोरं चक्षुः क्षिपति किमभिप्रेतमनया ॥
गतो मोहोऽस्माकं स्मरशबरबाणव्यतिकर—
ज्वलज्ज्वालाः शान्तास्तदपि न वराकी विरमति ॥६४॥

इस बालाका क्या मतलब है, जो यह अपने कमल-दल की शोभाको तिरस्कार करने वाले नेत्रोंको मेरी ओर चलाती है ? मेरा अज्ञान नाश हो गया और कामदेव रूपी भीलके बाणों से उत्पन्न हुई अग्नि भी शान्त हो गई, तथापि यह मूर्खा बाला विश्राम नहीं करती ।

94 What does this young woman mean by casting her eyes, which surpass the beauty of the lotuses, constantly on me ? I am no longer under the charm of illusions The fire of passion kindled by the arrows of Cupid, have subsided in me and yet this foolish girl would not desist

—*—

शुभ्रं सद्म सविभ्रमा युवतयः श्वेतातपत्रोज्ज्वाला
लक्ष्मीरित्यनुभूयते स्थिरमिवस्फीते शुभे कर्मणि ॥
विच्छिन्ने नितरामनङ्गकलहक्रीडात्रुटत्तन्तुकं
मुक्ताजालमिव प्रयाति झटिति भ्रश्यद्दिशो दृश्यताम् ॥६५॥

जब तक मनुष्य के पूर्वजन्म के शुभ कर्मों का प्रभाव रहता है, तब तक उज्ज्वल भवन, हाव-भाव-युक्त सुन्दरी नारियाँ और सफेद छत्र चँवर प्रभृति से शोभायमान लक्ष्मी—ये सब स्थिर भाव से भोगने मे आते है, किन्तु पूर्व्वजन्म के पुण्योंका क्षय होते ही, ये सब सुखैश्वर्य्य के सामान, कामदेव की क्रीडाके कलहमें टूटे हुए हार के मोतियो के समान, शीघ्र ही जहाँ-तहाँ लुप्त हो जाते है।

खुलासा—जब तक मनुष्यके पहले जन्ममें किये हुए शुभ कर्म अथवा पुण्य कर्मोंका ओर-छोर नहीं आता, तभी तक सुन्दर-सुन्दर आलीशान महल, अपने हाव-भावों—नाजो-अदाओं से पुरुषका मन हरने वाली सुन्दरी ललनायें तथा छत्र, चँवर, रथ, घोडे, हाथी, पालकी, जोडी, बग्घी प्रभृति सुख-ऐश्वर्य्य के समान बने रहते हैं और पुरुष उन्हें स्थिरताके साथ भोगता है, किन्तु ज्योंही उसके पूर्वजन्म के पुण्य-कर्मोंका अन्त हो जाता है, ईश्वरीय खातेमे पुण्य-कर्म नही रहते, त्योंही उपरोक्त महल, मकान, जमीन, जायदाद, बाग, बगीचे, मनमोहिनी चन्द्रवदनी स्त्रियाँ और लक्ष्मी एव क्षमता प्रभृति इस तरह विलाय जाते हैं, जिस तरह रतिकेलिके समय स्त्री-पुरुषों में खींचातानी और झगडी-झगडी होने से हारके मोती टूट-टूट कर चारो ओर लुप्त हो जाते हैं।

दोहा।

शुभ कर्मन के उदयमें, गृह तिय चित सब ठौर।
अन्त भये तीनों नहीं, ज्यों मुक्ता बिन डोर ॥९५॥

सार—जब तक मनुष्य के पूर्वजन्मके पुण्यों का क्षय नहीं होता, तब तक सारे संसारी सुखैश्वर्य्य बने रहते हैं ; पुण्य क्षय होने पर, वे क्षण-भर भी नहीं रहते।

95. *A white palace, a good and loving young woman and the wealth with the (royal) symbol of white umbrella, are enjoyed only so long as there is the growth of good virtuous acts, but when they (virtuous acts) diminish then all the enjoyments run away from the man to different directions like the pearls of a garland broken in the quarrel of amorous plays*

—*—

सदा योगाभ्यासव्यसनवशयोरात्ममनसो
रविच्छिन्ना मैत्री स्फुरति यमिनस्तस्य किमु तै' ॥
प्रियाणामालापैरधरमधुभिर्वक्त्रविधुभि
सनिश्वासामोदैः सकुचकलशाश्लेषसुरतैः ॥८६॥

जो अपने मनको वशमें करके, आत्माको सदा योग्याभ्यास-साधन में लगाये रहना ही पसन्द करते हैं—उन्हें प्यारी-प्यारी स्त्रियों की बात-चीत, अधरामृत, श्वासों की सुगन्धि सहित मुखचन्द्र और कुचकलशों को हृदय से लगा कर काम-क्रीडासे क्या मतलब ?

खुलासा—जिन को अपनी इन्द्रियाँ और मन को वशमें रखने तथा योग-साधन का अभ्यास करने के लाभ नहीं मालूम, वह

विषय-भोग भोगना ही अच्छा समझते हैं और सदा भोग भोगनेमें ही मस्त रहते हैं, ऐसे कामियो को एकान्तमें स्त्रियोंसे बातचीत या गुफ्तगू करना, उन के ओठ चूसना, उनके श्वास से निकली मृगमद्-कस्तूरीको लजानेवाली सुगन्धि सूँघना, चन्द्रमाके समान मुख को चूमना और सोने को दो कलशों या नारङ्गियों अथवा कच्चे-कच्चे सेवों के समान कुचोंको छातीसे लगा कर उनसे सगम करना ही अच्छा लगता है, किन्तु जिन्हें मन और इन्द्रियोको काबू में करके सदा योगाभ्यास का व्यसन रखना ही अच्छा लगता है, उन्हें सुन्दरियों की मीठी-मीठी बातें सुनना, उनके निचले होठको चूसना, उनके मुख की सुगन्धि का आस्वादन करना, उनके चन्द्रा-नन को देखना, उन के गुलाबी गाल चूमना और दो कलशों के समान ऊँचे उठे हुए कठोर कुचोंको हृदयसे लगा कर, उनके साथ सगम करना अच्छा नही लगता। वे इन सब को वृथा समझते हैं। उन्हे इनमें जरा भी आनन्द नहीं मालूम होता।

सार—विषयासक्त कामियोंको स्त्रियाँ अच्छी लगती हैं; पर इन्द्रिय-विजयी ज्ञानियोंको निरन्तर योगाभ्यास में लगे रहना ही अच्छा मालूम होता है।

96. Of what use are the sweet conversation with a lovely woman, the nectar of her lips, her moon like face with scented breath and the sweet enjoyment of sexual intercourse while

pressing her pot-like breasts to the bosom, to those whose mind and soul are constant friends and take delight in the practice of concentration

—*—

अजितात्मासु सम्बद्धः समाधिकृतचापला ।
भुजङ्गकुटिलः स्तब्धो भ्रूविक्षेपः खलायते ॥९७॥

अजितेन्द्रिय मनुष्योंसे सम्बन्ध रखनेवाला, चित्तकी एकाग्रता या समाधिमें अतीव चञ्चलता करनेवाला, सर्पके समान कुटिल और स्तब्ध स्त्रियों का भ्रूक्षेप या कटाक्ष खलके समान आचरण करता है।

खुलासा—स्त्रियों का कटाक्ष (चतुराई से भौंह चलाना) अजितेन्द्रियों से सम्बन्ध रखता है, चित्तको एकाग्र रहने नहीं देता, समाधिको भङ्ग करता है, अतएव वह साँपके समान कुटिल और दुष्टोंको सा काम करने वाला है। पर ध्यान रहे कि, वही कटाक्ष जितेन्द्रियों से सम्बन्ध नहीं रखता। वह उनका कुछ भी नहीं कर सकता। न वह उनकी चित्त की एकाग्रतामें खलबली डाल सकता है और न उन की समाधि ही भग कर सकता है।

दोहा।

तिय कटाक्ष खल सरिस है, करत समाधिहिं भग।
प्राकृत जन ससर्ग रत, शठ इव कुटिल भुजग ॥९७॥

सार—खलों के समान आचरण करनेवाले

स्त्रियों के कटाक्ष का ज़ोर केवल कामियों पर ही चलता है, जितेन्द्रियों का वह कुछ भी नहीं कर सकता।

मत्तेभकुम्भपरिणाहिनि कुंकुमार्द्रे
कान्तापयोधरतटे रसखेदखिन्नः।
वक्षोनिधाय भुजपञ्जरमध्यवर्ती
धन्यः क्षपां क्षपयति क्षणलब्धनिद्रः॥८८॥

जो पुरुष मैथुन के श्रम से थक कर, मतवाले हाथी के कुम्भोंके समान वितीर्ण और केशरसे भीगे हुए स्त्री के स्तनों पर अपनी छाती रख कर, उस की भुजा रूपी पञ्जरके बीच में पडा हुआ, एक क्षण भी सोकर रात बिताता है, वह धन्य है।

खुलासा—मैथुन के बाद पुरुष का बल क्षीण हो जाता है, मिनट दो मिनट के लिये उस में उठने की भी सामर्थ्य नहीं रहती। तब वह स्त्री की छातियों पर अपनी छाती रक्खे हुए, उस के दोनों हाथों के बीच में पड़ा हुआ, शान्ति की नींद सी लेता या अपनी थकान दूर करता है। कवि महोदय कहते हैं, कि जो पुरुष क्षण-भरके लिये भी, यह आनन्द उपभोग करता है वह भाग्यवान् है—उसने पूर्वजन्म में पुण्य किये हैं।

छप्पय।

कुंकुम कर्दम-युक्त, मत्तगज कुम्भ बने मनु।
कान्ता कुचतट माहिं सने, रस-खेद खिन्न जनु।



सुधामय चन्द्रमा अपने क्षय रोग की शान्ति के लिए, मोती का रूप धारण कर, कामिनी के होठों का अमृत पी रहा है। मतलब यह है कि भीतर होठों में ऐसा उत्तम अमृत है कि, उसे पीने के लिए, सुधाकर—चन्द्रमा ने भी मोती का रूप धारण किया है। ७०

तेहि भुज पजर मध्य, रहं सुख सों लिपटाने ।
क्षण इक निद्रा लहें, क्षपा वीतत नाहिं जानें ।
इमि निज वक्षस्थल ताहि सों, जोरि रहे जे शुभग नर ।
हैं तेई यहि ससार में, धन्यवाद के योग्य वर ॥९८॥

—*—

सुधामयोऽपि क्षयरोगशान्त्यै नासाग्रमुक्ताफलकच्छलेन ।
अनङ्गसञ्जोवनदृष्टिशक्तिर्मुखामृतं ते पिवतीव चन्द्रः ॥९९॥

हे प्यारी ! यह चन्द्रमा अमृतमय, अतएव काम चैतन्य करने वाला होने पर भी, अपने क्षय रोग की शान्ति के लिये, नाक के अगले हिस्सेमें लटकते हुए मोतीके मिससे, तेरे अधरामृत को पी रहा है ।

कवि महोदय स्त्री की नाक के अग्रभाग में लटकते हुए मोती को पूर्ण चन्द्रमा मान कर कहते हैं, कि हे सुन्दरि ! यद्यपि चन्द्रमा स्वय अमृतमय है और वह पुरुषों के हृदयों में कामोद्दीपन करने की दृष्टि और सामर्थ्य रखता है, तथापि वह, अपने राज रोग या क्षय के आराम करनेके लिये, बडेसे मोतीका रूप धरके, तेरी नाककी बुलाक या नथ में लटका हुआ, तेरे होठोंके अमृत को पान कर रहा है । रसिक कवि कहते हैं.—

दोहा ।

प्रिये ! सुधाकर रोग निज, क्षयी निवृत्ति उपाय ।
चन्द पियत मधु अधरको, नथ मोती मिस आय ॥

दोहा ।

मनसिज-वर्द्धक अमृतमय, क्षयी हरण शशि जान ।
नाशा मोती मिश किये, करे अधरामृत पान ॥९९॥

सार---स्त्री का अधरामृत सुधाकर के अमृत से भी अच्छा है ।

99 *O lady ! although the moon is full of nectar and the sight of moon gives rise to sexual desires yet he is unable to cure his own disease of pthisis and in order to cure himself of that disease, the moon has, as it were, transformed himself into a pearl pendant of your nose and is constantly tasting the nectar of your lips*



दिश वनहरिणीभ्यो वंशकाण्डच्छवीनां
कवलमुपलकोटिच्छिन्नमूलं कुशानाम् ।
शुकयुवतिकपोलापाण्डुताम्बूलवल्ली-
दलमरुणनखाग्रैः पाटितं वा वधूभ्यः ॥१००॥

हे पुरुषो ! या तो तुम वन-मृगियोंके लिये बांसके दण्डेको समान छविवाली, पत्थर की नोक से काटी हुई मूलवाली, कुश नामक घास के ग्रास दो अथवा सुन्दरी वधुओं के लिये लाल-लाल नाखूनों से तोड़े हुए सूई—तोतीके कपोलके समान ज़रा-ज़रा पीले रंगके पान दो ।

स्वल्लासा—मनुष्यो ! दो में से एक काम करो —(१) या तो

घर-गृहस्थी की मोह ममता तोड, वन में जा, ईश्वराराधना मे मन लगाओ और पत्थर की नोकसे कुश-घास की जडें काट-काट कर जगली हिरनियो को चुगाओ, अथवा घर में रह कर सुन्दरी नवयुवतियों को पके हुए पीले-पीले पानों के वीडे दो।

दोहा।

वन-मृगिन के देन को, हरे हरे तृण लेहु।
अथवा पीरे पान को, वीरा वधुवन देहु ॥१००॥

सार—दो में से एक काम करो :—(१) या तो वन में जा ईश्वर-भजन करो, अथवा (२) घर में रह नव-वधुओं को भोगो।

100 O people, you are either to feed the wild deer with Kush grass cut by the sharp edges of stone resembling bamboo sticks or to offer betel of slight yellow color torn by red nails to beautiful wives



यदासीदज्ञानं स्मरतिमिरसंचारजनितं
तदा सर्वं नारीमयमिदमशेषं जगदभूत्।
इदानीमस्माकं पटुतरविवेकाञ्जनदृशा
समीभूता दृष्टिस्त्रिभुवनमपि ब्रह्म मनुते ॥१०१॥

जब तक मुझ में काम का अज्ञान-अन्धकार था, तब तक मुझे सारा ससार स्त्रीमय दीखता था, लेकिन अब मैंने आँखों

में विवेक-अञ्जन लगाया है, इसलिये मेरी समदृष्टि हो गई है, मुझे त्रिलोकी ब्रह्ममय दीखती है।

खुलासा—जब तक मेरे ऊपर कामदेव का प्रभाव था, जब तक मेरे हृदय में अज्ञान का अँधेरा था, जब तक मुझे सत् असत् का ज्ञान नहीं था, जब तक मुझे स्त्रियों की असलियत मालूम नहीं थी, जब तक मुझे स्त्रियो की मुहब्बत सच्ची मालूम होती थी, तब तक मुझे सारे जगत्में स्त्रियाँ ही स्त्रियाँ दीखती थीं, मेरा मन हर समय उन्हींमे लगा रहता था और उनके साथ रमण करना ही मुझे अच्छा लगता था। मै समझता था, कि इस जगत् मे जन्म लेकर कामिनियोको भोगना ही पुरुष का परम कर्तव्य है। इसीसे उन दिनों स्त्रियोंके सिवा मुझे और किसी भी काममे आनन्द नहीं आता था, लेकिन ज्योही मैंने आँखो मे विवेक-विचार का अञ्जन आँजा, मेरी आँखो का अँधेरा दूर हो गया, मेरा अज्ञान नाश हो गया, मुझे सत् असत् का ज्ञान हो गया, मुझे मालूम हो गया कि, जगत् सारहीन है, संसार असार और मिथ्या तथा नाशमान् है, स्त्रियो का रूप यौवन और उनकी प्रीति अनित्य एवं सदा रहनेवाली नहीं है, इस जगत्में कोई किसीका नहीं है, सभी एक दूसरेको धोखा देकर अपना-अपना मतलब साध रहे हैं, सभी स्वार्थ की जञ्जीरों मे बँधे हुए हैं, स्वार्थ बिना कोई किसी से बात भी नहीं करता। जिस में भी स्त्रियों की प्रीति तो बिल्कुल ही झूठी है। वे किसी काल और किसी दशा में भी विश्वास योग्य नहीं एकमात्र ब्रह्म—अपना आत्मा —सच्चा है। इसी की चिन्ता



संसार में सभी लोग [illegible] नहीं होते। किसी को [illegible] पसन्द है, [illegible] सांसारिकता का [illegible] आनन्द लेना पसन्द है, किसी को [illegible] पसन्द है और किसी को [illegible] पसन्द है। [illegible]

में कल्याण है। इस ब्रह्म के सुख के सामने त्रिलोकी के सभी सुख-भोग तुच्छ हैं। सब जगत्मे, जगत्के प्राणिमात्र में, एक पूर्ण ब्रह्म व्यापक है। इस ज्ञानके कारणसे, अब मुझे न कही स्त्री दीखती है, न पुरुष, न और ही कुछ, सर्वत्र एक ब्रह्म दीखता है। अत अब मैं उसीके ध्यान में लौलीन रहता हूँ, क्योंकि वैराग्य की अग्निने ससारी भोग-विषयो के खयालात जडसे ही भस्म कर दिये हैं।

101 *So long as I was labouring under ignorance due to the darkness caused by Cupid, I could see nothing but woman in this whole world Now, by applying the collyrium of better reasoning, my eye-sight has become normal and I find Brahma pervading the three worlds*

—※—

वैराग्ये सञ्चरत्येको, नीतौ भ्रमति चापरः।
शृङ्गारे रमते कश्चिद् भुवि भेदा परस्परम् ॥१०२॥

कोई वैराग्य को पसन्द करता है, कोई नीति में मस्त रहता है और कोई शृङ्गार में मग्न रहता है। इस भूतल पर, मनुष्यो में परस्पर इच्छाओं का भेदाभेद है।

इस दुनिया में सब की रुचि एक नहीं, किसी को एक चीज अच्छी लगती है, तो दूसरे को दूसरी और तीसरे को तीसरी। सब के मन और रुचि एक नहीं। किसी को यह ससार बुरा लगता है, अत वह इसे मिथ्या और असार समझ, सब को त्याग, परम परमात्मा को भजता है। किसी को नीतिशास्त्रों का अध्ययन ही अच्छा लगता है, अत वह रात-दिन नीति-ग्रन्थों

का ही कीड़ा बना रहता है। किसी को न वैराग्य पसन्द है न नीति उसे एकमात्र विषयों का भोगना ही अच्छा लगता है अत वह इन्हीं में आनन्द समझता है, दिन-रात विषय-सुखों में ही मतवाला रहता है, स्त्रियोंको ही अपनी आराध्य देवी समझता है और उनकी तारीफों से भरे हुए श्रृङ्गार रस के ग्रन्थ देखने मे ही लगा रहता है। सबकी रुचि भिन्न-भिन्न हैं, इसीसे भर्तृहरि महाराजने "वैराग्य शतक" "श्रृङ्गार शतक' और "नीति शतक" —तीन शतक, तीनों प्रकार के लोगों के लिये लिखे हैं। जिसका दिल वैराग्य में हो, वह "वैराग्य शतक' पढ़े, जिसे नीति से प्रेम हो, वह "नीति शतक" पढ़े और जिसे श्रृङ्गार से प्रेम हो, वह "श्रृङ्गार शतक" पढ़े।

दोहा।

काहू के वैराग्य रुचि, काहू के रुचि नीति।
काहू के शृगार रुचि, जुदी-जुदी परतीति ॥१०२॥

102 Some one feels pleasure in renunciation, some study morality and some take delight in love. So there is diversity of desires in the world.

—*—

यस्यास्य नास्ति रुचिरं तस्मिंस्तस्यास्पृहा मनोज्ञेऽपि।
रमणीयेऽपि सुधांशौ न मनः कामः सरोजिन्याः ॥१०३॥

जिस देश में जिसकी रुचि नहीं होती, वह चाहे जैसा

सुन्दर क्यों न हो, उसे वह अच्छी नहीं लगती। चन्द्रमा सुन्दर है, पर कमलिनी उसे नहीं चाहती।

दोहा।

जो जाके मन भावतौ, ताको तासों काम।
कमल न चाहत चाँदनी, बिकसत परसत घाम ॥१०३॥

103 A man has no inclination for the thing which he does not like, though it may be a very good one The moon is beautiful yet she is not liked by the lotus

